देखल दिन

देखल दिन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

DEKHAL DIN

Collection of Seed and Short Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-70-4
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2018)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

जखने पैरक गति जगैए
तखने जिनगी गतिमान बनैए।
जखने जिनगी गतिमान बनैए
तखने गति संगीत बनैए।
तखने गति...।
जगिते गति मति मंत्र पकैड़
गति मतिक बीच विचड़ए लगैए।
विचरणक बीच विचैड़-विचैड़
विवेक बुधि विचारवान बनैए।
विवेक बुधि...।
बनिते विचरवान विचारक
शील-सुभाव सिरजए लगैए।
सिरैजते शील सिल-सिला
सुभाव शील शुभ-शुभ लगैए।
सुभाव शील...।

अनुक्रम:

देखल दिन

अढ़ाइ-तीन बजेक भीतरक समय। कलपर सँ केतली अखारि-धोइ कऽ दरबज्जापर पहुँचले रही कि रस्तापर सँ अबाज आएल-

“कप-प्लेट-तसतरी लेब अइ...।”

भिनसुरके उखराहामे अपन कप फुटि गेल छल। आने दिन जकाँ चारि बर्खक पोता सुति उठि कऽ भकुआएले लगमे आबि गेल। जहिना भिनसरू पहर सभ दिन चाह बना कऽ अपनो पीबै छी आ पोतोकेँ दइ छिऐ, जइसँ ओ चाह बनैबते काल सभ दिन आबि जाइए। ओना, आइ भिनसरमे ओकरा अबैमे कनी देरी भेलइ। देरीक कारण भेल जे नीने कनी देरीसँ टुटलै। जाबे ओ आबए ताबे अपन हिस्सा चाह पीब नेने रही। तँए अबिते पोताक हाथमे कप थमा देलिऐ। भकुआएल रहबे करए हाथसँ कप खसि पड़लै। सिमेन्टेड दरबज्जा, कपक डन्टी टुटि गेल। ओना, चाहो हेरा गेलइ। मुदा ओ कानल नहि। नइ कनैक कारण जे भेल होइ, मुदा अपना बुझि पड़ल जे अपन हिस्सा चाह हेराएबसँ बेसी ओकरा कपक डन्टी टुटैक दुख भेलइ। डर नइ भेलइ। डर ऐ दुआरे नइ भेलै जे ने एहेन गलती कहियो भेल छेलै आ ने ओइ गलतीक कोनो सजाइये भेल छेलइ।

रस्ता परहक आवाज सुनि पोता आँगनसँ दरबज्जापर आबि बाजल-

“बाबा, कपबला..!”

अपनो काने सुनने रहबे करी, तँए मने-मन विचारिते रही जे

दूटा कप कीनब...।

अपन सुनलकैं अनठबैत बजलौं- “कहाँ?”

पोता हाथ पकैड़ रस्ता दिस विदा भेल। ताबे कपबला सेहो दरबज्जा-सोझे रस्तापर आबि गेल, जइसँ लग सेहो भइये गेल। दरबज्जासँ कनियेँ आगू बढ़लौं कि कपबला सोझा-सोझी पड़ि गेल। कहलिऐ-

“कनी एम्हरे आबह।”

जहिना कहलिऐ जे ‘एम्हरे आबह’, तहिना ओहो दरबज्जापर आबि अपन भार रखलक। सीक-पट्टैक भार, प्लाष्टिकक बोरामे कप-प्लेट-तसतरी इत्यादि-इत्यादि रखने रहए। पसेनासँ तर-बत्तर भेल देह छेलइ। ओना, बैशाख-जेठ मास नहि छी, छी तँ फागुने मुदा एक तँ दुपहरियाक रौदमे घुमैए, दोसर भार सेहो भारी छइ..! भार राखि जीबठलाल, नीक जगह माने सिमेन्टेड जगह देख, अराम करैक खियालसँ ओंघरा कऽ पड़ि रहल। अपना मनमे ईहो रहबे करए जे चाहे पीबैक ने अछि, ओ तँ टुटल डन्टियोबला कपमे पीब लेब। पछाइत नवका कप कीनि लेब। तँए चाह बनबैले चुल्हि पजारए लगलौं। मनमे उठल, वेचारा (माने कपबला) रौदाएल-थाकल अछिए तँए भूख-पियास सेहो लगले हेतइ। बजलौं-

“किछु खेबह?”

जीबठलाल बाजल-

“नइ मालिक, दस बजेमे भरि पेट खा कऽ सभ दिन निकलै छी आ साँझमे जखन डेरापर जाइ छी, तखन जलखै करै छी।”

ऐठाम एकटा बात अछि भरि पेट खाएब। भरि पेट खाएबक माने अपन-अपन अछि। किएक तँ जे दिन-राति मिला चौबीस घन्टामे एकबेर खेनिहार अछि ओकर भरि पेट खाएबक माने अलग

अछि। तहिना जे दिन-राति मिला कऽ दू-बेर खेनिहार अछि ओकर भरि पेट खाएबक माने दोसर अछि। तहिना जे चारि-पाँच बेर खेनिहार अछि तेकर भरि पेट खाएबक माने अलग अछि। मुदा से नहि, जीबठलाल साँझू पहरक जलखै लगा चौबीस घन्टामे तीन बेर खाइ छैथ। माने दिन-रातिक कलौ आ बीचमे साँझू पहरक जलखै।

बजलौं-

"चाह बनबै छी, पीबह किने?"

जीबठलाल बजला-

"चाहेटा नहि, पानियोँ पीब। कल केमहर अछि, कनी हाथो-पएर धो लेब आ पानियोँ पीब लेब।"

कलपर हाथ-पएर धोब एक बात भेल मुदा पानियोँ पीब लेब, एकर तँ किछु दोसर माने भइये जाइए। आँखि जीबठलालक चेहरापर देलिऐ। रौदसँ मुँहक सुरखी अधमरू भेल बुझि पड़ल। माथक पसेना नाकपर होइत बून बनि-बनि निच्चोँमे खसैत आ गालपर सँ टघैर-टघैर गरदैन होइत गंजीसँ सेहो सोंखाइत। अन्नक तृप्ति भलेँ मनकेँ किए ने पकड़ने होइ पाइनिक तृष्णा तँ ओइ अन्नकेँ पेटमे सुखाइये देने हेतै, तँए भूख सेहो जगले हेतैन। भलेँ श्रमशील लाल छैथ तँए अपन वेदनाकेँ दाबि तृप्तिक बात बजला। ओना, पानि पीलासँ पेटक सुखैत अन्न पसरबे करत। मुदा कलपर पानियोँ पीब लेब, ई की भेल? ओना, हाथ-पएर धोइ-ले कलेपर जाएब नीक हेतैन जइसँ भरि मन पानि पीबाक जगह सेहो भेटबे करतैन। अपना लग लोटामे पानि अछि, बेसी-सँ-बेसी अदहा लोटा पानि देबैन, मुदा तइसँ सोल्होअना पानिक तृष्णा तँ नहियेँ मेटेतैन, तइले तँ कले बढ़ियाँ हेतैन। बजलौं-

"जखन कलेपर जाइ छह, तखन लोटो नेने जाह।"

'लोटा' सुनि जीबठलाल बजला-

"कलेमे मुँह लगा कऽ पानि पीब लेब।"

बजलौं-

"पानि पीबैमे लोटा बढ़ियाँ हेतह।"

जीबठलाल बजला-

"मालिक, वैष्णव छी।"

'वैष्णव' सुनि एकाएक मन चौंकल। मन चौंकल ई जे ई केना बुझलैन जे हम वैष्णव नइ छी! तैसंग मनमे ईहो भेल जे जीबठलाले की कोनो अधला बजला, सेहो केना मानि लेब। जँ कहीं जीबठलालक मनमे किछु दोसर विचार होइन। समुद्रमे हेलैबला सभ मछखौके हुअए सेहो केना मानल जा सकैए। ई बात जरूर जे माछे खेनिहार मछखौक भेल आ माछक बास स्थल समुद्र सेहो छीहे। भाँजपर कोनो विचार एबे ने करए, अन्तो-अन्त नहियेँ आएल। थोड़े कालक पछाइत विचार भेल जे किए ने ई बात जीबठलालेसँ पुछि ली। जखन सोझेमे छैथ तखन पुछैमे की हर्ज। फेर भेल कलपर सँ एला हेन, लगले नइ पुछबैन। जँ अखने पुछबैन तँ भऽ सकैए हिनका बुझि पड़तैन- हमर धर्मक जड़ि खुनै छैथ। सोभाविक अछि मनमे कुवाथ हुअ लगतैन। कुवाथो कि एक्के रंगक थोड़े होइए। हल्लुक सेहो होइए आ भारी सेहो होइते अछि। माने हलका सेहो होइए आ गम्भीरो होइते अछि। तँए, भरियाएल मने बुझि जीबठलाल जँ ई कहि देता जे 'चाह नइ पीब', तखन तँ आरो अठबज्जर खसत। अठबज्जर ई जे जे आदमी चाह पीबैले राजी भऽ गेला आ चाह बनला पछाइत कहता जे चाह नइ पीब तखन तँ अपनो पीब गरगट भइये जाएत। तँए नीक हएत जे चाह पीला पछाइत पुछबैन। जँ कनी-मनी मन झनझनेबो करतैन तँ चाहक संग ओकरो घोंटि जेता।

तैबीच मनमे उठल- बहुत एहेन वैष्णव छथिये जे अपन जिनगीक भरण-पोषण अपन विचारक अनुकूल अपने-आप पूर्ति करैमे बिसवास रखै छैथ, जँ एहने जीबठलालो हेता, तखन तँ उचिते ने केलैन। मन सकपकाए लगल। होइतो अहिना छै जे कोनो समस्या वा कोनो घटना आँखिक सोझ एला पछाइत किछु-ने-किछु बाट मनक आगू एबे करैए। ओ दुनू दिशाक होइ छइ। सकारात्मक आ नकारात्मक सेहो। सकारात्मक सोचमे सकारात्मक बाटक विचार अबै छै आ नकारात्मक सोचमे नकारात्मक। मुदा अबै तँ छइहे। सएह मनमे आबि गेल।

चुल्हिपर चाह खौल गेल। मुदा एक खौलक चाह आ डबरामे हेलब वा डुमकुनियाँ काटब बरबरिये भेल। नीक जकाँ चाहपत्ती रंग अनलक की नहि से तँ ओकर भेल मुदा अपना मनमे एते तँ आशा जगिये गेल जे नून-पनियाँ सँ तँ नीक जरूर भेल। नून-पनियाँ भेल करहा जेकरा कहै छिऐ से। कोन चीजक करहामे आगिक केतेक ताव लगलासँ कोन रंगक दवाइ बनत, ई तँ घरे-घरे चलिते अछि। तँए एकरा अखन नून-पनियेँ रहए दियौ। जीबठलालक जरनमा रौदक पसेनाकेँ चापाकलक पतलपनियाँ धोइ-पोछि एकबट्ट कऽ देलकैन। कलपर सँ जीबठलाल देह-हाथ पोछैत दरबज्जापर पहुँचला। चाहमे कनी देरी छल तँए बीचक खाली समयकेँ भरैत बजलौं- “जखन मेहनत करि कमेबे करै छी, तखन समयक ठेकान सेहो राखू। अखन जे जरनमा रौद अछि ओ कान्हपर भारी भार लऽ चलैबला अछि.!”

जिनगीक बेवहारिक अनुभव जीबठलालकेँ सिखा देने छेलैन जे कोन मासमे भार लऽ घुमैक समय कखन होइ छइ। जीबठलाल बजला- “मालिक, ई साल चालिसम बरख छी। देखल दिन केना बीत गेल से बुझिये ने रहल छी। आइ चालीस बर्खसँ ई काज करैत आबि रहल छी। जहिना जाड़क मासमे काज करैक समय अलग

होइए तहिना गर्मियो आ बरखो मासक अलग-अलग होइए।”

अपन बेवहारिक अनुभवक संग जीबठलाल वैचारिक रूपमे सामंजस कऽ नेने छला। जे अन्तिम फागुन, माने होलीक पछाइत गरमी मास भेल, मुदा होली होइमे अखन सात दिन शेष अछि तँए जाड़क मासक रूटिंगक अनुसार दुपहरक रौदक ओते मद्दी नइ भेल जइसँ रूटिंग बदलैत। मुदा बेवहारोमे बेवहारक रूप बदलैए। रौदक गरमी लोक अपनो अनुभवसँ बुझिये सकैए किने, से कमी जीबठलालमे जरूर भेलैन।

ओना, जीबठलाल पूर्णिमाक हिसाबसँ मास बुझै छला मुदा सकराँतिक हिसाबसँ सेहो मास चलैए, से नइ बुझल छेलैन। बुझलो केना रहितैन। आँखिसँ ने लोक अमावसियाक अन्हारो देखैए आ पूर्णिमाक पूर चानो, मुदा सकराँतिक तँ कोनो देखौआ पहचान नहियेँ छै, खाली सालक एक दिन तिला-सकराँतिकेँ बुझैए। ओना, दुनू तरहक मासक गति-विधि अपन-अपन छइ। जे मास अन्हरिया-इजोरियाक हिसाबसँ चलैए ओइमे तीन सालपर मलमास सेहो होइ छै जे सकराँतिक हिसाबसँ चलैबला मासमे नइ होइ छइ। ऐबेर एहेन भेल जे सकराँतिक हिसाबसँ फागुन बीति चारि दिन चैतो चढ़ि गेल, जखन कि पूर्णिमाक हिसाबसँ अखन सात दिन फागुन बाँकीए अछि। जे हिसाब जीबठलाल बुझै छला, तँए फागुने बुझि दुपहरोमे भौरी करिते छला।

चाह बनि गेल। दूटा कपमे चाह छानि, एक कप जीबठलालकेँ देलिऐन आ दोसर कपमे अपने पीबए लगलौं। लगमे ठाढ़ भेल पोताक मनमे एते आशा बनले छेलै जे हमरो हिस्सा चाह अछिए, तँए नाकर-नुकर किए करैत।

दू घोंट चाह पीला पछाइत जीबठलालकेँ पुछलयैन- “अहाँ की

बाजल छेलौं जे चालिस बर्खसँ ई काज करैत आबि रहल छी..?”

ओना, कोनो प्रश्नक उत्तर प्रश्नक अनुकूले माने जेत्तेटा प्रश्न तेतबेटा उत्तर सेहो होइए, मुदा बेवहारिक रूपमे ओकर आकार सेहो बदैलते अछि। ओहू आकारमे दू रंगक बढ़ोत्तरी होइए। पहिल होइए जे प्रश्नक उत्तर बिना कोनो परिचयक सेहो देल जाइए जइसँ प्रश्नक उत्तर, शब्दक दृष्टिसँ एकरंगाह सेहो भइये सकैए। मुदा दोसर ईहो तँ अछिए जे प्रश्नक उत्तर दइसँ पहिने ओकर परिवेश सेहो बनौल जाइए। जइसँ नमगर-छरगर उत्तर सेहो भइये जाइए। सएह भेल। अपन परिचय दैत जीबठलाल बजला-

“मालिक, हमर घर समस्तीपुर जिलामे रोसराक सटले गाममे अछि। अहाँक इलाकामे कोसी-कमला आ भुतही-बलान बोहैए। आ हमरा इलाकामे गण्डक, करेह आ बागमती बोहैए। ओना, किछुए दच्छिन देने गंगा सेहो बोहैए मुदा ओ गामसँ दच्छिन अछि।”

जीबठलालक गप नीको लगै छल, मुदा मनमे ईहो होइते छल जे जँ बीचमे धारक चर्च उठा देब तँ किछु नव जानकारी भेटने नव अनुभव सेहो हएत, मुदा से भेने जे प्रश्न उठेलौं ओ तर पड़ि जाएत। जँ आइ जीबठलाल निचेनी लोक रहितैथ तँ किछु समय लेबो अनसोहाँत नइ होइत मुदा काजुक लोकक समय अपना काजे लिऐ ओ इमान नइ कहैए। आइ जँ जीबठलाल अपने रौदक मारल दरबज्जापर अबितैथ आ आराम करए लगितैथ तखन पुछबो उचित होइत मुदा अखन तँ से नहि भेल अछि। बाट चलैत श्रमजीबीक समय छी तँए अखुनका हुनकर समय मात्र काल-काली नहि बल्कि महाकालीक पूजनक छी। तँए, एको क्षण दुइर करबक माने भेल हुनका क्षीण करब। अपने कोढ़ि रही कि कमासुत मुदा अनकर समयकेँ दुइर करब केहेन हएत। ओना, समयकेँ नीक करब आकि

दुइर करब, ई अपन-अपन जिनगीक अनुकूल होइए, मुदा अखन जे दृश्य जीबठलालक छैन ओ दुइरे करब हएत। तँए, राम-धामकेँ अपन मुँह बन्ने राखब नीक बुझलौं। जाने जौ आ जानए जत्ता। जेते काले जीबठलाल हमरा बुझा सकैथ ओ हुनकर विचार भेल। अपन समयकेँ कियो कवि जकाँ कवियाबैथ वा काठी जकाँ कठियाबैथ से ओ जानौथ।

जीबठलाल बजला- "मालिक, हम हलुआइ छी।"

'हलुआइ' सुनि मन कखनो मुरही-कचड़ी दिस तँ कखनो जिलेबी-अमीरती दिस तँ कखनो रसगुल्ला-लालमोहन दिस तँ कखनो धनिया पातक चटनी आ सिंघारा दिस बढ़ए लगल। जइसँ मन चटपटाए लगल। हमर चटपटाइत मनकेँ जनु जीबठलाल बुझि गेला। बजला- "मालिक, आइ जँ हाट-बजारक गाममे घर रहैत तँ अपनो रोजगार[1] करि कऽ गुजर करि लइतौं, मुदा से अछि नहि। तेहेन गाम अछि जे धार टपि कऽ दोसर टोल जाइ छी।"

ओना, मनमे ईहो उठए लगल जे जेतबे घरक बस्तीमे अछि, माने जैठाम जेतबे घरक बस्ती अछि, ओइठाम ओतबो-ओतबो रोजगार ठाढ़ कएले जा सकैए आ बाँकी समयकेँ दोसर-तेसर उत्पादित पूजीक दिशामे बढ़ौल जा सकैए। मुदा सभकेँ अपन-अपन जीवनो छै आ जिनगियो छइहे। तँए मुँहकेँ बन्ने राखब नीक बुझलौं।

जीबठलाल बजला- "मालिक, गाममे बेसी हलुआइये जाति अछि।"

जीबठलालक बात सुनि मन चनैक गेल। चनैक ई गेल जे ई तँ ओहन शहर जकाँ भइये गेल जैठाम एक्के रंगक उत्पादनक ढेरो मशीन रहैए आ बाहरी वेपारीक लाइन कट्टिस रहै छइ। तँए, जइ

[1] जातीय रोजगार

गाममे हलुआइये बेसी रहत माने बनौनिहारे बेसी रहत आ खेनिहार कम, तोहूमे ओहन गाममे जइ गाममे घरे-घरे चुल्हि सेहो जरिते अछि। तँए मुँहकेँ बन्ने रखने रही। आगू जीबठलाल बजला-

“शुरूमे, जखन तेरह-चौदह बर्खक रही, मिरचाइक वेपार केलौं। बीस-पचीस सेर मिरचाइ रोसरा हाटमे कीनै छेलौं आ लगेक गाम-सभमे बेचै छेलौं। तइसँ परिवार चलै छल। ओना, घरक जनेनो सभ कामकाजी छथिये। मुदा घरो तँ घर छी। ओ कि कोनो ठट्ठा छी। जहिना काजक घर छी तहिना बुधि-ज्ञानक सेहो छीहे किने।”

जीबठलालक विचार सुनि जेना अपनो मनमे विचारक बान्ह टुटि गेल हुअए तहिना बुझि पड़ल। तइसँ मुँह फुटि बजा गेल-

“चालिस बर्खमे कोन-कोन बेलना बेललौं से कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

ओना, बजैक क्रममे बजा गेल मुदा रौद दिस जखन नजैर गेल कि मन चौंकल। घन्टा भरि समैयो भऽ गेल छल। अपन छिड़ियाएल विचारकेँ समटैत जीबठलाल बजला-

“चारि-पाँच बरख गामेसँ घुमि-घुमि मिरचाइ बेचलौं। किसानो सभसँ, वेपारी किसानसँ जान-पहचान भेल।[2] ओ सभ कहलैन जे जीबठलाल दस कोस हटि कऽ केतौ अड्डा बनाबह। सएह केलौं। तमौरियामे एकटा कोठरी भाड़ापर लेलौं, अखनो अछिए।”

मुहसँ निकैल गेल-

“वाह..!”

जीबठलाल बजला-

“मालिक, अखनुका जे ई कप-प्लेटक कारोबार अछि से

[2] बेवहारिक रूपमे जान-पहचान।

पाँचम वेपार छी। तैबीचमे मिरचाइसँ धनियाँ-लसुन होइत शीशाक समान सेहो बेचैत आबि रहल छी। साठि बर्खक भऽ गेलौं। सभ दिनक कएल अछि तँए आसकैत नइ लगैए।”

ओना, जीबठलालक मुहेँ चालीस बरख सुनि मन तरे-तर अखियासए लगल। अखियासैत-अखियासैत मन पैंतीस बरख पूर्व पहुँच गेल। जहिना कोनो जगहपर दोहरा कऽ गेला पछाइत पैछला किछु-किछु जगहो आ घटनो-घुटनी मोन पड़ए लगैए तहिना भेल। मोन पड़ल- एकबेर हमहूँ चारि सेर मिरचाइ उधार नेने रही। छोट खुट्टीक लोक, ओहिना स्पष्ट मोन पड़ि गेल। ओना, बहुत छोट खुट्टी नहि, छोट खुट्टी भेल मनुक्खक जे उचित लम्बाइ अछि तइमे खुटियाएल रहब, माने उचितसँ कम। मुदा कम्मो तँ कम छी। एहेन तँ भगवानक साँचा नहियेँ छैन जे खुटियाएलक एक साइज बनैबतैथ। कियो पाँच इंच छोट होइए तँ कियो हाथ-दू हाथ। काजमे ने भगवान चुकल छैथ मुदा बुधिक तँ बुधियार छथिये। तँए ने सभकेँ अपन-अपन नापैक यंत्र सेहो दइये दइ छथिन। अपना हाथक नापे सभ साढ़े तीन हाथक होइते अछि। छोट-पैघक नापक झगड़ा भलेँ लोक-लोकक बीच किए ने होइत रहए मुदा भगवान अपना सिर दोख थोड़े लेता। तहूमे जँ पंचवेदीमे हुनका पुछबैन जे अहाँ किए सभ रंगक लोककेँ सभ रंग बना देलिऐ तँ की हुनकर मुँह बन्न रहतैन। ओ तँ कहबे करता किने जे दूटा हाथ, दूटा पएर आ बुधिक बँटबारामे केतौ गड़बड़ अछि।

जीबठलालकेँ पुछलयैन- “एकबेर अहींसँ मिरचाइ उधार नेने रही।”

अपन सेवाधर्म सुनिते जहिना सबहक कान कुकुआए लगैए तेहने स्थिति बनि गेल। जीबठलालक ओ रूप सामने आबि ठाढ़ भऽ गेल जे पैंतीस बरख पूर्वमे छेलैन। लम्बाइ कनी कम रहितो हठगर-

चौड़गर, गोर-नार शरीर, युवाकलाकार जकाँ जिनगीक उत्साह भरल मुँहक मुस्कान...। तैबीच जीबठलाल अपन हाथक दहिना गट्टा देखबैत बजला-

"मालिक, मालिक हमरा कम आँट-पेटक लोक जरूर बनौलैन, मुदा तँए कि धर्मक बाट नइ देखौलैन सेहो अजश केना देबैन।"

कागभुसुण्डी जकाँ जीबठलालक कागपन सुनि मन जिराए गेल। जिराइते मुहसँ फुटल-

"से की, जीबठलाल?"

जीबठलाल बजला-

"मालिक, सभ-दिना जिनगी एक भेल। दोसर भेल जखन कोनो परिवारमे उचित-कल्याण होइए। तहियेसँ, माने जहियेसँ घरसँ निकैल दुनियाँमे कमाए-खाए लगलौं, अपन जे सम्बन्धित सभ छैथ तइमे उपकैर कऽ जा कहै छिऐन जे हमर जे वस्तु अछि माने बेचैक वस्तु ओ अपन काज सम्पन्न भेला पछाइत हमरा दिस ताकब। ताधैरिक बीच ने हम कहियो दाम-दीगर करब आ ने पाइ माँगब। दसे-बीस रुपैआक वस्तु किए ने हुअए मुदा पाइयोक मोल तँ बेर-बेगरतामे बढ़िये जाइए किने।"

जीबठलालक जीबठपन बोल सुनि अपनो विचार जिबैठ गेल। पुछलयैन-

"जीबठलाल! आब बुढ़ भेलौं, चलै-बुलैमे थाकि जाइत हएब। जँ कहीं रस्ता-पेरामे ठेँस-ठाँस लगि जाएत आ हाड़-पाँजर टुटि जाएत, तखन के देखत?"

अपन अरजल सम्पैतिक खुशी जहिना सभकेँ होइ छै तहिना जीबठलालोकेँ भेलैन, बजला- "मालिक! आब गाममे नीक नइ

लगैए। ओना, कारोबारक सौदा कीनैले महीनामे एक बेर समस्तीपुर जाइते छी, ओम्हरेसँ गामो चलि जाइ छी, मुदा आब ओहू जाइमे ठेकान नइ रहैए।"

बजलौं-

"से की जीबठलाल?"

जीबठलाल बजला-

"पहिने तारीख तय छल जे मासक अन्तिम तारीखकेँ जाइ छेलौं आ तेसरा दिन घुमि अबै छेलौं। मुदा आब से नइ होइए।"

पुछलयैन-

"किए ने होइए?"

मुस्की दैत जीबठलाल बजला-

"अपन ने दिन-तारीखक ठेकान करब, मुदा जँ ओइ दिन किनको ऐठाम कोनो उचित-कल्याण रहल से छोड़ि केना जाएब। अपने परिवारक काज जकाँ ने हुनको बुझै छी।"

गप-सप्पक क्रममे बेर सेहो झूकि गेल जइसँ रौदक तीखपनमे सेहो कमी आबि चुकल छल। बजलौं-

"जीबठलाल, जहिना अहाँ बुढ़ भेलौं तहिना ने अपनो भइये गेल छी। आब अपना सबहक औरुदे केते बाँकी अछि। अहिना कहियो काल गप-सप्प करैत रहब। आब काजक समय भऽ गेल। अहूँ अपना काजमे जाउ आ हमहूँ जाइ छी।"

मुड़ी डोलबैत जीबठलाल बजला-

"आब ते हमर घुरन्ती समय भऽ गेल। रसे-रसे डेरे दिस ने जाएब।"

बजलौं- "औझुका बेसी समय ते गपे-सप्पमे बीत गेल। तँए

ओते घाटा तँ भइये गेल हएत।”

जीबठलाल बजला-

“मालिक, असल कमाइ तँ पहिलुके तोरमे होइए। जखन डेरासँ विदा भऽ गाममे प्रवेश करै छी तखनेसँ ने बिकरी-बट्टा हुअ लगैए। सभ दिनक अपन सीमा बनौने छी, जैठाम तक बेचैत बढ़लौं आ ओइठामसँ घुमन्ती रस्ता पकैड़ किरिण डुमैत सभ दिन डेरा पहुँच जाइ छी।”



शब्द संख्या : 2592, तिथि : 27 मार्च 2018

इज्जत उतैर गेल

डायरियाक इलाज करा तीन दिनक पछाइत जीवनलाल घुमल तँ सभसँ पहिने बारीक करैलाक मचान लग पहुँच अनधुन गरियबैत बाजल-

“यएह सार छी जे पेटमे तेहेन कऽ उघरा-भाँड़ केलक जे तीन हजार रुपैओ खर्च करौलक आ जानो लइपर बीर्त छल।”

जीवनलालक गारि-फज्झैत सुनि मचानपर चतड़ल लत्ती आ लटकल करैला लगले किछु बाजल नहि, एकबेर जीवनलाल दिस आँखि उठा कऽ ताकि अपना दिस देखए लगल। मनमे उठलै- दुनियाँक यएह रीति अछि, कियो अपना सिर अजश लिअ थोड़े चाहैए। अजश नइ लिअ चाहैए सेहो नीके छी, मुदा जखन अजश होइबला किरदानी नइ करब तखन ने, आ जँ किरदानी करब अजशबला आ तखन जे कहबै हमरा अजश किए कियो दइए, सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। दुनियेँटा मे एहेन रीति अछि तेतबे नइ ने अछि। दुनियाँ तँ भेल मर्त्यलोक। जे जन्म लेलक ओ मरबे करत। से खाली मनुक्खे आकि जीबे-जन्तुटा नहि, पाथरक जे पहाड़ अछि ओकरो गति तहिना छइ। ई तँ भेल मर्त्यलोकक बात मुदा देवोलोकक गति की ऐसँ नीक थोड़े अछि। जे भगवान सभकेँ जन्मेबो करै छैथ आ मारबो करै छैथ, ओहो कि अपना सिर कहियो अजश लइ छैथ। जन्मैकाल पुरुख-नारीक दोख लगा अपने छिटैक जाइ छैथ, तँ मरैकाल मरनिहारक कर्तव्यकेँ आगूमे रखि अपने निर्दोष भऽ जाइ

छैथ..!

जीवनलालक बेतुकार गारि सुनि करैलालालक मनमे ओते दुख नइ भेलै जेते दुखपूर्ण गारि-सभ सुनलक। तेकर कारण भेल जे करैलालालक जे विचरण-विचारी-बुधि छल ओ ओकरा बुझा कऽ कहलकै जे 'बौआ, तूँ प्रकृति प्रदत्त सृष्टि छह, तँए तोरा एहेन-एहेन बात-कथापर नजरिये ने देबा चाही। तूँ कि कोनो दूटा हाथ दूटा पैरबला मनुक्ख छह जे लगले टिनही बरतन जकाँ गरम हेबह आ लगले ठण्ढा। तोरा हृदयमे धैर्य छह, तँए धीर रखि विचार करह। लोके जकाँ कि तोहू भऽ जेबह जे लगले माए-बापकेँ गरियेबो करैए आ कनियोँ ठेँस-ठाँस लगने जँ खसै-पड़ैए तँ चिचिया-चिचिया बापे-माएकेँ शोर पाड़ैए, 'बाप रौ बाप, माए गइ माए मुइलौं जान बँचा.!'

ओना, करैलालाल अपन मनकेँ थीर करए चाहै छल, गारिक कारणपर विचारए चाहै छल। मुदा भोरे-भोर जे जीवनलालक मुहेँ बेतुकार गारि सुनलक तइसँ मनमे कनी खाँच-खरोंच उठिते रहै, जइसँ जइ ढंगक विचार केलासँ मन पूर्ण शान्त होइतै से नइ भऽ पबै छेलइ। करैलालालक मनमे उठलै जे जीवनलाल जे एते गरियौलक ओ आवेशमे आबि गरियौलक। सहीमे हम गारि सुनैबला किरदानी कहाँ केने छी। गारियोक तँ एक सीमा छइ। जँ गारि सुनैबला किरदानी रहल तखन जँ कियो गारि पढ़लक तँ ओ उचितो भेल। मुदा जँ ओहन किरदानी नइ रहल आ तखन जँ कियो गरियौलक तँ ओ या तँ बलउमकी भेल वा नादानी, मुदा बिनु किछु बुझने-सुझने कियो गरिया देलक तँ ओ गारि महत्-हीन भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए...।

लगले फेर करैलालालक मनमे उठलै जे ई तँ अपना मने ने बुझै छी, मुदा मनुक्ख भऽ कऽ जे जीवनलाल गरियौलक से एहेन

होइ! जँ गाम-समाजमे एना हुअ लगल जे केकरो कियो बिनु दोखे गरियौत तखन तँ समाजमे अराजक स्थिति बनियेँ जाएत किने। जखने समाजमे अराजक स्थिति बनत तखने केकरो चीन-पहचीन थोड़े रहत। नीको अधला बनि जाएत आ अधलो नीक बनि जाएत..!

करैलालालकेँ अपन शील-गुण मोन पड़लै। मोन पड़िते विचार उठलै जे कहू जइ मनुक्खक जीवन रक्षा-ले आहारक संग फलहार बनल छी, वएह जखन मान-मानि नहि देत, तखन आन-आन पशु-पक्षी थोड़े मानि देत। ओहुना पशु-पक्षी कम बुधिक आँट-पेटक जीव-जन्तु छीहे। जखन बुधिक यार मनुक्ख अपनाकेँ बुधियार मानितो बुधिहीन काज करत, तखन ओकरा के बुझौत? जे एतबो बुझैले तैयार नहि अछि जे करैलालाल आयुर्वेदक ओ स्तम्भ छी जे जीवन दाताक संग जीवन भोक्तो छी! मुदा से ओकरा के बुझौत।

फेर करैलालालक मनमे उठलै जे एहेन अतिचार हमरे संग लोकक छै आकि आनो-आनो संग छइ। ओना, जहिना हमरा संग किछु लोकक दुरभवना अछि तहिना किछु लोकक सद्भावना नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहअ। हमरा संग केना नइ कहल जाएत। मुदा हमर बात सुनत के..?

अपन बात सुननिहारकेँ जखन करैलालाल नजैर खिरा देखलक तँ बुझि पड़लै जे एकटा सजमनियेँ सिंहटा एहेन अछि जेकरा केकरो संग अड़ैक शक्ति छइ। से नइ तँ अपन बात सजमैन सिंहकेँ जरूर कहबै। कहबो किए ने करबै, सभकेँ अपन-अपन स्वजातियो आ सहमेलियो तँ अछिए। किछु छी तैयो सजमैन सिंह स्वजातीए भेल किने। ओना, देहा-देही सजमैन सिंहक संग सम्बन्ध नहियेँ अछि मुदा कहियो काल एहेन तँ भइये जाइए किने जे जखन

हमहूँ तड़ुआ बनि आकि भुजुआ बनि थारीमे परोसल जाइ छी आ ओहो[3] तड़ुआ आकि भुजुआ बनि थारीमे रहैए तखन एकठाम जरूर होइते छी, भलेँ अपन-अपन गुण-धर्मे किए ने दुनू गोरेक बीच दूरी बनले रहैत हुअए। आकि आन-आन जे अछि, ओकरा बीच अपनामे सम्बन्ध बेसी किए ने हुअए। किएक तँ देखिते छी जे जहिना अल्लूलाल अछि आकि भँट्टालाल, लगले कहत जे हम अपना पैरपर ठाढ़ छी, दुनियाँमे नहियोँ कियो संग देत तैयो अपन अस्तित्व बना रहबे करब, मुदा लगले कोबी देवीक संग तँ लगले दोसरातिक संग मिलि अपने अधा-छिधा भऽ जाइए। ओना, एहेन चालि कनी-मनी सजमैन सिंहकेँ सेहो छै मुदा तैयो ओ अल्लूलाल आ भँट्टालालसँ अलग पहचानक तँ अछिए। तहूमे सभसँ पैघ गुण सजमैन सिंहमे ई अछि जे ओ केकरो परवाह नइ करैए। असगरो दुनियाँमे अपन अस्तित्व बना कऽ अछिए। कोनो मरे-मसल्ला भेल आकि नूने-तेल भेल, संग रहलै तँ बड़बढ़ियाँ आ नइ रहलै सेहो बड़बढ़ियाँ। देखिते छिऐ जे ओहुना लोक बिनु नूनोक उसैन कऽ पेट भरि खाइते अछि। पेटेटा नइ भरैए अपन गुण-शीलसँ जीवन रक्षा सेहो करिते अछि। से नइ तँ सजमैन सिंहकेँ अपन सभ बात कहबै। जे ओ कहत तइ अनुकूल अपन जिनगी चलाएब। जखन धरतीपर जन्म नेने छी तखन गारि-फज्झैत सुनि जीवन बिताएब से नीक नहि। आकि हेहरा फुलक गाछ जकाँ आड़ि-धूर केतौ फुला जाएब सेहो केहेन हएत..!

जेठ मासक समय। टहटहौआ रौद, केतेको डोह-डाबर आ इनारक संग पोखैर-झाँखैर इत्यादि सुखि गेल। माटिपर पसरल सजमैन सिंहक लत्ती, सभ किछु बरदास केने जहिना अपन मुँह उठा फूल-फड़सँ लदल मस्त अछि तहिना दोसराक मदैत करैले सेहो

[3] सजमैन सिंह

सीना तनने अछिए...।

सजमैन सिंह लग पहुँच करैलालाल बाजल- “भैया, मुसीबतमे पड़ि गेल छी! भोरे-भोर जीवनलाल मुहेँ-काने तेते ने गरियौलक जे मन ग्लानिसँ गलि रहल अछि। ओना, तखनो जीवनलालकेँ मुहेँपर जवाब दऽ सकै छेलिऐ मुदा वेचारा बड़ मेहनतसँ सेवा केने अछि तही रोचे किछु ने कहलिऐ।”

करैलालालक बात सुनि सजमैन सिंह बाजल- “से तँ नीक केलह बौआ, किए तँ तामस-पीतमे केते गोरेक मन तेना बदैल जाइ छै जे उचित-अनुचितक समुचित विचार नइ कऽ पबैए।”

सजमैन सिंहक विचारकेँ अपन विचारमे मिलैत देखि करैलालालकेँ अपन भरोस जगलै- भने केलौं, जे केलौं से नीके केलौं। यएह ने भेल गहींरपन आ उत्थरपनक बीच अन्तर-विचार। जे गहराइमे पैस गहन अध्ययन करैत गहींर विचार रखि गहींरपन वृत्ति करैए। तहिना उत्थरोपनक ने अपन लक्षण-करम अछिए...। अपन विचारकेँ सार्वजनिक[4] करैत करैलालाल बाजल-

“भाय साहैब, अहाँ दुआरे हम मुँह बन्न केने रहलौं जे बिनु सजमैन भाइक विचारे औगता कऽ किछु बाजब नीक नहि।”

अपन मन सम बढ़ैत देखि सजमैन सिंहक मन प्रेमसँ ओलैड़ गेलैन। जहिना वाणीमे मधुरता आबए लगलैन तहिना अपन गुणपन सेहो जगलैन। सजमैन सिंह बाजल-

“बौआ करैलालाल! तूँ ते जीवनदानी रहितो तीतपनमे तीतल छह, मुदा हम तँ से नइ छी। ने तोरा जकाँ तीतगण छी आ ने कदीमा जकाँ मीठगणे छी। भाय, जखन धरतीपर जन्म नेने छी तखन ओहन

---

[4] विचारकेँ सार्वजनिक करबक अर्थ भेल- अपनासँ आगू बढ़ि दोसरक संग विचारक सामंजस करब।

गुण किए ने अपनामे भरि लेब जे अपन कोनो गुणे-सुआद ने रहत बल्कि ओ सोलहन्नी बेवहार बनि विहार करत! जइसँ सबहक रक्षाक संग अपनो रक्षा हएत!"

सजमैन सिंहक विचार सुनि करैलालालक मन सेहो पकसँ पकियाए लगल।[5] पकियाइते करैलालाल बाजल-

"भाय साहैब, अहाँ सन गुणमानकेँ जखन सार्वजनिक रूपसँ बेइज्जती भऽ रहल अछि। तखन हम तँ सहजे सभ दिन बच्चे जकाँ रहलौं। कहियो सार्वजनिक रूपेँ मानि नहि पेलौं। माने सभ दिन भोज-काजसँ बर्जिते रहलौं।"

करैलालालकेँ तोषसँ तृप्ति करैत सजमैन सिंह बाजल-

"बौआ! दुनियाँ कनियेँटा अछि जे एते तबाह होइ छह। जहिना पानिसँ भरल अछि तहिना ने माटियोसँ भरल अछि। कोन कहाँ समनदर सबहक नाओं सुनै छह किने। तँए, केतेक उपछबह। छोड़ह ऐ सभकेँ। जखन कनफोरा ठनका लोक बरदास करिते अछि तखन ई गारि तँ किछु भेल? जखन ठनकोकेँ माथपर हाथ रखि भगाइये दइए तैठाम ई तँ साधारण गारि छी!"

सजमैन सिंहक विचारक धारमे करैलालाल सेहो धँसि गेल। से धँसल डुमैले नहि, हेलैले...। हेलैत करैलालाल बाजल- "भैया, तूँ कहुना भेलह ते गुरु-गोसाँइये तूल ने भेलह। तोहर बात काटब ते नरकोमे बास हएत? जे कहबह से आँखि मुनि कऽ मानियोँ लेबह आ करबो करब।"

करैलालालक पिघलैत हृदयकेँ देखि आकक पात सदृश हृदयमे[6] सटैत सजमैन सिंह बाजल- "तोरा मनमे जे एते दुखक काँट

---

[5] पकियाएब भेल पाकल करैला सदृश बनब। जइमे तीतपन कमि जाइए

[6] छातीक दुख मेटबैले, आकक पातकेँ आगिमे ताव लगा छातीमे साटौल जाइए

गड़ल छौ, से पहिने नीक जकाँ बुझा दे, तखन ओकर उचित उपायक बाट देखा देबौ।”

अपन दुखक ताप जहिना दोसराकेँ कहला पछाइत कमए लगै छै तहिना करैलालालक सेहो कमल। दुख कमिते करैलालाल बाजल-

“भैया, चारिम दिन जीवना पाँचटा जुएलहा करैला मचानपर सँ तोड़ि घरवालीकेँ कहलक जे एकरा नीक जकाँ भरूआ बनाएब। ओ भगवती केहेन ते समस्तीपुरक लौंगिया मिरचाइक सिनेही! जानसँ ऊपर मिरचाइक बुकनीक संग आन-आन केतेको रंगक मसल्ला पेटमे भरि देलक। अपन सभ गुणशील मेटा गेल आ अंग्रेजिया जकाँ मसल्ला सुआदक शासक बनि गेल! जी-जान उपैछ जीवना सहए खेलक। खेला तीनियेँ घन्टाक पछाइत पेटमे वायु गोंगिऐ लगलै। एतबो होश नइ केलक जे जीवनी लोक जे छैथ ओ बेल खाइसँ पहिने अपन सभ कुछ सहिआरि लइ छैथ, से बेहूदा केलक नहि। आ जखन डॉक्टरक भाँजमे डाँरक ढौआ ढील भेलै तखन हमरेपर सभ तामस झाड़ैए!”

करैलालालक दुखो आ दुखक दवाइयोक गन्ध वाणीसँ निकलल। सजमैन सिंह अपन सिंहासन सजबैत बाजल-

“बौआ करैलालाल, हिम्मत पूत पहाड़ तोड़ैए!”

बिच्चेमे मुड़ी डोलबैत करैलालाल बाजल- “हँ से तँ तोड़िते अछि। दिल्लियोमे देखलिऐ आ हिमालय पहाड़मे सेहो देखलिऐ।”

करैलालालक बात सुनि सजमैन सिंह विचारलैन जे दिल्लीक चर्चा करब ते एकर नजैर पहाड़क पाथरपर नहि टिक दिलबलाक दिलक लड्डूपर चल औतइ। तँए नीक हएत जे हिमालयक बात कहिऐ जे हृदयमे गड़बो करतै आ चुभ-चुभ चुभबो करतै। सजमैन

सिंह बाजल- “बौआ करैला, हिम्मतेक बलपर कियो हिमालयपर चढ़बो करैए आ अपन जिनगीक बाट चलैले ओकरा तोड़ि-तोड़ि रस्तो गढ़ैए। हाथीकेँ नइ देखै छहक जे जीवमे सभसँ पैघ अछि। मुदा ओहो जखन रस्ता चलैत रहैए ते गाम-घरक अवारा कुत्ता सभ भुकैए की नहि?”

सजमैन सिंहक विचारक धारमे करैलालाल हेल रहल छल। तैबीच हाथीपर कुत्ताकेँ भूकब सुनि डुमकी मारि करैलालाल बाजल-

“हँ, से भुकबे करैए! भुकबेटा नहि करैए बल्कि पाछू-पाछू अपना सीमा भरि दौड़बो करैए।”

विचारक धारमे बहैत करैलालालकेँ बाँहि पकैड़ सजमैन सिंह बाजल-

“बौआ, तूँ कि कोनो बुधि-अकीलबला लोक छह जे झूठ-फूसक पाछू वौआइत रहबह। राम-राम करैत अपन धाम बना दिन-राति भजन-कीर्तन करह। जइसँ जिनगीक धार पवित्र पानिसँ लबालब भरि जेतह, जइसँ मनमे कहियो छोट-छीन बातक खोंच-खरोंच उठबे ने करतह।”

सजमैन सिंहक विचार सुनि करैलालाल बाजल-

“भाय साहैब, अपने जे कहब तेकरा हम सिरोमणि बना सिरमौर केने रहब।”

सजमैन सिंह अपन जिनगीक सादपनक गुणपन मनमे रखि बाजल- “बौआ, अपन कुल-वंशकेँ चीनहह। आ ओकर रक्षा केना हेतह तइमे लागल रहअ।”

सजमैन सिंहक विचार करैलालालक मनक घरमे नइ अँटि सकल। तँए, बिच्चेमे बाजल- “नीक नाहाँति कनी बुझा कऽ कहियौ, भाय साहैब।”

भूखलकेँ एक टूक रोटी देबकेँ लोक धर्म बुझैए, तहिना एकटा नीक विचार दइबला लोककेँ विचारवान बुझिते अछि ने। तहिना एकटा गुण देनिहारकेँ सेहो गुणवान बुझिते अछि, तहिना कियो अपन शील-सोभाव देने अपनाकेँ शीलवान, स्वाभिमान सेहो बुझिते अछि। आ तहिना केकरो जिनगीक दिशा देखौने सेहो तँ जीवनदाता दृष्टिवान भेबे कएल किने। अपना दृष्टिवान बुझि सजमैन सिंह करैलालालकेँ दृष्टिगोचर करैत बाजल-

"बौआ करैलालाल! बीआसँ लत्ती-गाछ होइत फूलैत-फड़ैत जहिना बुढ़ भऽ कऽ सुखि जाइ छह, तहिना ने जिनगियो अछि। बीज रूपमे जहिना अंकुरित भऽ फूलैत-फड़ैत अन्त तकक जे जीवन भेलह सएह भेलह तोहर कर्मभूमि। अही बीचमे ने नीको करबह आ अधलो करबह। नीकक पाछू जखन दौड़बह तखन संघर्ष हेबे करतह।"

बिच्चेमे करैलालाल बाजल-

"हँ, से तँ हेबे करत।"

करैलालालकेँ विचार सूहकारिते सजमैन सिंह बजला-

"बस-बस, आइ एतबे रहए दहक। ने तूँ केतौ पड़ाएल जाइ छह आ ने हम केतौ जाइ छी। तखन तँ दुनूक बीच जे भैयारी सभ दिनसँ आबि रहल अछि ओकरा निमाहैत चलह।"



शब्द संख्या : 1905, तिथि : 30 मार्च 2018

संकट

चालिस बर्खक पछाइत राधाकान्तकेँ कृष्णकान्तसँ भेँट भेलैन। भेँटो ओहिना नइ भेलैन, कृष्णकान्तसँ राधाकान्त नियारि कऽ भेँट करए आएल छला। प्रणाम-पाती भेला पछाइत कृष्णकान्त पुछलखिन-

“भाय, की हाल-चाल?”

‘की हाल-चाल’ कहि कृष्णकान्त अथिति संगीक स्वागत-बात करैमे लगि गेला। कुरसीपर बैइसैत राधाकान्त बजला-

“भाय, की हाल-चाल रहत! संकटमे जिनगी पड़ि गेल अछि..!”

राधाकान्तक बात सुनि कृष्णकान्त अपन विचारकेँ रोकि आँगन जा पत्नीकेँ कहलैन-

“पुरान मित्र एला अछि, तँए आदर-सत्कारमे कमी नइ होइन।”

दिनक एगारह बजेक समय, अगहन मास। ओना, गाम कि इलाकेमे जखन राधाकान्त प्रवेश केलाह आ खेती-पथारी, उपजावारी पर जे नजैर पड़लैन तखनेसँ मने-मन विचारए लगला जे अपन इलाका की छल आ अखन की बनि गेल अछि!

ओना एक परिवार रहितो, जँ परिवारमे अतिथि-अभ्यागत अबै छैथ तँ एकरंग आदर-सत्कार नहियेँ होइत अछि। तेकर कारण अछि

जे अभ्यागतो-अभ्यागतमे अन्तर होइते अछि। आ ओ होइए मनुक्ख रूप देखि नहि, बनाबटी सम्बन्ध देख। पाहुन एने जे स्वागत-बात परिवारमे होइए ओइसँ अलग सासुरक पाहुन एने होइए। तहूसँ अलग दोस-महीम आ हित-अपेक्षित एने सेहो होइते अछि। खाएर जे होइए, ओ तँ परिवार-परिवारक अपन-अपन बेवहारपर निर्भर अछि। ऐठाम कृष्णकान्त आ राधाकान्तक दोस्तीक सम्बन्ध अछि।

पतिक विचार सुनिते श्यामाक मनमे एलैन जे पुरानो मित्र तँ एक रंगक नहियेँ होइ छैथ। ओहूमे अन्तर अछिए। पहिल ओहन मित्र भेला जे बालपनसँ वृद्धपन धरि एक-रसमे निमाहैत आबि रहला अछि। माने ई जे जहियासँ मित्रता भेल तहियेसँ आबाजाही होइत रहने रंग-रंगक सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी भेल रहैए आ दोसर भेल शुरूमे–माने जखन मित्रता भेल–तैबीच नीक जकाँ मित्रता चलल, मुदा आबाजाही कम रहने सम्बन्ध ओतबेपर अँटैक गेल। सएह राधाकान्त आ कृष्णकान्तक बीच भेलैन।

जहिया सी.एम. कौलेजमे पढ़ैले प्रवेश केलाह तहियेसँ राधाकान्त आ कृष्णकान्तक बीच मित्रता भेलैन। संजोग एहेन बनल जे कौलेजमे नाओं लिखबए जहिये राधाकान्त पहुँचला तहिये कृष्णकान्तो। दुनू गोरेक मैट्रिकक परीक्षाक रिजल्ट सेहो एके रंग छेलैन। सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केने रहैथ। ऑफिसमे जाधैर दुनूक एडमिशन भेल ताबे तक अपन-अपन काजमे लागल छला। नाम लिखौला पछाइत जखन दुनू गोरे ऑफिससँ निकलला तखन गप-सप्प भेलैन। ओना, गप-सप्पक दोसरो कारण भेल। दोसर कारण भेल दुनूकेँ डेरा लेब सेहो छेलैन।

कौलेजक गेट टपि दुनू चाहो पीबैले आ गपो-सप्प करैले दोकानपर पहुँचला। खाली टेबुल देखि दुनू गोरे एके टेबुलक

कुरसीपर बैसला। राधाकान्त कृष्णकान्तकेँ पुछलैन-

“अहाँकेँ घर केतए छी?”

जिला-जबार पुछैक जरूरत दुनूमे सँ किनको किए रहतैन। आइ ने दरभंगा जिला बँटि कऽ तीन जिला बनि गेल अछि मुदा ओइ समयमे जिला तीन सब्डिवीजनमे बँटल छल- दरभंगा-मधुबनी आ समस्तीपुर। दरभंगा जिलो आ सब्डिवीजनो छल। तँए समस्तियोपुर आ मधुबनियोक बासी कनिष्ट छलाहे।

कृष्णकान्त बजला-

“हमर घर हरिपुर अछि आ अहाँक?”

राधाकान्त-

“हमर सीतापुर।”

जखन सबहक बाबा एके छी माने जिला एक छी, तखन पित्ती आ बड़-भाय–माने सब्डिवीजनक आ ब्लौक–क मोजरे केते, तँए दुनूक बीच कोनो मन-मनान्तर किए उठितैन। ओहुना विद्यालयमे गाम-समाजक हिसाबसँ जातीय बन्धन थोड़ेक ढील अछिए। माने ई जे कथा-कुटुमैतीमे जइ हिसाबे जातिक जड़ि खुनि-खुनि जीऔल जाइ छै, तैठाम तँ ओ जगजगार हेबे करत किने। से विद्यालय, महाविद्यालयमे नहि अछि। ओइ हिसाबे बुझू माटिक तरमे झँपाइते जा रहल अछि। ओना, दुनूक चेहरो-मुहरामे तरपट नहियेँ छेलैन। दुनूक सामंजसक बाधाक बीच केतौ बाट खाली नइ छल। संजोग भेल, चाहे दोकानदार अपन बीस बर्खक कमाइसँ निच्चाँ ईंटा जोड़ि ऊपर सीमटीक चदरासँ छाड़ि हालेमे एकटा घर बनौलक जइमे दूटा कोठरी छइ। एकटामे अपन परिवार छै आ दोसर भाड़ा लगौत।

राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो दरभंगा शहरक लेल अनाड़ी छलाहे। चाह हाथमे पकड़ैत राधाकान्त दोकानदारकेँ पुछलैन-

"विद्यार्थीक रहैबला डेरा भाँजपर केतौ अछि? ओना, दुनू गोरेकेँ गामेसँ भाँज लगि चुकल छेलैन जे चौबे लॉज छै, जइमे दू-चारि कोठरी सदिकाल खालीए रहैए। चौबेजी अपनो भरि दिन एकटा चटसारपर बैस गाँजे पीबैत रहै छैथ तँए कोनो विद्यार्थीकेँ डेरा नइ भेटैक प्रश्न मनमे उठिते ने अछि।"

बगलक खाली कुरसीपर बैस दोकानदार अपन अन्तर-शक्ति जगबैत बाजल-

"दू गोरेक रहैबला एकटा कोठरी हमरो अछि।"

रहैक डेराक आशा सुनि दुनूक मन तिरपीत भेल। कृष्णकान्त दोकानदारकेँ पुछलैन-

"की भाड़ा लेबइ?"

एक तँ जेहने अनाड़ी दोकानदार तेहने अनाड़ी राधाकान्तो-कृष्णकान्त। ओना, जेहेन डेरा तेहेन भाड़ाक दर छेलैहे। मुदा कोनो नव, भाड़ा दइबला वा लइबलाक संग तँ विकल्प बनले अछि जे जइ तरहक घर अछि तइ तरहक भाड़ा भेल। जहिना चौबे लॉजक भाड़ा, दस रुपैआसँ बीस रुपैआक बीचक अछि, तेहने घर ने दोकानदारोक छैन। तैबीच दोकानदारक मन नचैत विद्या-अध्ययन केनिहारक रूप लग पहुँच गेल। एक ब्रह्मचारीक रूप देखि दोकानदार ठाँहि-पठाँहि बाजल-

"बौआ, अहाँ सभ छोट भाइक रूपमे रहब, तैठाम हमर बाजब नीक हएत। अहाँ दुनू गोरे अपनामे विचारि लिअ, जे भाड़ा कहब, हम कोठरी दऽ देब।"

एक तँ दुनूक मनमे सी.एम.कौलेजमे प्रवेशक खुशी, तैपर चाहक खुशी सेहो छेलैन्हे। तँए माता-पिताक सोहे-बात मनमे किए रहितैन जे अपन ओकाइतिक हिसाबसँ काज करितैथ। ओना, दुनूक

मनमे नव विचार सेहो अँकुरिये गेल छेलैन। ओ अँकुरल छेलैन दोकानदारक विचार देख, जखन बेचारे अपने सभपर फेक देलैन तखन बजारक जे हिसाब अछि तइ हिसाबसँ ने बाजब।

पचीस रुपैआ भाड़ा तय-तसफिया करैत दोकानदार बाजल-

"कनिये दूरपर घर अछि, चलू चलि कऽ देखाइये देब आ तालाक कुञ्जी सेहो दऽ देब।"

सोना-चानी दोकान-ले भिनसुरका चारि पाँच बजेक समय जहिना कुसमय भेल तहिना चाहक दोकानले दुपहरक समय भऽ जाइते अछि। माने स्पष्ट अछिए। एकर विपरीत दिशा सेहो अछिए। चाहक दोकान-ले चारि-पाँच बजे भोरक समय शुभ भेल आ सोना-चानीक दोकान-ले अशुभ, तहिना सोना-चानीक दोकान-ले दुपहरक समय शुभ भेल मुदा चाहक दोकानदार-ले अशुभ भेबे कएल। खाएर जे होइए हुअ दियौ अपना ताले दुनू बेताल अछि। समय शुभ-अशुभ होइते ने अछि, काज आ स्थान ओकरा शुभ-अशुभ बनबैत अछि।

कौलेजमे अखन पढ़ाइ शुरू होइमे आठ दिन बाँकी छल। तँए आठम दिनक दिन ठेक राधाकन्तो आ कृष्णकान्तो आ दोकानदार सेहो अपन-अपन काज दिस बढ़ला। संग हटला पछाइत जहिना एक दिस दोकानदारक मन अपन एक जिनगी चढ़ैत देखलक। माने ई जे दरभंगा सन बजारमे अपन दस धुर घराड़ी बनौलक तेकर खुशी, तैपर दोकानक आमदनीक संग घरक भाड़ा सेहो देखलक। मने मन दोकानदार अपन प्रज्वलित होइत भविस देखए लगल तहिना दोसर दिस राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो अपना बले अपन काज सम्हारि कऽ ने घरमुहाँ भेला, तँए मनमे मस्ती उठब सोभाविके अछि। दुनू मस्तीसँ आगू बढ़ैत ओइ मोड़पर आबि अँटैक कऽ ठाढ़ भेला जैठामसँ दुनू बेकतीक अपन-अपन गाम दिसक रस्ता फुटैत

अछि। मात्र दू घन्टाक बीचक दुनू सम्बन्ध जेना बहैत जिनगीक धारकेँ एकठाम जोड़ि देलक। एक धारमे जुटला पछाइत धारसँ पुन: अलग दोसर धार बनाएब जहिना असान अछि तहिना भारियो तँ अछिए। ओना, होइत दुनू अछि। एक पुरुष आ एक नारीक बीच सम्बन्ध भेने सृष्टिक शक्ति जखन आबि जाइए तखन जँ दू पुरुखक बीच सम्बन्ध बनत तँ ओ भलेँ सृष्टिकर्ता नहि बनए मुदा सिरजन कर्ता नइ बनि सकैए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैत अछि। ओना, तैबीच दुनूक अपन-अपन परिवारो आ विद्यालयक विद्याध्ययनक विचार सेहो भइये गेल छेलैन जइसँ आमक कलमक गाछ जकाँ नमगर-चौड़गर देह-दैहिक मिलान सेहो भइये गेल छेलैन। एक तँ पैछला कथाक सम्बन्ध, तैपर दू घन्टाक टटका सम्बन्ध सेहो तहदर-तड़गर बनियेँ रहल छेलैन।

अन्तिम विदाइकेँ नव आवरण दैत कृष्णकान्त बजला-

“भाय, अखन तक हेराएल भैयारी छेलौं, मुदा आब तँ भेटल संगी भेलौं, संग मिलि चलबो अछि आ चलैत रहबो अछिए। तँए एकटा निसचित समय बना लिअ जे केते बजे दरभंगा पहुँच जाएब।”

राधाकान्त बजला-

“भाय, अहाँ इलाकामे जे होइत हुअए मुदा हमरा इलाकामे बेटा होइ कि बेटी, माता-पिता घरसँ बिनु खेने नइ निकलए दइ छैथ, तहूमे बुझिते छिऐ जे विदाइयक भोजन केहेन होइ छइ। तँए बारह बजेक बादे घरसँ निकैल हएत, तइ हिसाबे पहुँचब।”

राधाकान्तक बात जेना कृष्णकान्तकेँ छुबि देने होनि तहिना मन छुबाइन भऽ गेलैन। अपन इलाकाक ऊपर लागल कलंककेँ साफ करैत कृष्णकान्त बजला- “भाय, एना जे हमरा इलाका आ

अपना इलाकाक बेवहारक बात केलौं से की हमर घर मिथिलासँ बाहर अछि?”

सामंजस करैत राधाकान्त बजला-

“भाय, हमर-अहाँक एक बेवहार-विचार रहितो प्रकृति अवघात करिते अछि। की अपने ऐठाम एहनो इलाका नइ अछि जे धार-धुरमे कटि-छँटि कऽ तेना नष्ट भऽ गेल जैठाम बेटा-बेटीकेँ माता-पिता भूखले घरसँ विदा नइ करै छैथ। की एकरा नकारल जा सकैए?”

राधाकान्तक बातपर कृष्णकान्त अपन मुड़ी डोलबैत चुप्पे रहला। एक-दोसरक नजैर-मे-नजैर मिलबैत दुनू गोरे अपन-अपन गामक रस्ता पकैड़ विदा भेला।

एक डेरा आ एक कौलेजमे तीन साल समय बीतल। दुनू गोरे, राधाकान्तो आ कृष्णकान्तो एक संग एक घरमे चौबीसो घन्टाक किरिया-कर्म करैत बी.ए. ऑनर्सक किलासमे पहुँच चुकल छला। अर्थ शास्त्रक विद्यार्थी रहने दुनूकेँ अर्थ-चरित्रक आत्म-ज्ञान मनमे जागि ई स्पष्ट कऽ देने छेलैन जे अपन जे पैतृक सम्पैत अछि ओ जीवनक लेल परियाप्त अछि। तँए, नोकरीकेँ मनसँ हटा दुनू गोरे अध्ययन दिस अपनाकेँ लगौने रहला। दुनू गोरे अर्थशास्त्र-प्रतिष्ठाक डिग्री पाबि अपन पुस्तैनी किसानी जिनगी शुरू केलाह।

पतिक विचार–माने पुरान मित्र एला अछि–सुनि श्यामा अगदिगमे पड़ि गेली। अगदिग ई जे अभ्यागतक माने तँ दोस-महीमसँ लऽ कऽ सर-सम्बन्धी होइत अनठियोक संग अछिये, मुदा पहिने जे स्वागतक ढंग छल ओइमे थोड़ेक तोड़-जोड़ सेहो भेबे कएल अछि। पहिने एक लोटा जल अभ्यागतकेँ पएर धोइले देल जाइ छल मुदा आजुक परिवेशमे ओ गौण भऽ गेल। तेकर अनेको

कारण अछि...। मुदा लगले श्यामा अपन पतिक नाड़ पकैड़ मित्रक नाड़ी पकैड़ लेली। लोटामे जल आ गिलास नेने श्यामा दरबज्जापर पहुँचली। ओना, श्यामा सहैम-सरमा कऽ एकाएक धकचुका गेली। धकचुकाइक कारण भेलैन जे झुर्ड़ीक आगमन भेने राधाकान्तक चेहरा झुड़िया गेल छेलैन जइसँ वयसगर रंग-रूप पकैड़ नेने छेलैन। मुदा अपन घर अपन होइए किने। जेकर मान-सम्मानक भार घरवारीक ऊपरमे अछिए। पत्नीक धकचुकीकेँ मठियबैत कृष्णकान्त बजला-

"एना धक-चुकाइ किए छी। मित्रतामे छोट-पैघ नइ होइ छइ। सबहक सम्बन्ध मित्रवत होइ छै, माने बराबरीक सम्बन्ध। जहिना अहाँ मित्रणी-मैत्रेयी भेलिऐन तहिना ओहो ने मित्रणा भेला।"

ओना, किसान परिवारसँ जुड़ल श्यामा, मुदा अपनाकेँ पतिक आगूमे पतिक पूरक रूपमे बुझै छेली, तँए मुँह दाबि बाजब सोभाविके छल। लोटाक जल आ गिलास रखि श्यामा चाह आनए आँगन गेली। पुतोहु चाह बना नेने छेलैन। पियासक तृष्णा सेहो कनी-मनी राधाकन्तकेँ जगिये चुकल छेलैन। पानि पीबिते रहैथ कि श्यामा चाह नेने पहुँच गेली। यएह ने भेल अतिथि-सत्कार जे खान-पानक संग गप-सप्पमे मन बहलबैत बहेलिया बनल रही।

टेबुलपर चाहक कप रखि श्यामा आँगन दिस विदा हुअ लगली। मुदा कृष्णकान्त रोकैत बजला-

"मित्र की कोनो हमरेटा छिआ जे अहाँ छोड़ि कऽ आँगन जाइ छी। जहिना ओ अहाँक मित्रणा छैथ तहिना अहूँ ने मित्रणी छिऐन!"

खग जानए खगक बोल, पतिक विचार सुनि मुस्कुराइत श्यामा आगूमे बैसली। टेबुलक एक भागमे राधाकान्त दोसर भाग कृष्णकान्त आ तेसर भाग श्यामा छेली। जहिना दू पुरुखक बीच एक

नारीकेँ रहने पुरुष परीक्षा होइए, माने जहिना दुनू भाँइक बीच सीताकेँ रहने रामक परीक्षा भेलैन तहिना ने लक्ष्मणोक भेबे केलैन। से खाली पुरुषेक परीक्षाटा होइए एहेन बात नहि अछि, नारियोक संग अछिए। ओ अछि दू नारीक बीच एकटा पुरुखक हएब। हँ! एकरा अहाँ सौतीनक डाह नइ बुझब।

जेना थाकल-ठेहियाएल राधाकान्त पानि पीलैन तेना चाह कण्ठसँ निच्चाँ नइ ससैर रहल छेलैन। जइसँ रूकि-रूकि चाह पीबै छला। श्यामा बीचमे ओहिना सकदम छेली जेना कियो ओहन स्थानपर पहुँचला पछाइत सभ किछु हेराएल-हेराएल देखि सकदम भेल रहैए। श्यामाक मनमे उठैत रहैन जे पतिक संग मित्रक केहेन बेवहार रहल छैन। बिनु ओइ बेवहारकेँ बुझने-जनने कोनो एहेन बेवहार ने भऽ जाए जे ओइसँ विपरीत होइ वा हटल-हटल होइ। ओना, एहनो तँ मानले जाइए जे मूर्खक उच्चकोटिक ज्ञानपन वएह भेल जे चुपचाप सुनि-सुनि मनमे घोड़ैत रहल। श्यामा तँए चुप, मुदा राधाकान्तकेँ सेहो चुपचाप सकदम देखि कृष्णकान्त बजला-

“मित्र, चाहमे किछु कमी अछि जे पीबैमे बाधा उपस्थिति होइए।”

बच्चासँ सीखल-जाँचल राधाकान्त छलाहे, मित्रक नस-नस ओहिना जनिते छला जहिना नर्कक मंत्र घाट होइत अछि। बजला-

“मित्र! मित्रणीक चाह पवित्र छैन मुदा अपने चाह अपवित्र भऽ गेल अछि।”

राधाकान्तक बात सुनि श्यामाक मन सेहो बजैले लुसफुसेलैन। लुसफुसाइक कारण भेलैन जे राधाकान्त मित्रणीक चर्च कऽ देने छेलखिन। ओना, श्यामाक मनमे गाड़ी रोकैक ब्रेक जकाँ आगू-पाछू सेहो दुनू ब्रेक लागले छेलैन। मुदा ओ तँ सलाइ रिंच जकाँ बहुरूपिया

अछि, जइसँ ई निर्धारित करब थोड़ेक कठिनाह तँ अछिए जे कोन नट केतेपर रिंचसँ कसाएत। श्यामाक मनमे ब्रेक ई लगलैन जे परिवारक मालिक तँ पुरुख भेला, घरक सभ छार-भार हुनका ऊपर भेलैन। हम तँ साधारण चाह अननिहारि छेलौं। पीनिहार सभ छी, बनौनिहार एक भेली माने पुतोहु बनौली, तैबीच मित्रक एहेन बोल किए भेलैन? एहनो तँ संभव अछिए जे जहिना दूधक फूलक जे सुगन्ध अछि ओ ओकरे (माने दूधेक) लोहियासँ सटल-जरल दूधक नहियेँ अछि। भले ओ दूधेक किए ने होइ। ओ तँ जरल डारहीक जराइन महक निकालबे करत। सएह तँ ने मित्रोकेँ भेल छैन।

काग-भुशुण्डी जकाँ रस्ता परहक बर्खाक पानिमे नहा पाँखि फड़फड़ा कऽ झाड़ि शान्त-चित्तसँ श्यामा अपन मुँह बन्न केने रहली।

एमहर मित्रक विचार सुनि कृष्णकान्त स्तब्ध भऽ गेल छला। जे एहेन विचार मित्रक मुहसँ किए निकलल। ओना, मनमे ब्रेक जकाँ ईहो लागि गेल रहैन जे मित्रक मन जरूर बेथासँ बेथित छैन। A Friend is a need friend in deed. केहेन बेथा? केना पुछबैन बेथाक बेहाल? मुदा बिनु बुझने कियो केकरो बेहालकेँ सुहालो तँ नहियेँ बना सकैए। सभ समस्याक अपन-अपन सीमो छै आ श्रेणियो छइहे। ओही सीमा-श्रेणीक बीच ने समाधानो अछि। ई तँ नहि ने, जेना कृष्ण-सुदामाक बीच भेलैन। दोस्तिनीक जे सिनेही सनेस कृष्ण हँसि-हँसि खाए चाहै छला से सुदामा अढ़ दाबि-दाबि नुकबए चाहैथ। भर्लें कृष्ण चित्तचोर छला से बुझि गेला, मुदा सुदामाकेँ अपन गरीबीक प्रति ग्लानि नइ होइत रहैन सेहो केना नहि कहल जाएत...।

कृष्णकान्तक मन भीतरे-भीतर तिरछियाइत ओतै पहुँच गेलैन जेतए पियासलकेँ पानिक तृष्णा तेज रूपमे जगैए। ओना, जहिना

पियासल गाए-मालक तीन रूप सामने अबैए। पहिल- जोर-जोरसँ डिरियाएब, दोसर- हूकरब आ तेसर- अपन पियासकेँ आँखिसँ निकालि मलकारक आँखि चढ़ि-चढ़ि करूण क्रन्दन करब। यएह स्थिति कृष्णकान्तक बनि गेलैन। जे राधाकान्त बुझि गेला। बुझि ई गेला जे एक तँ हम सभ उमेरगर भेलौं, अनेको रंगक दुख-दर्द सहल देह अछि, तैठाम अशुभ बात मुहसँ निकालैमे कृष्णकान्तकेँ असोकर्ज तँ भइये रहलैन अछि। दुखाएल मने मुस्कुराइत राधाकान्त बजला-

"मित्र, अहाँक गाममे लक्ष्मी साक्षात् नाचि रहली अछि। मुदा हमर...।"

बीच रस्तामे राधाकान्तक विचारक गाड़ीकेँ रूकिते देखि पाछूसँ ठेलैत कृष्णकान्त बजला-

"से की?"

राधाकान्त बजला-

"कौलेज छोड़ला पछाइत अपन पैतृक सम्पैतिक काज-खेती-बारीमे तेना बोहिया गेलौं जे बीचक तीस साल केना बीत गेल से बुझबे ने केलौं। जहिना वेरागी सभ राम-रमैया, कृष्ण-कन्हैयाक सतसंगक पाछू बोहिया जाइ छैथ तहिना भेल। अहूँकेँ बिसैर गेलौं आ अहाँक संग मित्रणियोकेँ बिसैर गेलिऐन। मन अछि किने जे लोकनिया हमहीं गेल रही। ओही गामक लोक ने हमरा 'लोकना-लोकना' कहए लगल।"

राधाकान्तक विचार सुनि श्यामा अखियास करए लगली। हिनकर बचपनाक देह केहेन लालबुन्द छेलैन आ आइ झुर्ड़ी पड़ि रहल छैन! जरूर केतौ-ने-केतौ जिनगीमे खाँच-खरोच भेलैन अछि। नहि तँ एहनो होइ जे जे आम सुभर निरोग छल ओ कोलिपदु भऽ

जाएत! एकर माने ई नइ बुझबै जे जेतबो सत् बात छोट बेदरा बजै छल, तेतबो सत् बात आइ बाप-पित्तीक कोन बात जे बाबो नहि बाजि पबै छैथ। किए ने बाजि पबै छैथ से तँ अपनो मन कहिते हेतैन...।

बेर-बेर श्यामा आँखि उठा-उठा राधाकान्तक शरीरपर नचबए लगली।

ओना, कृष्णकान्तक मनमे ईहो उठए लगलैन जे खेला-पीला पछाइत जिनगीक नीक-बेजा एक बात करब नीक हएत। मुदा लगले मन ईहो कहए लगलैन जे दुखक जड़ि जेते जल्दी मेट जाए ओते शुभ...।

कृष्णकान्त बजला- "मित्र, तीस साल पैछला जिनगी नीक रहल जे एक पीढ़ीक जीवन भेल, बढ़ियाँ बात। मुदा पछातिक दस बर्ख?"

हारल सिपाही जकाँ नहि, बाधासँ बाधित सिपाही जकाँ राधाकान्त बजला-

"मित्र, दस बर्खसँ जंगली गाइयक (नील गाए) उपद्रव गाममे तेते बढ़ि गेल अछि जे बाड़ी तकमे तीमन-तरकारीक उपज नइ भऽ पबैए। जहिना हाथ रहैत निहत्था बनि गेल छी तहिना बुधि रहैत बुधिहीन सेहो बनि गेल छी। शुरूक तीन साल मनमे यएह होइत रहल जे जहिना बोन-झाड़ दिससँ नील गाए वौउरा कऽ गाम दिस आबि गेल अछि तहिना चलियो जाएत।"

कृष्णकान्त बजला-

"तइमे की बाधा भेल?"

"की कहब! सबे नचाबे राम गोसाँइ। एक दिस जहिना गंगा प्रदूषित धार दुनियाँमे घोषित अछि, तहिना दोसर दिस वैतरणी पार

करैवाली पवित्र धार कि नइ छैथ सेहो तँ वएह छैथ। जेते मनुक्खक लहास गंगा धारमे अर्पित-समर्पित होइए, तेते कोन धार पचा सकैए। गाइयक रूपमे जंगली जानवरक उपद्रव तेते बढि गेल जे जीब कठिन भऽ गेल अछि।”

कृष्णकान्त बजला-

“पहिने नील गाएकेँ सील-मोहर करए पड़त जे एकरा केहेन पशु मानल जाए।”

अन्तिम खुशी जाहिर करैत राधाकान्त बजला-

“मित्र, आब जिनगीए केतेक शेष अछि। एते दिन काजपर बैसल छेलौं, काजमे समय नचैत छल, मुदा आब ओ सभ सभटा चलि गेल तँए आब थोड़ेक फ्री सेहो भइये गेलौं, भेँट-घाँट होइत रहत।”

कृष्णकान्त-

“मित्र, पाँच दिन रहू। अपन हाथक उपजौल एक-एक चीज-वौस खुआ देब। पाँच दिनक पछाइत जाएब।”

राधाकान्त बजला-

“मित्र, अपन जिनगी ओहने बना नेने छी जेहेन समय-साल बनि गेल अछि। भने चालीस बर्खक बीचक भेँट-घाँट जे गैप छल ओ समतल बनि जाएत। आइ भरि छी, काल्हि भोरे चलि जाएब।



शब्द संख्या : 2595, तिथि : 4 अप्रैल 2018

एकतीस मार्च

सरकारीए सूत्र जकाँ हमरो गाम सूत्रवद्ध अछि। जहिना सरकारी काम-काजक वर्षक अन्त एकतीस मार्च आ एक अप्रीलसँ सालक शुरू होइए, तहिना हमरो गाममे सालक अन्तिम काज मार्चक अन्तिम तारीखकेँ भेल। ओना, अपना ऐठाम अनेको तिथि-मिति अछिए। जेना एकटा भेल फागुनक फगुआ जे सालक अन्तिम पाबनियोँ आ सालक अन्तिम दिन सेहो छी, तहिना अंग्रेजीक एकतीस दिसम्बर सेहो अन्तिम दिनक तारीख भेल आ पहिल जनवरी सालक पहिल दिन भेल। तेतबे नइ ने अछि, बैशाखक प्रातसँ साल सेहो शुरू होइते अछि आ वैशाखी पाबैन भेल सालक अन्तिम दिन। अखाढ़ सेहो अन्तिम मास भेल आ सौन सेहो शुरू मास भेल। तेकर अतिरिक्तो अनेको तिथि-मिति सेहो अछिए। विद्यापतिक दिन-ठेकान ल.स. संवतसँ सेहो होइत अछि। खाएर जे होइए से सभ नीके तँ अछिए। बेसी लोकमे जँ बेसी तीथि-मिति नइ चलैत रहत सेहो नीक नहियेँ हएत, किएक तँ जनसंख्या बेसी रहने जँ तिथि-मिति कम रहत तखन तँ ओ ओहिना हेरा जाएत किने जेना सरकारी स्कीम हेरा जाइए। ओना, एते रहला पछातियो गोटे-गोटे हेराइयो जाइए आ भोथियाइयो जाइते अछि। जँ से नहि हेराइत-भोथियाइत तखन एक्के पाबैन दू-दिना किए होइत। खाएर...। ओना, पाबनियेँकेँ की मुँह-नाङ्गैर अछि, गोटे पाबैन सालमे एके दिन होइए तँ गोटे-गोटे सालमे दू दिन। माने दू मासमे होइते अछि। जेना छठि पाबैन अछि जे कातिकमे सेहो होइए आ चैतमे सेहो होइते

अछि, तहिना एहनो पाबैन तँ ऐछे जे सालमे तीन बेर, चारि बेर होइए। आ से मासोक हिसाबसँ। जेना घड़ी पाबैन अछि एकर ने मासक ठेकान अछि आ ने दिन-तारीखक। किएक तँ जहिना सौनमे होइए तहिना दोसरो मासमे होइते अछि। तेतबे नहि, एक्के मासमे बुधे-बुध सेहो होइए आ शनिये-शनि सेहो होइते अछि। खाएर जेतए जे होइए, होइए। हमरा गामक तिथि-मिति सरकारी तिथि-मितिक संग चलैए, सेहो तँ कहले जा सकैए।

ओना, गाममे अपना-अपनीक सम्बन्ध सबहक बीच अछिए जे अपना-अपना मासक तारीखक हिसाबे वा तिथि-मितिक हिसाबे चलिते अछि। कोनो चैत-बैशाखक जे सूत्र अछि तइ हिसाबे अनहरिया-इजोरिया तिथिक हिसाबसँ चलैए तँ कोनो तिला-सकराँतिक मुँह-मिलानीक हिसाबसँ चलैए, माने जहिना तिला-संकराँइत अंगरेजीक चौदह जनवरीसँ तहिना विश्वकर्मा पूजा सतरह सितम्बरसँ मुँह-मिलानी केनहि अछि। ओना, दुनूक मुँह-मिलानी एक रंग सेहो नहियेँ अछि। तिला-सकराँतिक हिसाबसँ मासक हिसाब सेहो चलैए, मुदा विश्वकर्मा पूजाक हिसाब सेहो संयासीक सहवास जकाँ असगरे परिवारो आ दिनो-ठेकान ठेकले अछि।

हमरा गामक सालक अन्तिम उत्सव सम्पन्न भेल, निर्गुण-सम्प्रदायक कबीर संत सम्मेलन अट्ठाइस सालक प्रौढ़ जवानक उत्सव छल। ओना, छिट-फुट ढंगसँ कबीर दासेक समयसँ–माने मध्यकालक चौदहमी-पनरहमी शताब्दीसँ–शुरू भेल। मुदा ओइ समयमे गृह-बासू कहियौ आकि गाम-बासू से नइ भेल। हमरा गाममे शुरू भेल अट्ठाइस बरख पहिनेसँ, लोचन दासकेँ महात्मा भेला पछाइतसँ। लोचन दास ओहन निष्ठित महात्मा तँ छथिये जे भीख माँगि भीख बँटै छैथ। जइसँ तीन गामक अधिकारी हिस्सेदार नइ भेला सेहो केना नकारल जा सकैए। खाएर लोचन दास जे छैथ ओ

अपने छैथ मुदा समाजक तँ एते छेबे करैथ जे असगरो नुक्कर नाटक जकाँ सेहो आ छोट-पैघ भनडाराक बीच मंचपर चढ़ि सेहो अपन गामक संत-सम्मेलनक दल-हकार बाँटि-बाँटि निर्गुण विचारक शरबत घोरि-घोरि नइ पीआबै छैथ सेहो केना नकारल जाएत। पीऐबते छैथ। ई तँ भेल सालक खुदरा-खुदरी कारोबार, असल होइए अन्तर्राष्ट्रीय निर्गुण सन्त सम्मेलन, जे कबीर सन्त सम्मेलनक नाओंसँ सेहो जानले जाइए आ मानलो तँ जाइते अछि। से भेल एकतीस मार्चकेँ। तीन दिनक सम्मेलन छल। पहिल दिन राशन-पानीसँ लऽ कऽ सभ तैयारी भेल आ दोसर-तेसर दिन भेल कीर्तन-भजनक संग प्रवचन।

नीक-नीक जानकारो आ विचारको महात्मा सबहक आगमन भेल छल। एक-सँ-एक महात्मा पहुँचल छला। सन्त-समागम खूब जमल, नीक उत्सव भेल। सरकारी योजना जहिना गोटे साल नीक दलक बीच संचालित भेलासँ नीक जकाँ सफलो आ सुन्दरो होइए तहिना ऐ साल हमरो गाममे भेल। माने ई जे सालक शुरूसँ अन्त धरि एकोटा पाबैन-तिहार ने दू-दिना भेल आ ने कटबी भेल। अपन-अपन मासो आ दिनो-बेरागन सबहक ठेकानपर रहलैन तँए एक-दोसरकेँ पुछनौं वा बिनु पुछनौं सभ एक-दिने ओहिना केलैन जहिना एक इंजिनक दूटा इंजीनियरकेँ एक्के रंग लूरि-बुधि रहने परोछो आ सोझहोमे एक्के रंग, एक धारामे काज संचालित होइत रहैए। ई तँ भेल आगू दिस चलनिहारक, मुदा एहनो तँ अछिए जेकर तिथि-मितिक दिशा भिन्न अछि, हुनकर जे दहिना छैन ओ अहाँक बामा भऽ जाइए। माने अहाँ जहिना हुनका आगू दिस बुझै छिऐन तहिना ओहो अपनाकेँ आगूए दिस बुझै छैथ, मुदा अहाँक मासक विपरीत हुनकर मास भऽ जाइ छैन, जइसँ अहाँकेँ विपरीत दिशा देखाए पड़ैए। तँए, अन्तर मात्र एतबे भेल। मुदा अपन-अपन परिवारक आ

अपन-अपन समाजक बात जखन बसिया भात खेनिहार जकाँ माने साँझक भोरे बिसरनिहार जकाँ, लोक बिसैर जाइए तखन साल भरिक पाबैन-तिहार मन किए रखता, किए कोनो पाबैनक नीक-बेजाएक विचार करत, चौरचनक दही आ खीर-पुड़ीसँ हुनका मतलबे की छैन। छठिक कुशियारक खोंइचाकेँ मुँहक दाँतसँ सोहि-सोहि गुल्ला काटि-काटि किए रस-पान करता। जखन कि देखिते छी जे बनले-बनल गुल्लो आ बनले-बनल लालमोहनो बजारमे टटके भेटै छइ। किए कुशियारक मिल बनि लोक रस पीता..? अहाँ भलेँ बुझिऐ जे टटका रस चुसै छी, मुदा ओहो तँ तिरपेखैन करि कऽ घुमलै रहै छैथ किने। माने भेल कुशियारक रससँ आगू बढ़ि सक्कड़ वा राब बनि चाहे चीनी बनि चीनियाएल बोरमे डुमल रहिते अछि। खाएर जे अछि से अछि मुदा ईहो तँ अछिए जे धानक दौन करैकाल जहिना ऐगला बरद माने पैटक बरदकेँ दौड़-दौड़ चलए पड़ै छै तँ बीचला दोसरोक भरे चलैए आ मेहोता तँ सहजे मेहे बनल महियाइत चलिते अछि, तहिना समाजोक बीच समाजक ओहन लोक नइ छैथ सेहो केना कहल जा सकैए! सेहो तँ छथिए।

साधारण परिवारमे लोचन दासक जन्म भेल छैन। साधारण शिक्षा, माने गामक साधारण स्कूलसँ लोचन दास शिक्षा पौने छैथ। ओना, हमर गाम देखौआ साधु-महात्माक बड़का कारखाना छी, जइमे धनकुटिया मशीनसँ लऽ कऽ पनि-पटिया मशीन तक तैयार होइते अछि। माने ई भेल जे रौदी भेने बढ़ि जाइए आ बरसात भेने घटि जाइए। जइसँ जहिना देशमे एक-पाटीसँ दोसर पाटीमे, नेताकेँ जाइ-अबैमे देरी नइ लगैए तहिना हमरो गाममे अछिए। आन लोककेँ जरूरीए की छै जे पुछतैन अहाँ कौआ छी आकि मेना? एक सम्प्रादायसँ दोसर आ दोसरसँ तेसर सम्प्रदायमे लोक भदवरिया धार जकाँ ऐ खेतसँ ओइ खेत आ ऐ धारसँ ओइ धारमे बहिते अछि।

आन-आन गाममे जे होइत हौ मुदा हमरा गाममे तँ एहेन अछिए जे सेवकजी सभकेँ दरमाहा दए-दए महात्माजी सभकेँ संगमे रखए पड़ै छैन। जँ से नइ करब तँ सम्राजवादी दाहीमे महनथाना राखि केना सकब। तइ रखैले जँ कोनो कल-बल छुटि जाएत तँ अनेरे ने ओ कपारपर लदि जाएत। भाय, जखन देशमे महगी आएल तँ लोकोमे महंगी एबे करत किने।

लोचन दास पारिवारिक महात्मा छैथ। पचास बर्खक लोचन दासक नमहर परिवार छैन। माता-पिताक संग तीन भैयारी सेहो छैथ। नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ घर भरल छैन्हे। निम्न परिवारमे रहितो लोचन दासक परिवारमे शिक्षाक स्तर गामक हिसाबे अगुआएल छैन्हे। ओना, आन गामक लोक हमरा गामकेँ जहिना संसकरिया मानै छैथ तहिना अगि-लगिया सेहो मानिते छैथ।

सन्त-सम्मेलनक समापनक तीन दिनक पछाइत लोचन दास भेटला। रंग-रूपसँ बुझि पड़ल जे लोचन दासक चला-चलती किछु बढ़ि गेल छैन। जइसँ तबाहियो[7] बढ़ि गेल छैन आ सम्मेलनक सफलताक खुशियो मनमे छैन्हे। मुदा से झँपाएल जकाँ बुझि पड़ै छल। चेहराक जे रूखि छेलैन ओ मेहनतक छेलैन तँए मलिन सेहो छेलैन्हे। ओना, गाममे सम्मेलनक जागृत उत्साह जगिये गेल छल जइसँ जहाँ-तहाँ माने दुआर-दरबज्जा, चौक-चौराहाक गप-सप्पक क्रममे सम्मेलन छेलैहे। होइतो अहिना छै जे परिवारमे कोनो नीक काजकेँ सफल भेने जहिना परिवारोमे तहिना सामाजिक काजकेँ सफल भेने समाजोमे खुशीक लहैर उठिते अछि।

भेटते लोचन दासकेँ पुछलैयन-

“की हाल-चाल, महात्माजी?”

---

[7] काजक तबाही

ओना, अखन तक ‘महात्माजी’क प्रयोग लोचन दासक संग नइ करै छेलौं, उमेरोक हिसाबसँ आ सामाजिक हिसाबसँ सेहो लोचने दास कहैत आबि रहल छेलिऐन। महात्माजी कहलासँ लोचन दासक मन चौंकलैन मुदा पानिमे उठल ज्वार जकाँ धीरे-धीरे असथिर सेहो हुअ लगलैन। तेकर कारण भेल जे हमरासँ पहिने, माने सम्मेलने दिनसँ बहरबैयो महात्मा सभ लोचन दासकेँ महात्मेजीक नाओंसँ सम्बोधन करै छेलैन। आ गामो-समाजक लोक सेहो सएह कहै छेलैन। जही धारामे हम महात्माजी कहने छेलिऐन तही धारक पानिमे लोचन दासक मन मिलि विलीन भऽ गेलैन, जहिना समुद्रमे उठल ज्वार विलीन भऽ जाइए।

लोचन दास बजला-

“अपना नजरिये बुझि पड़ैए जे सभ ठीके-ठाक अछि। तखन तँ यज्ञेँ छल, हजारो रंगक काजक विहीत छेलैहे, तँए दोग-दागमे कोनो छुटि गेल हुअए सेहो भइये सकैए।”

लोचन दासक विचारमे सेहो सुधार भेल बुझि पड़ल। सुधरबे ने जीवनक सभ किछु छी। जेना-जेना अन्हार ससरैत जाइए तेना-तेना इजोत सेहो जिनगीमे पसरैत जाइते अछि। अन्हारसँ इजोत दिस अपनाकेँ सुधारैत बढ़ाएबे ने जिनगी भेल...। बजलौं-

“आब यज्ञक काजसँ तँ निवृत भऽ गेल हएब किने?”

लोचन दासक मन उधियाएल रहबे करैन, तँए भँसियाइत बजला-

“की निवृत्ति हएब! जखन मायामे पड़ले छी तखन निवृत्तिक कोन बात। जानियेँ कऽ ते सभ भगवानेक माया छी। जाबे ओ रहता ताबे मायाक अन्त थोड़े हएत। जहिना ज्ञानक संग अज्ञान तहिना कायाक संग मायो ने सटले अछि। एकटासँ छुटब दोसर पकड़त,

तखन तँ जोगो माया हुनके छिऐन। वएह पकड़ए चाहै छी से पकड़मे अबिते ने अछि।”

लोचन दासक चढ़ैत विचारकेँ आगूए-सँ घेरि बजलौं-

“बाहरक महात्मा सभ खुशीसँ गेला किने?”

‘बाहरक महात्मा’ सुनि लोचन दास बजला-

“बाहरक महात्मा तँ एते खुशी भेला जे संगे-संग चलैले कहै छला, दोसर-तेसर जगह सेहो सम्मेलन सभ छी। मुदा अखुनका समयमे गामसँ निकलैबला हम थोड़े छी। जहिना एते नमहर सम्मेलन पसरल तहिना ने ओकरा उसारैमे किछु समय लगबे करत।”

लोचन दासक मनमे जे छेलैन से बुझबे ने केलौं, तँए बजा गेल-

“से की?”

लोचन दास बजला- “अखनो तक गामकेँ नइ चिन्है छिऐ?”

‘गामकेँ नइ चिन्है छिऐ’ सुनिते मनमे भारी धक्का लगल। धक्का ई लगल जे जइ गाममे जनैम कऽ अधवेशू भेलौं, तइ गामकेँ नइ चिन्है छिऐ। कहू जे एहनो होइ जे हमर कोन बात जे सात पुस्तसँ जइ गाममे रहैत आबि रहलौं हेन, तइ गामकेँ अखनो धरि नहि चीन्ह पेलौं। मुदा पैछलो पुस्तक कियो चिन्हलैन आकि नइ चिन्हलैन। जँ चिन्ह पौने रहितैथ ते एक-दोसरकेँ चेतौने रहितथिन किने जे आँखिये-मुहेँ बढ़ैत हमरो लग तक आबि गेल रहैत। फेर भेल अनेरे जे मनकेँ एते औंटै-पौड़ै छी से बेकार। किए ने लोचने दाससँ पुछि लिऐन जे केना नइ गामकेँ चिन्ह सकलौं।

पुछलयैन- “से की यौ लोचन दास?”

लोचन दास बजला- “केते गाममे एहेन होइए जे नवका-

नवका कम्पनी सभ गाममे टेन्ट-समेना पसाइर बड़का-बड़का करतब करए अबैए आ गामक लोककेँ ठकि-फुसिया हाथ मारि भागि जाइए।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“से ते सदिकाल अखबार-रेडियोमे सुनिते रहै छी।”

लोचन दासकेँ जेना सह भेटलैन तहिना अपनाकेँ सहियारैत बजला-

“लगले सन्त सम्मेलन समाप्त भेल अछि। गाममे महायज्ञ भेल, केते रंगक काज भेल, जइमे किनकर की आएल छैन वा किनकर की देनी-लेनी अछि से जँ नीक जकाँ नइ फरिछा लेब आ जँ तइ बिच्चेमे गाम छोड़ि देब तखन तँ अनेरे ने बकियौताबला सभ बजता जे फल्लाँ एक-नम्बर ठक अछि।”

‘ठक’ तँ बुझल अछि, माने ठकैबलाकेँ लोक ‘ठक’ कहैए मुदा ‘एक नम्बर ठक’ की भेल से बुझबे ने केलौं। बजलौं-

“महात्माजी, ठको एक नम्बर आ दू नम्बर होइए! ठक तँ सहजे ठक भेल, ओइमे एक-नम्बर-दू-नम्बर माने शुद्ध-अशुद्ध की भेल?”

नव जागरण एने जहिना नव-नव अनेको रंगक जागरण हुअ लगैए तहिना लोचन दासकेँ सेहो भेलैन। ओना, लोचन दास गाम-घरसँ बहुत पहिनेसँ बहराए लगल छला। माने अट्ठाइस सालक सम्मेलनसँ पहिनहिसँ बाहर आएब-जाएब शुरू केने छैथ। मुदा ऐ सालक सम्मेलनमे एकटा नव जागरण एलैन। ओ ई जे कबीर सम्प्रदायक सम्मेलनक मंचपर लोचन दास सोल्होअना अपन मातृभाषा माने मैथिलीक प्रयोग केलैन। जे सुनलो छल आ बुझलो छल। लोचन दासकेँ बुझैमे आबि गेल छेलैन जे कबीर दास

सधुक्कड़ी भाषा–माने साधल भाषा–क प्रयोग अपन भजन-कीर्तनक संग रचनोमे केने छैथ। हजारी बाबू[8] सन ज्योतिषी कबीरकेँ भाषाक तानाशाह कहने छैन। तँए ओइ गम्भीर रहस्यकेँ जाधैर अपन मातृभाषामे मातृवत बाल-बोधकेँ नइ सिखौल जाएत ताधैर शब्द-जालमे लोक फँसल रहि जाएत किने, तँए...। ओना, अखन धरि माने पैछला यज्ञ धरि, लोचनो दास ओही अष्टधातुक भाषामे बजैत आबि रहल छला आ अहू बेर सम्मेलनमे बहरबैया महात्मा सभ ओही धारमे डुमकी लगेबे केलैन।

ठकक ठकपनक चर्च करैत लोचन दास बजला-

"एक नम्बर ठक भेल जे एक नम्बर काजक (यज्ञक) बीच ठकैए आ दू नम्बर भेल जे ओइसँ भिन्न अछि, माने जे झूस-झास काज रहल ओइमे ठकैए।"

ओना, मनमे उठल जे लोचन दासकेँ एक-नम्बर–दू-नम्बर काज सभकेँ बिलगा कऽ पुछि लिऐन मुदा ओहो काजमे रहैथ तँए औगुताएल रहैथ आ अपनो काजमे रहने औगुताएले रही। मुदा जँ समुद्र स्नान कएल लोक रस्तामे भेट जाथि आ हुनकासँ टोको-चाली नइ करी सेहो केहेन होएत, तँए लोचन दासकेँ टोकने छेलिऐन।

काजकेँ छिपियबैत बजलौं-

"अपन मन खुशी भेल किने लोचन दास?"

बेरागी जकाँ लोचन दास बजला-

"दुनियोँ कि चुमक-लोहसँ कम अछि। जेते दुनियाँकेँ छोड़बै ओते दुनियाँ पकड़त। जहिना चुमक-लोह साधारण लोहमे कखनो मुड़ी दिससँ सटि जाइए तँ कखनो नाङ्गैर दिससँ तँ कखनो पएर

[8] डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

दिससँ, तहिना ने दुनियोँक आकर्षण छीहे।”

लोचन दासक विचारमे ओतेक रस नइ भेटल जेतेक हुनकर देहक चुलबुली रहैन। तँए मन मधुआ गेबे कएल। मुस्की दैत बजलौं-

“से की यौ लोचन गोंसाइ?”

अपन मनक किछु समस्या लोचन दासक छुटलैन तँ किछु समस्याक फँसरी लगि गेलैन। से फँसलैन शारीरिक रूपसँ सेहो आ मानसिक रूपसँ सेहो। मुदा लोको-लाज तँ आँखिक पानि उतारिते अछि। केना लोचन दास बजता जे अखन धरिक अपन शारीरिक क्रिया जे रहल अछि, ओइमे सँ अदहासँ बेसी बदलैक समस्या अछि। तहिना अष्टधातुक जे भाषा बजै छी तेकरो एकधातुक बनबए पड़त। नहि तँ जिनगी ओझरा जाएत व्याकरणक धातुए-पाठमे। मुदा गामोमे तँ टोले-टोल भनडारोमे यएह अष्टधातुक भाषाक प्रयोग करैत आबि रहल छी। अपन मातृभाषा, माइक सदृश वाणी छी जे पानिमे पाथर जनमा मनुक्खक निर्माण करै छैथ, मुदा बच्चोक लेल तँ वएह ने भेली जे बच्चा बुझि नहि पबैए। मुदा गामो तँ गाम छी, लगले लोचन दासकेँ अपन भाषामे बजिते कहतैन- भुसकौल महात्मा छैथ। तँए भुसकौलसँ तेज महात्मा बनैक बाट लोचन दासकेँ धड़ए पड़तैन, से बुझिये ने पेब रहल छला, मन उड़ल-उड़ल जकाँ भइये गेल छैन। लोचन दासक मन उड़ैक कारण भेल छेलैन जे जेते-दूरक अपन कर्मभूमि बुझि कर्म कऽ रहल छी ओइमे भाषाक रूप बदलब। ओना, ई भाषाक रूप बदलब नइ भेल। किएक तँ विषयक गम्भीर रसक अनुशीलन करबाक सभसँ नीक भाषा भेल मातृभाषा। मातृभाषाक माने एतबे नइ भेल जे मुँहक बोली छी। ओकर माने ईहो भेल जे मातृभाषाक मातृभूमि सेहो अछि जइमे वस्तुगत सेहो आ वस्तुक रस-रहस्यगत सेहो अछिए। जइसँ सहजे दुनूक बोध होइए।

तँए मातृभाषा मातृवत् होइते अछि। अही बीचमे लोचन दास, अमतीक काँटक झौंखरी जकाँ झँखुरीमे ओझरा गेल छला, जे कनी-मनी अपना आभास जकाँ बुझि पड़ल। तँए तोष-भरोस दैत बजलौं-

"लोचन गोंसाइ, जिनगीए-कैँ तँ लोक संघर्ष कहैए। से की कोनो ओहिना कहैए, जखने कियो अपन विवेकी बीआकेँ विचारक खेतमे रोपि ओकरा गाछकेँ तामि-कोरि, पटबए-सींचए लगैए आकि रंग-बिरंगक कीड़ियो-मकौड़ी आ रौदो-बसात ओकरा नष्ट करै पाछू लगि जाइ छइ। तँए, जँ रोपनिहार हारि मानि लिअए तँ वएह ने भेल रणभूमिसँ भागब।"

अपना विचारे बाजल छेलौं जे यएह विचार–माने अप्पन बुझल विचार–लोचन गोंसाइ सेहो बुझता मुदा से भेल नहि। लोचन गोंसाइक मनमे रणभूमि चढ़ल रणी जकाँ अपन संकल्पक दृढ़ता जगि चुकल छेलैन तँए ओइ दृढ़ताकेँ अगुअबैत बजला- "भाय साहैब, बिनु संकल्पक मनुक्ख ओहने जेहेन बिनु फूलक वा फलक लहटगर गाछ होइत अछि, तँए...।"

'तँए' कहि लोचन गोंसाइ ठमैक गेला। मुहसँ निकालैक क्रममे एकाएक रूकि जाएब एकर जरूर किछु कारण भइये सकैए। पुछलयैन- "तँए कहि किए रूकि गेलौं?"

लोचन गोंसाइ अपन बेवसी देखबैत बजला-

"भाय साहैब, केतेक दिन एहेन अपनो मनमे भेल अछि जे बाजि कऽ केकरो किछु गछलिऐ आ पूरा नइ पेलिऐ। लोकक तँ कथे कोन जे नगरक दशमीक डगरक ढोल जकाँ ढनढना जाइए आ करनी-धरनी किछु रहबे ने करै छइ।"

सएह अपनो 'अपनो' कहि लोचन दास अपन संकल्पि विचारकेँ मनेमे रखि मुँह बन्न कऽ लेलैन। मनमे भेल जे भरिसक

कोनो एहेन काज मनमे जरूर छैन जेकर भारीपन देखि घबरा रहल छैथ। तैसंग अपना मनमे ईहो भेल जे जाबे कियो अपन विचारकेँ दोसरा-आगू प्रकट नइ करत ताबे काजक रूप मनमे बदलियो सकैए। बदलैक अनेको रंगक परिवेशो सभ अछिए। तँए कोनो संकल्पित विचार ताधैर मूर्त रूपमे नइ उठैए जाधैर दोसराक आगू ओइ मूर्तिक क्रिया-कलापक रूप प्रकट नहि होइए। माने भेल, कोनो विचारकेँ बेवहारिक रूप बनबैमे ओकर रूपकेँ नीक जकाँ सजबैक प्रक्रियाक विचारक अदान-प्रदान करैत एक सीमा निर्धारण करब...।

बजलौं- “लोचन गोसाँइ, एना जँ सिदहाक चाउरकेँ मुड़ी-छोपा तम्मासँ नपबै तखन ते परिवारमे केते लोक अधपेटे रहि जाएत।”

जहिना मीठो दबाइ भारी रोगकेँ असानीसँ भगाइये दइए, तहिना ने मीठ वाणियो छी, मुदा ओकर निशान धनुषपर ठीकसँ बैइसै। से भेल, भेल ई जे लोचन गोंसाइ ब्रह्मचारी जकाँ बजला-

“भाय साहैब, ऐ बेर सम्मेलनसँ पहिने मनमे रोपि नेने छेलौं जे भनडारा-सँ-मंच धरि अपन मातृभाषा- मैथलीमे बाजब, से केलौं।”

लोचन गोसाँइक विचार सुनि मनमे खुशी भेल। बजलौं-

“ई तँ घीबोसँ चिक्कन काज केलौं!”

‘घीसँ चिक्कन’ सुनि लोचन गोसाँइक उत्साह जेना दोबर रूपमे जगलैन। केना नइ जगितैन, जँ कोनो एहेन अकाट विचार जिनगीमे अकाट काजक रूप बेवहारमे अबैए ते यएह ने भेल बेवहारिक जीवन...। लोचन गोसाँइ बजला-

“सन्त सम्मेलनक अन्तिम दिनक घड़ीमे मंचपर अपन संकल्पित विचारकेँ उद्घोषित करैत बजलौं- आइ एकतीस मार्चक संग गामक ऐ सालक अन्तिम उत्सव सेहो छी। आइ दिनसँ घर हुअए कि बाहर, अपन मातृभाषा- मैथिलीमे अपन विचार व्यक्त करब।”

लोचन गोसाँइक संकल्पित विचार सुनि मन मुस्कियाए लगल। मुस्कियाइते कहलयैन- “लोचन गोसाँइ, अनेरे जे आइ मोटका रस्सासँ अपन विचारकेँ बन्हलौं से जँ शुरूहेसँ पतरको डोरीमे बन्हैत आएल रहितौं ते आइ एहेन रस्साक जरूरत थोड़े पड़ैत।”

लोचन गोसाँइक आत्मबलक संग आत्मज्ञान सेहो छिटैक चुकल छेलैन। बजला- “जहिना जिनगीक पाछू जीआलसँ मरने धार तक अछि तहिना ने आगूओ अछि, मुदा जखन लंगोटा धारण कऽ लेलौं तखन डुमी आकि मरी तेकर कोनो परवाह नहि, जे हेतइ से देखल जेतइ।”

लोचन गोसाँइक चपचपी देखि अपनो मन चपचपा उठल। बजलौं- “लोचन गोसाँइ! अपनो ते पैछला जिनगीक किछु अनुभव करैत हेबइ?”

प्रशान्त चित्त लोचन गोसाँइ बजला- “भाय साहैब! असलमे हम अपने घरमे हेरा गेल छेलौं..!”

मनमे उठल- जखन अपने घरमे हेरा जाएब तखन रहब केतए! केतौ जँ रहबो करब तँ ओ हेराएले रहब किने! फेर मनमे उठल- एना उट-पटाँग बात लोचन दास बजला किए? पुछलयैन-

“से की?”

लोचन गोसाँइ बजला- “भाय साहैब, अपना मनमे होइ छेलए जे हमरा मैथली बजैक-लिखैक लूरि नइ अछि। तँए, हहैर कऽ हेरा गेल छेलौं।”



शब्द संख्या : 2814, तिथि : 10 अप्रैल 2018

गेल माघ उन्नतीस दिन बाँकी

बन्धुवर हम सभ ओही मिथिलाक बासी छी जे अपन कोखिसँ ओहेन मनुक्ख पैदा करैत आएल छैथ जे अपन सुधिसँ समाजक प्रवर सुधिमे स्पृक्त होइत रहला अछि। एहेन सुभावक बीज-बपन मिथिला सभ दिन करैत आबि रहल अछि आ आगूओ करैत रहत। एहेन-एहेन सुधिजन सभ कालखण्डमे होइत रहला अछि जे सीमामे बँटल गाम समाजक बीच टहैल-टहैल परिवारक संग आगत-भगतक सुधि रखिते आबि रहल छैथ। ओना, समाजक बीच रंग-बिरंगक कुधार सेहो सभ दिन पनपैत रहल अछि आ अखनो पनैप रहल अछि, जेकर अनेको कारण–दैवीसँ मानवीय धरि–रहल अछि। मानवीय भेल हजारो बरख परतंत्र रहब। ओना, परतंत्रता सबहक नजैरमे आबियो ने रहल छैन, तेकरो अनेको कारण अछि। बाहरी शासकक बीच रहने, मिथिलांचलक जे जन्मजात सामाजिक सरोकार रहल ओइमे रंग-बिरंगक विघटन होइत रहल। जे परतंत्र बेवस्थाक सोभाविक गुण होइ छइ। दोसर भेल, दैवी विघटन। अनेको धार-धुरक बीच बसल मिथिलाक भूमि अछिए। धारो तँ धार छी, जहिना नीक लोहाक चक्कू सुपारीक संग हाथक ओंगरियो काटि दइए मुदा भतलोहक चक्कू बुते हाथक ओंगरीक कोन गप जे धारपर चढ़ला पछातियो सुपारी छिछैल कऽ कुदि उड़ैए। तहिना ने भूमिमे बहैत धारो अछि। ओहूमे कोनो-कोनो धार पनिबहो अछि आ कोनो-कोनो पनिबाहाक संग अगिवाहो अछिए। भाय, धार छहक!

तोरो बसैले तँ भूमि चाहबे करी, सएह ने। ई की भेल जे जहिना कोसी तहिना कमला गामक गामकेँ काटि-खोटि-उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ अपना पेटमे समा लइए आ मधुमाछीक ठीक विपरीत- पाछूसँ बलुअबैत अबैए..! मधुमाछी भलेँ फूलक रस चुसैए मुदा ओ मधु ने उत्सर्जित करैए। ओना, सभ धार ओहने अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। बागमती, तिलजुगा अपन हजारो बर्खसँ ओही घर-घाराड़ीकेँ धेने आबियो रहल अछि आ अपन जलधाराकेँ सेहो बरकरार रखने अछि।

तैसंग, मौसमक चाल-चूल सेहो कम अछि से केना नै कहल जाएत। अपना सबहक सौभाग्य बुझू आकि दुर्भाग्य, समुद्रसँ बहुत हटल छी। हवा-बिहाड़िक करामाती तँ समुद्रो छीहे किने। मिथिलांचलक चौहद्दीमे जहिना पच्छिमसँ बलुआह इलाका भरल अछि तहिना पूबसँ सेहो जंगल-झाड़ आ पहाड़क इलाका अछिए। खाली दच्छिनक जे समुद्र अछि ओ ओतेक दूरपर अछि जे अपना सभ दिस अबैत-अबैत ओकर पाबरे ढील भऽ जाइ छइ। रहल पूबसँ, कोणा-कोणी– तँ से जरूर थोड़ेक प्रभावी अछि। तैसंग हजारो किलो मीटर हटल सेहो अछिए। जेकरा बंगालक खाड़ी कहै छिऐ ओइसँ उठल जे हवा-बिहाड़ि आकि पानि-पाथर रहल, ओकरा अपना सभ दिस अबैत-अबैत अदहोसँ बेसी शक्ति क्षीण भऽ जाइ छइ। जँ से नइ क्षीण होइ छै तँ किए असाममे अपना सभसँ दस गुणोसँ बेसी बरखा होइए आ अपना सभकेँ ओकर दशांसोसँ कम होइए। जँ ओते होइत तँ आम नइ खइतौं सएह ने। किएक तँ ओमहुरका आममे पकैसँ पहिने पीलुआ पकैड़ लइए, मुदा नारियल आ सुपारीक धनीक तँ हेबे करितौं। जखने सुपारी जोड़ पकड़ैत तखने ने पानमे सस्ती अबैत। अपना सभकेँ आरो चाही की, भरि मुँह पान भेल, जिनगी पानिसँ भरि गेल! खाएर जे भेल, अपन-अपन तकदीर की मनुक्खेटा

केँ होइ छै आकि माटियो-पानिकेँ होइते छइ...।

मौनसुनक हिसाबसँ जहिना अपना सबहक माटिमे बारहो मास सृजन शक्ति रहै छै तहिना जँ समुचित ढंगसँ ओकरा बेवस्थित कएल जाए तँ सचमुच मिथिलाक माटि-पानिमे ओहन उर्वर शक्ति अछिए जे सोनोसँ सोनम वस्तु पैदा करत। पूबसँ अबैत मौनसुनी बरखा अपना ऐठाम मध्यम श्रेणीक भऽ जाइए, जेना-जेना पच्छिम जाइए तेना-तेना निम्न होइत जाइए आ उत्तर प्रदेश टपैत-टपैत ओहो मेटा जाइए, जइसँ पच्छिमक राज्य–पंजाब, राजस्थान–बरखा विहीन राज्य भऽ जाइए। उत्तरसँ मिथिलांचलक कोन बात जे सौंसे देशेक सीमा कश्मीरसँ अरूणाचल प्रदेश तक पहाड़-जंगलसँ तेना घेराएल अछि जे उत्तरवरिया कोनो आफत-असमानीक संभावनो ने अछि।

ऊपरक जे किछु भेल ओकरा ऊपरे-ऊपर बुझू, किए तँ ओ भेल देश-दुनियाँक जे आड़ि-धुर अछि से, मुदा मिथिलांचलक जे अप्पन आड़ि-धुर अछि ओ मिथिलावासी छोड़ि दोसर बुझियो केना पौत। हँ! ई जरूर भऽ सकैए जे मिथिलाकेँ जानै-चिन्हैले मिथिलामे बास करए पड़त। बिना से केने जँ मने-मन मनकेँ मनाइयो लेब तैयो चुकबे करत। किएक तँ मिथिला की कोनो माटिये-पानिटा मे अछि आकि मनुक्खसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ, माल-जाल आ चिड़ै-चुनमुनी तकमे। आ सेहो की कोनो इग्गी-दुग्गी अछि से नहि, अकास-सँ-पताल धरिमे पसरल अछि। जँ से नहि, तखन किए लोक बजैए जे 'मिथिलांचलक पतलिया पानि पतलिया मनुक्खक मनपोसक छी।' चिड़ैयो-चुनमुनीमे देखिते छी जे एक दिस जहिना सुग्गा वेद-पाठ करैए तँ दोसर दिस टेंटियाहा सुग्गा टाँइ-टाँइ करैत लोकक सुर्जमुखी-फूल उपटबैए। एकरा केना नकारल जाएत। ओना, मानै छी जे कागभुशुण्डी सन महाज्ञानी कौओ अछि, मुदा कारकौआ

उपैट रहल अछि, सुड्डाह भऽ रहल अछि, की एकरा नकाइर सकब? कोसी-धारक पानि भलेँ देखबोमे सौन्दर्ययुक्त आ पीबैमे सेहो पोखरिआनि नहि हुअए, मुदा तँए कि कमलो पानिकेँ सएह कहबै? एक तँ पाँकसँ पँकियाएल पानि, तैपर गाबिस उस्सर माटि तेना ने अपनामे घोरि लइए जे देखिते मन मानि जाएत जे ई उसराह-नोनछराह सुआदक हेबे करत, भलेँ जखन कण्ठ सुखि कऽ प्राण उत्सर्जन करए लगए, तखन ओकरा पकैड़ कऽ रखै-खातिर एक-आध घोँट ओहो पानि घोंटि लेब आवश्यक भइये जाइए, नहि तँ जेतेक परहेज हुअए ओतेक नीक। खाएर जे अछि, ओ धार-धुर आ सुग्गा-कौआ जानए, मुदा अपना सभ तँ अपन-सभ ने भेलिऐ, तँए अपनैतीक विचार तँ करए पड़त किने। गतिक हिसाबसँ अपना ऐठाम[9] तीन रंगक मौसमक स्पष्ट रूप देखैमे अबैए। ओ भेल, जाड़, गरमी आ बरसात। ऐ तीनू मौसमक बीच चारि-चारि मास अछि। ओ चारू मास चारि रंगक, क्रियाक अनुसारे भइये जाइए। जेना, जाड़सँ गरमी धबैमे रसे-रसे जाड़ पाछू हटैत जाइए आ गरमी धबैत जाइए, जे बढ़ैत-बढ़ैत अपन प्रचण्ड रूप धारण करैए। तहिना जाड़ो-बरसातक अछिए। ओना, अपना ऐठाम जहिना छह रीतुक चर्च अछि तहिना छह शास्त्रोक[10] तँ अछिए। मुदा तीन मौसमकेँ छह रीतुमे बन्हनौं तँ बेवधान रहिते अछि। किसानी जिनगीमे अन्नसँ लऽ कऽ फूल-फल तक आहार रहल अछि। मुदा ओकर जे क्रियागत जीवन अछि ओहो तँ अपन अछिए। किछु अन्नो आ फूलो-फल कम दिनक अछि माने कम दिनक फसिल, ओ तँ एक रीतु पकैड़ लेत मुदा जे चारि मास वा ओहूसँ बेसी दिनक अछि, ओ केना पकड़त। तँए, ऐठाम हरि अनन्त हरि कथा अनन्ताक स्थिति अछिए। ओना,

[9] मिथिलांचलमे

[10] दर्शनोक

एक दिन-राति मिला चौबीस घन्टामे बारह रंगक एक-रंगाह मौसम बुझि पड़ैए मुदा ओहू दू घन्टामे दू रंग नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। तहिना ओहू एक घन्टाक साठि मिनटमे साठि रंगक नहि अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। जखन एक-एक मिनटक अपन अलग अस्तित्व रखने अछि तखन मिनटक भीतर साठि पलक किए ने हएत। मुदा से सभ नहि। दुनियाँक बीच जे अपना सभ बेछप छी, तेकर मूल कारणमे ईहो एकटा प्रवल कारण रहल अछिए। जैठाम एकरंग मौसम–एक गतिक मौसम–सालक विशेष अंशमे रहत तैठामक आ जैठाम दू-रंग, तीन-रंगक मौसम रहत तैठामक जिनगीमे अन्तर एबे करत। जखने जिनगीमे अन्तर औत तखने ओकर जिनगीक सभ क्रियामे अन्तर एबे करत।

दुनियाँक अधिकांश देश अही एक-रंग, दू रंगक मौसमक बीच अछि। मुदा मिथिलामे तीन रंगक मौसम अपन उग्रसँ उग्रतर रूप देखबैत रहल अछि। जे तीनू- शीतलहरी, लू आ बाढ़िक रूपमे विद्यमान अछि।

एक दिन माघ बीत गेल। संयोग ऐ सालक एहेन रहल जे पूसक पूर्णिमो आ सकराँतियो परसू एके दिन भेल। जइसँ बकेन महींस जकाँ लगैमे मास कबैया-ड्योढ़ नइ भेल। कबैया-ड्योढ़क माने ई जे कहियो-कहियो जहिना महींसक लगैक[11] समय अनिश्चित भऽ जाइए तहिना पूर्णिमो-सकराँतियोकेँ दू दिन भेने मासोक गति-विधि कबैया-ड्योढ़ भइये जाइए। से ऐ साल नइ भेल, एके दिन पूर्णिमोक हिसाबसँ आ सकराँतियोक हिसाबसँ पूसक अन्त भेल। जखने एके दिन पूसक अन्त भेल तखने माघक शुरूआत सेहो एके-दिन ने हएत, सएह भेल। करीब चारि बजे बेरुका समय, जखन

[11] दूध दुहैक

टहलै-बुलैले निकलए लगलौं कि धक्-दे मास मोन पड़ल जे आइ माघक एक दिन बीत गेल, उन्नतीस दिन बीतैले बाँकी अछि। जहिना माघक पाला, तहिना जेठक रौद आ भदवारिक बाढ़ि सेहो जनमारा छीहे..! तहूमे बुढ़-बुढ़ानुस आ बाल-बोधक लेल तँ सोलहन्नी दुर्काल..!

मने-मन गाम-समाजक हिसाब मिलबए लगलौं। पाँच साए घरक बस्तीमे आँगुरपर गनल सातटा ओहन बुढ़-बुढ़ानुस छैथ जे अस्सी बरख पार कऽ चुकल छैथ। बाँकी लोक ओकर निच्चे छैथ। तँए हुनका सबहक खोजे-खबैर लेब ने मनुक्खक मनुखता भेल। खोज-खबैर लेबक माने भेल जे अबैबला दुर्कालमे हुनका सबहक की स्थिति हेतैन आ अखन की छैन। ओना, बालो-बोधक संग एहने परिस्थिति अछि, मुदा बाल-बोधकेँ तँ माइयक आश्रय भेटैए, तँए जँ एकक एक आश्रयदाता भऽ गेल तँ ओ ओहेन समस्या नइ भेल, जेहेन बिनु आश्रयदाताक आश्रितक भेल। तहूमे समय एहेन आबिये गेल अछि जे परिवारमे बुढ़े-बुढ़ानुस परिवारक गाड़ाक घेघ बनि जाइ छैथ, जइसँ परिवारजनक मनक बीच एहेन विचार जनमिये जाइए जे कखन ई घेघ[12] हटत जे पिण्ड छुटत।

दुनियाँमे जीवनक लेल कोनो बाधा अछि तँ ओ अछि बुढ़ माता-पिताकेँ जीवित रहब। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहअ। समाजमे जखन जन्म नेने छी तखन समाजक दायित्व अपना ऊपर नइ अछि सेहो केना नकारल जा सकैए। तहूमे हम सभ मैथिल छी। बाल-बोध भलेँ किछु कहि दिअए, मुदा जिनगीक आधार वेद छी आ वैदिक पद्धतिये ने अपना सबहक जिनगीक क्रियाक प्रक्रिया भेल, ई बुझैत केना बिसैर जाएब।

---

[12] बुढ़-बुढ़ानुस

चाह पीब, पान खा कऽ चद्दैर ओढ़ि गाम-समाज दिस विदा होइसँ पहिने पत्नीकेँ कहलयैन-

“गामे दिस जा रहल छी, तँए अबैक ठेकान निसचित नहियेँ अछि, अहाँ सभ किछु देखैत-सुनैत रहब।”

पत्नीक मनमे की शंका भेलैन से तँ ओ जानैथ मुदा बजली किछु ने। तइसँ अपना मनमे भेल जे भरिसक माघक जाड़ असगर काटब हिनका भारी बुझि पड़ि रहल छैन, तँए थकथका रहली अछि। नजैर उठा-उठा नखो-शिखक झाँकी देखए लगलौं आ शिखो-नखक। मुदा मनमे समाजक अस्सी बर्खसँ ऊपरक बुढ़-बुढ़ानुसक जिनगी नाचिये रहल छल, तँए पत्नीक लटारम ओहन मने ने बनए दिअ चाहै छल जे हुनकर लाड़-झाड़क पाछू लगितौं। ओना, मनमे ईहो भेल जे भरिसक पत्नी चुपचाप आदेशक आशा ताकि रहली अछि..! तँए, विचारकेँ समेटैत बजलौं-

“ओना तँ गाममे साते गोरे अस्सी बर्खसँ ऊपरक छैथ, मुदा अखन पहिने रूपनी दादीसँ भेँट करब। किएक तँ ओ सभसँ बुढ़, करीब नबे बर्खक छैथ। ओना, अपनो परियास करब जे खाइ-पीबै राति धरि घुमिये जाएब, मुदा दुइयो-चारि घन्टा रूपनी दादीक संग नइ बिताएब सेहो केहेन हएत।”

पत्नीक मन सेहो एकाएक जेना पघिल गेलैन तहिना बजली-

“हमरा दिससँ दादीकेँ कहबैन जे सतरहटा एकादशी आ उनैसटा भादवक रबि केने छी, तइमे सँ पाँचटा एकादशी आ चारिटा रबि हम हुनका चढ़बै छिऐन, तँए नअ बरख आरो औरदाक गारंटी तँ भइये जेतैन।”

पत्नीक मुँह-मिलानी करैत बजलौं-

“कालिदासक मेघदूतसँ की हम कम छी जे अहाँक धर्मक बाट

रोकब। पहिल वाणी अहींक समाद रहत। कुशल-छेमक पछाइत अपन विचारक गप-सप्प करब, मुदा तइ सभसँ पहिने अहींक अर्जी पेश कऽ देब।”

पत्नीक मन मुस्किया लगलैन, मुदा अपना शंका भऽ गेल जे पत्नी मजाक ने बुझि गेली। पत्नीक संग हँसी-मजाक आन जकाँ नहियेँ होइए, मुदा नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। ओना, हँसी-चौल सम-सम्बन्धीक बेवहार भेल मुदा आनो संग तँ लोक करिते छैथ। पत्नी चुपे रहली तइसँ बुझि पड़ल जे आदेशक स्वीकृति भेट गेल। विदा भेलौं।

जेठुआ[13] छह बजेक सुर्जक अकबाल जे रहैए तइसँ बहुत कम अकबाल चारि बजे माघक सुर्जक भइये गेल छेलैन। सोल्होअना डुमल नइ छला, मुदा डुमलेक स्थिति बुझि पड़ै छल। अपना घरसँ करीब बीस बीघा हटल रूपनी दादीक घर छैन। तँए, जाइमे बेसी देरी नइ लगल।

रूपनी दादीक सम्पन्न परिवार छैन। ओना, पति मरि चुकल छैन मुदा दूटा जहिना समकस बेटा छैन तहिना दुनू पुतोहुओ छैन्हे। पोता-पोती, नाति-नातिनसँ सेहो परिवार सम्पन्न छैन्हे, तँए मनुक्खक दुख रूपनी दादीकेँ नहियेँ छैन। मनुक्खक दुख भेल- परिवारमे मनुक्खक घटबी। मनुक्खक घटबी नइ रहने आकि अपन जिनगीक निवृति क्रिया-कर्म[14] रहने मन खुशी छैन की नहि, से तँ रूपनीए दादी जनती मुदा दरबज्जापर पहुँचला पछाइत देखलौं जे माघ रहितो देह-हाथ मारि परिवारक कियो बैसल नहि छैथ, सभ अपन-अपन दिनक अन्तिम काजकेँ सम्हारि कऽ उसारैमे लगल छैथ आ

[13] जेठ मासक

[14] जीबैक विधि-बेवहार

घूर पजारि रूपनी दादी कलपर हाथ-पएर धोइ छेली।

जखने सरकारी बान्हसँ उतैर रूपनी दादीक दरबज्जाक रस्तापर एलौं कि कलेपर सँ रूपनी दादी बजली-

“बौआ मोहन! ताबे घूर लग बैसह, हाथ-पएर धोने अबै छी।”

लहरैत घूर देखि अपन मन चपचपा गेल। जहिना पियासल बेकतीक आगूमे पानि अबिते आकि भूखल बेकतीक आगूमे भोजन अबिते, चाहे जिज्ञासु बेकतीक आगूमे ज्ञान अबिते मन चपचपा जाइए तहिना अपनो मन चपचपाएल। घूर लग चारू भाग पुआरक बीरबा पसारल। चारि आँगुर खड़ाइ आ बीत भरिक लम्बाइ-चौड़ाइक बीरबा सभ छल। एकटा बीरबापर बैसलौं। ओना, मनमे ईहो छल जे दादी दहिना भाग बैसैथ आ अपने बामा भाग बैसब। मुदा से हिसाब मिलल नहि, किएक तँ घूरक चारूकात बीरबा पसरल छेलइ आ असगरे बैसनिहार रही। सभ दहिने भेल आ सबहक-सभ बामे भेल। एकटा बीरबापर बैस सेरिया कऽ जखन घूर दिस हाथ बढ़ेलौं कि रूपनी दादी सेहो पहुँचली। पहुँचते जेना बुझि गेली तहिना बीरबापर बैसते दादी बजली-

“आन सालसँ ऐबेरक समय नीक अछि।”

ओना, ऐठाम आएले छी कुशल-छेम बुझैले, तैपर रूपनी दादी नीक समय अपने मुहेँ बजली, तँए नीक भेबे कएल। अपना मनमे विचार छल जे माघ मास भेल जाड़क कड़कड़ौआ जुआन मास। पानियोँ-पाथर बनिते अछि। ओना, आन साल जकाँ शीतलहरियो नहियेँ भेल, मुदा जाड़मे थोड़-थाड़ कमी भलेँ हुअए मुदा जाड़ अपन जवानीक ताल नइ देखा रहल अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। करसी[15]क तेहेन घूर छल जे बुझि पड़ल भरि राति दरबज्जाकेँ गरम

[15] गोबरक सुखाएल गोला।

केने रहत। जखन भूखल लोकक घरमे जँ कनियोँ अन्न रहल तैयो ओते कालक संतोष तँ ओकरा रहिते छै जे एते कालक अभाव नइ अछि। घूर तँ सहजे माघक घूर छी, गाड़ीक एक्सिडेन्ट जहिना सड़कपर होइए तहिना माघक जाड़क सड़कपर एक्सिडेन्ट नइ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। पुरना दम्मोकेँ उखाड़िते अछि आ देहो-हाथकेँ नि:चेष्ट बना जाम करैत निष्क्रीय सेहो बनैबते अछि, जइसँ रंग-रंगक रोगो-वियाधिक सृजन होइत रहैए।

ओना, घरपर सँ नियारि कऽ आएले छी जे रूपनी दादीक हालो-चाल बुझब आ जँ कोनो तरहक असुविधा हेतैन तेकरो निमरजना करब। मुदा से सभ किछु देखमे ऐबे ने कएल। अगुआ कऽ किछु पुछबो केहेन होइए, तँए बेकतीगत रूपमे रूपनी दादीकेँ किछु पुछबकेँ उचित नहि बुझि परिवारेकेँ अगुआ बजलौं-

“दादी, अदहासँ बेसी जाड़क समय निकलिये गेल, मुदा जनमारा जाड़ तँ पछुआएले अछि। बच्चा सभपर नजैर राखब।”

रूपनी दादी बजली-

“से तँ रखनहि छी। आन साल जकाँ ऐ साल शीतलहरियो नहियेँ भेल। ओना, समयक कोनो ठेकान अछि। भाइयो सकैए।”

बजलौं-

“हँ, तँ समयक कोनो ठेकान नहियेँ अछि, शीतलहरी भाइयो सकैए आ नहियोँ भऽ सकैए। ओना, शीतलहरियोक कोनो ठेकान नहियेँ अछि जे केहेन हएत केहेन नहि। लोक तँ अपना जनैत प्रतिकारे करत किने।”

रूपनी दादी बजली-

“ऐ बेरक माघ तँ माघ जकाँ बुझियो ने पड़ैए। केते साल तँ अगहने-पूससँ तेना शीतलहरी लाधि दइ छल जे माघमे घरसँ

निकलबो कठिन भऽ जाइ छल। ओना, तीसो दिनक माघक शीतलहरीसँ बँचैक ओरियान कइये नेने छी।”

दादीक विचार सुनि अपनो मन भँसिया गेल-

“दादी, अहीं सन-सन बुढ़-बुढ़ानुसक दिन पहाड़ जकाँ बनि जाइए।”

‘पहाड़ सन दिन’ सुनि दादीक आत्म-शक्ति जगलैन तहिना मजगूत आत्म बले बजली-

“बौआ मनोहर! एकटा माघकेँ के कहए जे अस्सीक लगभग माघ भोगि चुकल छी। कहियो कोनो रूइयाँ भगन नइ भेल। आब तँ सहजे जीबैक लूरि भऽ गेल। माने माघ कटैक लूरि भऽ गेल। तहूमे एक दिन माघ बीतिये गेल। जहिना एक दिन बीतल, तहिना ने उन्नतीसो दिन, जे बाँकी अछि, सेहो बीतबे करत।”

रूपनी दादीक विचार-शक्ति देखि अपनो विचार सक्कत भेल। बजलौं-

“दादी, घूरक आगि देखि जाइ-के ते मन नइ होइए, मुदा...।”

रूपनी दादी बजली-

“मनोहर, बेर-बिपैतमे मनकेँ सक्कत बना कऽ राखी। दिन-महिना-साल अहिना अबैत रहत आ जाइत रहत। जखन जेहेन समयसँ पाला पड़ए, तखन ओइ पालासँ अपन निमरजना केना हएत, तैपर नजैर राखि अपन जीबैक लूरि बनाबी।”



शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018

बापक चलैत

सरकारी होहामे हमहूँ पुलिसक हाथ चढ़ि गेलौं। 'सरकारी होहा'क माने भेल जे राज्यमे शराब बन्दीक कानूनो बनल आ लागूओ भेल। ओना, बहुतो एहेन कानून बनले अछि जइसँ जनहितकेँ लाभ होएत, मुदा ओइ सभकेँ ठण्ढा वस्तामे रखि देल गेल अछि जइसँ टिभिका लागू भेने असरदार नहियेँक बरबैर अछि। खाएर जे अछि मुदा अन्यायिक प्रति न्यायिक कानूनी बेवस्था नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। से तँ अछिए, भलेँ लाभ जे हौ वा लाभक बदला हानियेँ भऽ जाउ ई दीगर बात भेल।

ओना, शराबक कारोबार अपन बड़ नमहर नहियेँ अछि मुदा तैयो दस-पनरह हजार मासक कमाइ भइये जाइए। अपने बनबै छी आ घरेपर बेचबो करै छी। ने केतौ जाइ-अबैक खगता होइए आ ने वेपारी जकाँ एजेन्टे-एजेंसीक जरूरत पड़ैए। छोट-मोट कारोबार रहने थानामे कमीशन तँ नहि भरए पड़ैए मुदा कहियो काल रोहू माछे आकि मुर्गे-मुर्गी नइ पहुँचाबए पड़ैए सेहो बात नहियेँ अछि। तैसंग जँ थानाक सिपाहीए वा बड़े-बाबू आकि छोटे-बाबू, गाममे प्रवेश करै छैथ तँ चाह-पानक खर्च तँ होइते अछि। ओना, सलामे-मालकीमे काज ससैर जाइते अछि।

अपना विषयमे जखन निचेनमे अपने विचारए लगै छी तँ अपन पेशासँ घृणा होइते अछि, मुदा परिस्थितिये ओहन बनि गेल अछि जे मजबुरी कहियौ कि लाचारी, करए पड़िये रहल अछि।

शुरूमे, जहिया हाइ स्कूलक बोर्ड परीक्षामे फेल केलौं, तहिये पढ़ाइ दिससँ मन भिन-भिना गेल, तँए ने दोहरा कऽ बोर्ड परीक्षा देलौं आ ने आगू पढ़ैक विचारे मनमे रखलौं। संजोग नीक बैसल जे जखन दसमामे पढ़ैत रही तखने बिआहो भऽ गेल। पढ़ल-लिखल लड़िकाक रूपमे बिआह भेल। जँ से नइ भेल रहैत तँ जेना लड़की सभ पढ़ए लगल अछि आ आई-ए-बी.ए. केलाक पछाइत बिआह करए लगल अछि, तेनामे बिआहसँ छँटाइये जइतौं, मुदा से माता-पिताक गुण-धरमे रच्छ रहल।

पढ़ाइ छोड़ला पछाइत नेतागिरी शुरू केलौं। माता-पिता जीबै छला, घर-परिवारक कोनो धनि-फिकिर नहियेँ छल। दस बर्खक अन्तरालमे पाँचटा बेटी भेल। ओना अपना मनमे तहिये, माने दूटा बेटी भेला पछातिये भेल जे समय-साल तेते खराप भऽ गेल अछि जे एकोटा बेटीक बिआह करैमे माता-पिताक मुसरा ढील भइये जाइ छैन, तैठाम दूटा तँ सहजे ओकर दोबर भेल! मुदा से अपन विचार नइ चलल, माता-पिताक विचारक आगू अपन विचारकेँ कण्ठ मोकि बरदास केलौं। ओना, मातो-पिता अपन विचारमे संशोधन कइये नेने छला जे जखने पोता हएत तखने परिवार नियोजन करा देबइ। दोसर-तेसर पोताक आशा, दहेजक आमदनी दुआरे नइ राखब...।

अपनो मनमे भेल जे कुल-खनदान बँचबैले तँ एकोटा बेटाक जरूरत अछिए। अही आशा-बाटीमे पाँचटा बेटी भऽ गेल। मातो-पिता बुढ़ाइये गेला। ओना, साठि बर्खसँ अधिक उमेर नइ भेल छेलैन, मुदा हमरा सन-सन परिवारमे तँ चालिस बर्खक पछातिये लोक घपचालिस हुअ लगैए। जँ संजोगवश मृत्यु नहियोँ भेलैन तैयो रोगसँ रोगाइये जाइ छैथ। जइ सेवा करैमे बेटा-पुतोहुक दम खराइते अछि। ओइ दम खराएबसँ नीक मरिये जाएब। मुइला पछाइत एतबे ने हएत जे कर्जा-बर्जा लऽ कऽ सराध करए पड़त, से तँ कोनो धरानी

लोक पुराइये लइए। ओना, गाम-घर केतबो गरीब भेल अछि तैयो पढ़ै-लिखै वा बर-बेमारीमे लोककेँ कर्जा नइ भेटौ, मुदा माए-बापक सराध-ले कर्जा भेटते अछि। जँ से नइ भेटत तँ दसो दिनमे पँच-पँच हजार पंचकेँ भोज खुआएब पार लगत। तहूमे मरला-जरौला पछाइत चारि दिन तक सारा झाँपल नइ जाइए, आ जाबे सारा नहि झँपाएत ताबे सराधक किरिये-कर्म आकि भोजे-भातक विचारे आकि ओरियाने थोड़े कएल जाएत। मुइला पछाइत जहिना पाछूसँ चारि दिन कटि जाइए तहिना तेरहा सराधमे चारि दिन आगूसँ सेहो कटिये जाइए। माने दसम दिन नह-केश होइए, एगारम दिन पहिल सराध, बारहम दिन दोसर सराध, तेरहम दिन सत्यनारायण भगवानक पूजाक पछातिये ने मुक्ति भेटैए।

साले भरिक आगू-पाछू माइयो मरि गेली आ पितो मरि गेला। सोल्होअना परिवारक भार माथपर आबि गेल। तइसँ पहिने पत्नी चेतौनी दऽ देने छेली जे एना जे नर-बहतर जकाँ, भरि दिन वौआइत रहै छी तइसँ बेटीक बिआह हएत आकि अपन गुजरो चलत। तहूमे आब लोक बेटियोकेँ पढ़बए लगल अछि, तैठाम अपने नइ पढ़ाएब से लोक नीक कहत...। मुदा तेकर कान-बात नइ देलौं। एते तँ बिसवास बनले ने अछि जे जे भगवान जन्म दऽ खाइले मुँह चिरलैन से अहारोक ओरियान ने करता।

ओना, थानो-पुलिसक दोख नहियेँ छेलैन किएक तँ ओ अपना विचारे आबि कऽ नइ पकड़ने छला, गामेक लोक सभ फँसैने छल। गामक लोक फँसौलक आकि अपन चालिये फँसलौं से अखन तक भाँजपर नइ चढ़ल अछि। गौंआँकेँ किए दोख देबैन, सरकारक कानूने कड़गर छल। पुलिसक जिला कार्यालयसँ तेहेन आदेश थानाक बड़ाबाबूकेँ एलैन जे नोकरी दॉवपर चढ़ि गेल छेलैन तहूमे जिलाक पुलिस सेहो आबि गेलैन। अपने तँ पकड़ा गेलौं, मुदा

घरवाली चौकस छथिये, ओ आहे-माहे, कानब-खिजब छोड़ि दारू बनबैक सभ समचाकेँ निपत्ता कऽ लेलैन। जँ से नइ केने रहितैथ तँ अनेरे मोटक संग अपनो जइतौं। सिपाहीक हाथमे पड़ला पछातियो तिनको भरि मन नइ घबड़ाएल। आ ने अनका जकाँ सिपाहीकेँ चकमा दऽ कऽ भगैयेक परियास केलौं। किए तँ सिपाही पकैड़ कऽ केतए लऽ जाएत- जहले ने, से तँ बुझले अछि। कोनो कि आइये जाइ छी, आकि नियमे अछि जे शराबक कारोबारमे पकड़ाउ, तीस दिनक पछाइत अपने अपराध कबूल लिअ। लगले एक मासक सजाए हएत, से पुरिये गेल रहत, निचेनसँ चलि आउ। तहूमे जँ टटका-टटकी दस-पाँच दिनक जेल हुअए तँ ओ आरो बेसी नीक, किएक तँ बिना आन-आन ऑफिसक कागजे केसक कारोबार नहियेँ बढ़ैए, तेकरा तैयार करैमे मास दिन समयो लगिये जाइए आ खर्चाक संग पैरवीकारक समय सेहो लगि जाइए।

संजोग तोहूसँ बेसी नीक भेल। ओ भेल जे तीन दिन पहिनहि एकटा गौंआँ-संगी सेहो जहल आएल छैथ। ओहो एला अही नवका कानूनमे।[16] ओना, धरमागती बात अछि जे ओ[17] ने शराबक घन्धा करै छैथ आ ने पीबे करै छैथ, मुदा पीआकोसँ बेसी निशाँ चढ़ल रहै छैन, से बात जरूर अछि। केकरो गारि-कथा पढ़ब रोज-मर्राक काज छैन। कोनो बात की केतौ छिपल रहैए, काने-कान निच्चाँ-ऊपर सगतैर पसरिये गेल छेलैन, जइसँ थानो कनखरल रहबे करैन। गड़ पाबि जहिना बिलाइ बाझपर झँपटैए, जेकरा लोक धोखासँ बाघ कहै छै सएह भेल। कनखैर कऽ थानाक बड़ाबाबू गोविन्दकेँ पकड़लैन। खाएर जे जेतए हुअए, अपने तँ अपन ने ओरियान करब।

---

[16] शराब बन्दी

[17] संगी

रामपट्टी जेल पहुँचलौं। कहिया केतए-सँ मधुबनी सब्डिविजनक जहल जे आँटा-चक्कीक घर छल, तइसँ नीक रामपट्टी जहल अछिए। ऐठाम गेनो-तेनो खेलाइक जगह छइहे। मधुबनीक जहल तँ तेहेन छल जे लोक साइकिलो भरि ताव नइ चला सकैए।

जहलक रस्तेमे हम रही तखने गोविन्दकेँ जानकारी भेट गेलैन जे राधेश्याम सेहो आबि रहल अछि, तँए ओहो कान ठाढ़ केने जे जखने जहलक गेटक फाटक टपत तखने ओकरा अपना संगे लऽ आनब आ अपने संग राखब, नइ तँ तेहेन केसमे आएल अछि जे पर-पैखाना साफ करैसँ लऽ कऽ पानि भरब, झाड़ू देबक संग आरो-आरो जे काज अछि, सभ करौत।

ओना, गाममे गोविन्दक संग विचारो आ सामाजिक बेवहारोमे सभ दिन खटपटे रहै छल मुदा जहल तँ जहल छी, ओइठाम गामक झगड़ा किए रहत।

जहलक गेट टपिते गोविन्दसँ भेँट भऽ गेल। भेँट होइते गोविन्द कहलैन-

“राधेश्याम, बाहरक लोक जहलकेँ हौआ बनौने अछि मुदा से सभ किछु ने अछि।”

अपनो केते बेर जहल गेले छी तँए बुझल-गमल अछिए, मुदा तैयो मनमे कनी शंका होइते रहए जे पहिने ने एक मासक भीतरे छुटि कऽ आबि जाइ छेलौं। मुदा अखन तँ से नहि, कानूनो कड़गर बनि गेल अछि तँए कहिया छुटब कहिया नहि...। सएह चिन्ता मनकेँ पकड़ने छल। फेर मनमे ईहो हुअए जे जखन जहल आबिये गेलौं तखन डरबुक बनि कऽ रहब सेहो नीक नहियेँ हएत। जखने मुँह दुब्बर जकाँ रहब तखने सभ भरि-भरि राति जँतेबे करत। ओना,

जहलक हिसाब सेहो गाम-घरसँ उन्टा अछिए। जे जेहेन अपराध केने रहल ओकर पूछ ओही हिसाबसँ होइ छइ। ओना, शराबक कारोबारमे पहिल बेर जहल आएल छी। ऐसँ पहिने जे आएलो छेलौं से नेतागिरीमे। कहियो कोसी नहर बनबैक सबाल लऽ कऽ, तँ कहियो भूमिहीनकेँ बासडीहक पर्चाक सबालपर, तँ कहियो बटाइदारीक सबालपर, मुदा ऐबेर से नहि, ऐबेर शराबक कारोबारीक रूपमे जहल आएल छी, तँए मनमे कनी अपनो ग्लानि होइते अछि।

जहिना आन-आनकेँ जहलमे पहिल दिनक रौतुका भोजन नइ भेटैए तहिना अपनो नइ भेटल। मुदा गोविन्द एते सतरकी केलैन जे अपने खाना दोबरा कऽ लऽ अनलैन जइमे हमरो खाइले देलैन। खेनाइ खेला पछाइत जखन दुनू गौंआँ एकठाम ओछाइपर सुतैले गेलौं, तखन गाम-घरक गप-सप्प चलए लगल। गोविन्दोकेँ बुझले छैन जे राधेश्याम दारूक कारोबार आइये नहि, केतेको दिनसँ कऽ रहल अछि, तँए जँ जहल आएल तँ उचिते आएल, मुदा हम तँ कारोबारक कोन गप जे पीबो ने करै छी। हँ, एते जरूर अछि जे कनी-मनी अफीम खाइ छी। ओ तँ शराब छी नहि। अपने बाड़ीमे पोस्ता-दानाक गाछ रोपि ओइसँ रस चुबा अफीम बना लइ छी आ वएह चौबीस घन्टामे दू बेर एक-एक केराउ-बरबैर खाइ छी आ चौबीसो घन्टा बम-बम करैत रहै छी...।

गोविन्द बजला-

“राधेश्याम, जेहेन सरकार आन्हर अछि तेहने ओकर कानून सेहो आन्हर छइ!”

गोविन्दक विचारकेँ केना नइ समर्थन दैतिऐन, एक तँ वेचारा साधु-सन्त जकाँ अपन खेनाइ बाँटि कऽ खुऔलैन, तैपर अपना लग सुतैक जगहक ओरियान सेहो केलैन, तैठाम जे हम टटके निमक-

हराम भऽ जाइ से उचित हएत। जहलक आन-आन कोठरीमे लोक पतियानी लगा कऽ दुनू सिरहौने–माने एक आदमी पूब सिरहौने तँ दोसर पच्छिम सिरहौने–सुतैए, तैठाम जँ एक सिरहौने सुतैबला जगह भेल से तँ गोविन्देक चलैत ने। तँए, सोचि-विचारि कऽ बजलौं-

“गोविन्द भाय! सरकार की कोनो साधारण आन्हर अछि, एकदम निपट आन्हर अछि।”

गामक जे मनो-मलिन गोविन्दक संग छल से बुझि पड़ल जे गोविन्द भरिसक बिसैर गेल। बिसैर गेल आकि छोड़ि देलक से तँ गोविन्द जानैथ, मुदा गौंआँक जे दायित्व होइए तइमे मिसियो भरि कसैर वेचारे नहि रखलैन।

भिनसरमे वार्डक गेट खुजिते कैदी सभ पैखाना दिस दौड़ैए। कैदीक अनुपातमे पैखाना जाइक बेवस्था कम अछिए। जइसँ हम पहिने जाएब, तँ हम पहिने जाएब, तइले पटका-पटकी हएब सोभाविके अछि। ओना, अखन धरिक अपन आदत–पैखाना जाइक, वएह रहल जे जहलेमे सिखलौं। ओ ई जे बाहरक लोक जकाँ जहलक लोककेँ थोड़े काज रहैए जे समयपर पुरबइ पड़तै। जइसँ समयपर पैखाना जाएब सेहो अनिवार्ये-रूटिंगमे रहत। माने ई जे जहलक हिसाबसँ चलए पड़ैए। बाहर जकाँ ने कोनो काज रहल आ ने कोनो चिन्ते रहल। जखन सएह अछि तखन छोट-छीन काज-ले जे लोक भोरे-भोर पटका-पटकी करैए से तँ बुड़िबकीए भेल किने। जखन बुझले-गमल बात अछि जे नप्पासँ नापि जलखैयो भेटैए आ खेनाइयो भेटैए, तखन ओकरा संयमित करब कोन बड़का भारी काज भेल। कोनो कि भोज खेलहा रहैए जे बेकाबू हएत। भेल तँ एकसँ डेढ़ घन्टाक पछाइत पैखाना कोठरी खालीए-खाली भऽ जाइए, तखन निचेनसँ ने किए लोक जाएत। जखन जहलेमे छी

तखनो जँ निचेनसँ अपन किरिया-कर्म नइ करब तखन गाम-घरमे कएल हएत। मुदा से आदत, जे शुरूमे बनल ओ अखनो अछिए। अन्तर एतबे अछि जे अपन जिनगीक क्रिया-कलाप समैयक रूपेँ बना नेने छी। एहेन रूप बनिये गेल अछि जइसँ ने जहलेमे कोनो बाधा होइए आ ने गामेमे कोनो बाधा होइए।

जहलक गोदाममे बदाम सठि गेल छल तँए चूरे जलखै भेटल। राति भरिक विश्रामक पछाइत मनो पोखरिक पानि जकाँ थीर भइये गेल छल। थीरो केना ने होइत, मनो तँ मानियेँ लेलक जे जहलमे छी...। जलखैक चूरा देखि बजलौं-

"गोविन्द भाय, जेतबे चूरा अछि तेतबो जँ दहियो रहैत तँ अपना इलाकाक लोक उपकैर-उपकैर जहलो अबैत आ ऐला पछाइत निकलैले तैयारो ने होइत।"

गोविन्द बुझि गेला जे राधेश्याम तिरहुतिया चूरा-दहीक बात बाजल हेन, तँए ओ कोनो काने-बात ने देलैन। अपनो मुँह अनेरे बन्न भऽ गेल। किए तँ जेना शब्द-वाण फेकलौं तहिना जँ उत्तरो अबैत तखन ने बात-कटौवैल होइत, से तँ भेल नहि। गोविन्द भाय धियाने ने देलैन जे किछु बजितैथ। चुपा-चुपी पसैर गेल। वार्डसँ कैदी सभ निकैल-निकैल अपन-अपन जीवन-घन्धामे लगि गेल छला। हमहूँ दुनू गोरे एकठाम बैसल रही। तही काल एक बेकती लोटा नेने कलपर जाइ छल। हुनका देखबैत गोविन्द भाय पुछलैन-

"राधेश्याम, ओइ लोटाबलाकेँ चिन्है छहक?"

आँखि उठा हुनका दिस तकलौं तँ चीन्हिमे नइ एला, कहलयैन-

"नइ।"

गोविन्द भाय बजला- "तोरे अपेछितक बेटा छिअ।"

‘अपेछितक बेटा’ सुनि मन चौंकल। चौंकते बजलौं-

“भाय, अहाँसँ ओकरा चिन्हा-परिचय..?”

गोविन्द बजला-

“हँ, गामेसँ अछि। ओकील साहैबक बेटा छैथ, सुलेमान नाओं छिऐन।”

बजलौं-

“कोन ओकील साहैब?”

गोविन्द बजला-

“सुलतान साहैब।”

‘सुलतान साहैब’क नाओं सुनिते विचारक संग मनो चकभौर लेलक। चकभौर ई जे सुलतान साहैबक संग नेतागिरीक सम्बन्ध बहुत दिन धरि रहल। अखनो कनी-मनी ओ नेतागिरी करिते छैथ, हम सोलहन्नी छोड़ि देलौं तइसँ भेँटो-घाँट कमिये गेल। दोसर ईहो भेल जे ओ कोर्टमे वकालत करै छैथ तँए हुनका दसटा गप-सप्प करैबला लोक लगमे रहिते छैन, हमरा से नहियेँ अछि। तहूमे तेहेन धन्धा करै छी जे दोकानपर पीआक सभकेँ उपकैर-उपकैर कऽ पीऐबतो छी आ तहूमे सँ कियो-कियो पीब कऽ गीतो गबैए आ कियो-कियो गरिएबो करैए।

कलपर सँ सुलेमान घुमल कि गोविन्द भाय शोर पाड़ैत कहलखिन-

“सुलेमान, एमहर अबिहह।”

जहिना गोविन्द भाय कहलखिन तहिना सुलेमान एला। अबिते गोविन्द भाय हमरा देखबैत सुलेमानकेँ कहलखिन-

“तोरे पिताजीक संगी छथुन। दारू कारोबारमे एला अछि।”

'दारू कारोबार' सुनि अपना कनी लाजो भेल मुदा जँ दुइये गोरे रहितौ तखन तँ उन्टा कऽ कहितिऐन जे अफीमसँ की कड़गर हमर दारू अछि, मुदा तेहाला लग अशिष्ट जकाँ बाजबो नीक नहियेँ होएत, तँए चुपे रहलौं।

पिताजीक संगी सुनि सुलेमानक आँखि नोरसँ डबडबा गेलइ। नोर भरल नयना, नहुँए-नहुँए ललिया लगलै। ललियाइत-ललियाइत लाल भऽ गेलइ। मुदा बाजल किछु ने।

बजलौं-

"बौआ, की नाम भेल?"

बाजल-

"सुलेमान।"

पुछलिऐ-

"सुलतान साहैबक बेटा छी?"

पिताक नाओं सुनिते सुलेमान फफैक-फफैक कऽ कानए लगल। कानब देखि अपनो आँखि नोरसँ भरि गेल। मुदा बेटी-विदागरी जकाँ जँ सभ कननिहारे हएब तखन एक लोटा पानियोँ सीमाकातमे बेटीकेँ के पिऔत..! अपन नोरकेँ धोतीक खूटसँ पोछि मन सक्कत केलौं। सकताइते मुँह फुटल-

"कननेसँ थोड़े किछु हएत। किए जहल एलौं? केसक की हाल अछि?"

सुलेमानकेँ जेना कनी सबुर भेलइ। सबुरक कारण पिताक दोस्तसँ मिलब छेलै आकि केसक कीड़ा बुझलक से तँ सुलेमाने जानए, मुदा अपना बुझि पड़ल जे पानिमे डुमैतकेँ खढ़ोक सहारा देखि वेचाराकेँ जनु जान बँचैक सम्भावना बुझि पड़लै। हमरा मुँह

दिस तकैत सुलेमान बाजल-

“दोस चचा! मर्डर केसमे आजन्म सजाए भऽ गेल अछि।”

‘मर्डर केसमे आजन्म सजाए भऽ गेल अछि’ कानमे पड़िते जेना माथा सुन्न भऽ गेल। तरे-तर मन कलैप उठल, बाप रे एकर तँ जिनगीए बिलैट जेतइ! मुदा अखन सोचैये-विचारै आकि चिन्ते-मनन करैक समय थोड़े छी। अखन तँ गप-सप्प कऽ रहल छी तँए गप-सप्पक क्रम पकैड़ ने क्रमित होइत चलब...। बजलौं-

“केहेन मर्डर केस अछि? अनठेकानी केतौ फँसौल गेल छी आकि सचमुच मर्डर केने छी?”

‘सचमुच’ सुनि सुलेमान सिहैर गेल। सिहरैत अपन दोख टारैत बाजल-

“दोस चचा, अहाँ लग झूठ केना बाजब, तहूमे गोविन्द चचा सेहो छैथ। पिताजीक कपारपर जेना शैतान सवार भऽ गेल छेलैन तहिना फरसा लऽ कऽ निकैल गेला। हम चुपचाप देखैत रहितौं से नीक होइत। ओहीमे चचेरा भाइक मर्डर भऽ गेल।”

बजलौं-

“कनी सेरिया कऽ बाजू।”

सुलेमान बाजल-

“चचाजी, अपने परिवारक चचेरा भाइक हिस्सा हड़पैक विचार पिताजीकेँ मनमे चढ़ि गेलैन।”

सुलतान साहैबकेँ दू भैयारीमे साठि बीघा जमीन छैन। जहिना निच्चाँ पाँचो बीघा जमीनबला–जेकर जन-बोनिहारक हाथे काज होइ छै, आ ऊपरक तँ ठेकाने ने अछि–परिवारक धिया-पुताकेँ भोगक चस्की लगि जाइ छै तहिना सुलतान साहैबकेँ सेहो चस्की

लगि गेलैन। ओना, चस्कियो रंग-बिरंगक अछिए। केकरो जुआक चस्की, तँ केकरो बैंक-बैलेंसक चस्की, केकरो खाइक चस्की, तँ केकरो पीबैक चस्की, तहिना केकरो मेला-ठेला देखैक चस्की, तँ केकरो रण्डी-बेश्या इत्यादि कोनो-ने-कोनो चस्की रहिते अछि। मुदा सुलतान साहैबकेँ से एकाकी चस्की नहि, जहिना सम्पैत बटोरैक चस्की तहिना वेश्यालयक चस्की आ तहिना खाइयो-पीबैक चस्की सेहो लगले छेलैन। माने भेल जे मध्यम श्रेणीक परिवारक धिया-पुताकेँ जहिना गोटि-पङ्गरा चस्कीमे मन चसैक जाइ छै तहिना द्रोपदीक पतिक समूह जकाँ सुलतान साहैब भोगक चस्कीमे चसैक गेला। जइसँ मानवीय सम्बन्धक बोधक विचार कुविचारमे विलीन भऽ गेलैन, जइसँ पारिवारिक वा सामाजिक सम्बन्धक बोध मनसँ मेटा गेल छेलैन। जँ से रहितैन तँ पिताक ओ गरिमा जरूर मनमे रहितैन जे पिताक दायित्व बनैए जे बेटा-बेटीक ऊपर ने अपन जीवनक एक पाइक रीन-पैंच रहए दिऐ आ ने पैंच-उधार केने रही। परिवार चलैक क्रमिक जे दायित्व अछि ओ सरपट रस्ते समगम भऽ सम्हारैत चली। खाएर जे जेतए अछि से तेतइ ने फुलाएत-फड़त।

बजलौं-

“बौआ, तोहर बिआह भेल छह?”

सुलेमान-

“हँ, दूटा बेटा-बेटी अछि।”

ठनका जकाँ मनमे खसल। खसल ई जे पिताक चलैत बेटा-पोता सबहक जिनगीक हत्या भऽ गेल..! पचीस बर्खक औरतक (पुतोहुक) जहिना भेल तहिना सताइस बर्खक बेटाक भेल, तैसंग दुनू पोता-पोतीकेँ के देखनिहार हएत। जे पिता अपने वकालत कऽ रहला अछि, जीवनक अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेल छैथ, अखन

डिष्ट्रिक कोर्टक सजाकेँ हाइ कोर्टमे अपील भेने, जमानत दए देने छैन, तहिना सुप्रीम कोर्ट तक हेबे करतैन जइसँ फाँके-फाँक अपने बँचल रहि जिनगीक अन्त करता, मुदा जइ बेटाक ऊपरमे हत्याक पूर्ण दोष साबित भऽ चुकल अछि ओकर की गति हएत..!

तोष-भरोस दैत बजलौं-

"की करबै, देखै नइ छी हमहूँ दारूक कारोबारमे जहल काटि रहल छी। सबहक देखनिहार भगवान छैथ। ओ की कोनो बेइमान छैथ जे अनका देखथिन आ अपना-सभकेँ नइ देखता।"

सुलेमान बाजल-

"अखन जाइ छी चचा। कनीकालमे फेर आएब।"



शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018

बेटाक चलैत

रामशरण मास्टर साहैब पाँच सालसँ गाम पएर नइ देलैन अछि। हरिपुर हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ, जे गामसँ करीब बारह कोस हटल अछि, ओहीठाम भाड़ाक डेरामे रहै छैथ। ओना, सामाजिक हिसाबसँ ‘चाचाजी’ कहै छिऐन। हरिपुर हाइ स्कूलमे तँ अपने नइ पढ़ने छी मुदा दुर्गापूजाक छुट्टीमे पनरह दिन आ अमैया छुट्टीमे[18] महिना दिन जखन गाममे चाचाजी रहै छला तखन चारि साल जरूर पढ़ने छी। चारि सालक दुनू छुट्टी मिला कऽ भेल छह मास। ओना, ओ संस्कृत आ मैथिलीक शिक्षक मानल जाइ छैथ, किए तँ संस्कृतसँ एम.ए. केने छैथ, जहीक आधारपर हाइ स्कूलमे शिक्षकक पदपर बहाली भेलैन। मुदा, पढ़ैमे तेते लगनशील रामशरण चाचा छैथ जे हाइ स्कूलक फिजिक्स, कैमेस्ट्री छोड़ि मैथमेटिक लगा आर्टक सभ विषयकेँ जेना चाटि गेल छैथ, जइसँ जेतए-सँ जे बुझैक रहल, ओ बुझा दइ छैथ। तँए, गुरुक सिनेह मनमे नइ अछि सेहो बात नहियेँ कहल जा सकैए। रामशरण चाचा डरे गाम छोड़ि देलैन। अपनो सामाजिक-नैतिक बन्धनक बान्ह एहेन लगि गेल अछि जे भेँट करए नइ जाइ छिऐन।

संजोग बनल। ऐबेर शिवरातिक उत्सव कुशेसर स्थानमे नीक जकाँ हएत। बाहर-बाहरसँ महात्मा-पण्डित सभ आबि मास दिनसँ यज्ञो कऽ रहला अछि आ शिवराति दिन विशेष कार्यक्रम सेहो रखने छैथ। रंग-रंगक खेल-तमाशाक संग बाहर-बाहरसँ रंग-रंगक वेपारी

---

[18] गर्मी छुट्टीमे

सभ सेहो आबि-आबि दोकान लगौत। जे हल्ला गाममे आठ दिनसँ अछि। तँए, गामक लोक उनटिये कऽ शिवरातिमे कुशेसर जाएत।

रामशरण चाचासँ भेँट करैक नीक गड़ भेटल। गड़ ई भेटल जे गौंआँ सबहक संगे गामसँ निकलब। जे गौंआँ संगमे रहत सेहो आ जे गाममे रहता सेहो बैसल-बैसल कुशेसर स्थान जाइबलामे ने हिसाब जोड़ता। तँए रामशरण चाचासँ भेँट करब, ई विचार किनको मनमे नहियेँ औतैन। कियो एहेन लांक्षणो नहियेँ लगौता जे फल्लाँ रामशरण मास्टर साहैबसँ भेँट करए गेल छल। ओना, समाजक बन्धनकेँ असगरो लोक तोड़ि सकैए, मुदा ओकरामे अपन जिबठपनक गुण हेबा चाही। जिबठपनक गुण भेल जे जीवनसँ सटल किरियो आ विचारोकेँ मजगुतीसँ पकैड़ डेग उठाएब। मुदा ऐठाम तँ से नइ अछि। रामशरण चाचासँ खाली भावनात्मक जुड़ाव अछि।

शिवरातिसँ तीन दिन पहिनहि गामसँ विदा होइक समय बनल। पुरना पनरह कोस गामसँ कुशेसर स्थान अछि, तँए दू दिनक रस्ता भेल आ तेसर दिन दर्शन भेल। पनरह कोस जाइमे दू दिन लागत। अखुनका पीढ़ीकेँ अनसोंहाँत लगतैन मुदा से बात नहि अछि। बीसो-पचीस धार-धुरक मिलानी कुशेसरक रस्तामे अछि, जइसँ सवारी चलै-जोकर रस्तो नहियेँ अछि, आ तैसंग नाह सन सवारीसँ सेहो केतेको ठाम पार हुअ पड़ैए। पानिक नाहक सवारी माटिक चरण बाबूक टैक्सीसँ सेहो कम गतिये चलिते अछिए। ओहुना लोक आठ कोस भरि दिनमे चलैक हिसाब मनमे रखनहि अछि।

कुशेसर स्थान जाइक गोटी तँ नीक जकाँ मनमे बैस गेल, मुदा जेरसँ हटि रामशरण चाचासँ भेँट केना करबैन? सोचैत-विचारैत

मनमे एकटा जुक्ति फुरल। फुरल ई जे घुमती बरियातीक, घुमती नटुआक आ घुमती तीर्थ यात्रीक कोनो हिसाब थोड़े रहैए, कियो कोनो रस्ते, कियो कोनो रस्ते आपस घरमुहाँ होइते अछि, तही फाँकमे अपनो कोनो-ने-कोनो गड़ लगा जेरसँ छिटैक हरिपुरक रस्ता पकैड़ लेब। कियो बुझबो ने करता आ अपने रामशरण चाचासँ भेँटो कऽ लेबैन। मन मानि गेल जे नीक विचार मनमे उठल।

रस्ताक विचार भेला पछाइत मन नीक जकाँ शान्तो ने भेल छल कि पत्नी आबि बजली-

"जखन सौंसे गामक पुरुखो आ जनिजातियो कुशेसर स्थान जेबे करै छैथ, अहूँ जेबे करब तखन हमहूँ जाएब।"

बेर परहक भदवा जकाँ पत्नीक बात लागल। मनमे उठल जे हम कि कोनो नियारि कऽ कुशेसर जा रहल छी। कुशेसर जाएब तँ बहाना भेल। असल तँ अछि रामशरण चाचासँ भेँट करब। तहूमे जखन पत्नी संगमे रहती तखन हुनका ऐठाम केना जाएब! एक तँ ओहुना स्त्रीगणक पेटमे कोनो बात नइ अरघैए, तैठाम जँ पत्नीकेँ संगे नेने जेबैन तखन तँ सभ बात खुजिये जाएत। जखने सभ बात खुजत तखने समाजक नजैरमे दोखी भइये जाएब।

बहाना ठाढ़ करैत बजलौं-

"कोनो कि कुशेसर बाबा आकि स्थाने केतौ पड़ाएल जाइए, ऐगला साल अहाँ चलि जाएब।"

ई बात बुझल नइ छल जे पत्नी आन-आन स्त्रीगण सभसँ विचार तय कऽ नेने छेली जे हमहूँ जाएब। तँए, हुनको हारल विचार छेलैन्हे। हारल विचार भेल जे जाएब गछि नेने छथिन। आब जँ नइ जेबाक दवाब देबैन तँ कहबे करती जे अहीं किए जाइ छी? जँ पाइ-कौड़ीक बात कहबैन जे अखन ओते पाइ नइ अछि, तँए अहाँ नइ

जाउ। पाइ-कौड़ीक ओरियान हएत तँ ऐगला साल अहीं चलि जाएब। मुदा लगले मनमे ईहो भेल जे जँ कहीं कोनो स्त्रीगणसँ पाइयो-कौड़ीक व्योँत कऽ नेने हेती, तखन की करब? किए तँ जहिना धर्मक नाओंपर तीर्थ-वर्त करैले तहिना माए-बापक श्राद्ध करैले रीन-पैंचक असुविधा नहियेँ अछि। पत्नी बजली-

“पुरुखक जेरमे जहिना स्त्रीगणकेँ केतौ जाइमे असुविधा होइए तहिना ने स्त्रीगणोक जेरमे पुरुखोकेँ असुविधा होइते अछि। मुदा अखन तँ से नहि अछि, दुनूक समूहे जा रहल अछि।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ से तँ जाइए रहल अछि।”

लगला सूरमे बजा तँ गेल मुदा बुझबे ने केलिऐ जे अपने मुहेँ अपने दोखी बनि जाएब। बिच्चेमे पत्नी बजली-

“अखन गामक आनो-आन स्त्रीगण सभ जा रहली अछि, फेर एहेन गड़ हमरो कहिया भेटत कहिया नहि।”

पत्नीक बात सुनि अबाक् भऽ गेलौं। कहि तँ ठीके रहली अछि। ऐगला साल जँ आन-आन स्त्रीगण नहि जाएत तखन असगरे केना जेती। जँ अपने संग पूरैले तैयार हएब से तँ अखन गड़ेपर चढ़ल छी। ने आगू किछु फुरए आ ने पाछूए हटैक कोनो गड़ भेटए। पाछू हटैक गड़ भेल जे जँ कहबैन जे ऐबेर नइ जाएब, आगूए साल चलब। मुदा से कहबो केना करबैन। आठ दिनसँ विचारो केने छी आ ओरियानो-बात कइये नेने छी। मन आगू-पाछू होइते छल कि तइ बिच्चेमे एकटा विचार मनमे उठल। विचार उठल जे जहिना अपन परिवार रहितो गाड़ी-सवारीमे स्त्रीगण-स्त्रीगणक संग बैस सफर करै छैथ तहिना ने तीर्थो-वर्त करैमे पुरुख-पुरुखक संग आ स्त्रीगण-स्त्रीगणक संग रहिते छैथ। तँए, घुमती काल स्त्रीगणक संग पत्नीकेँ

लगा अपने कोनो गड़े छिटैक जाएब। पत्नी गौंआँ-घरूआक संगे गाम आबि जेती आ अपने रामशरण चाचासँ भेँट करैत पाछूसँ आएब। जँ कियो पुछबो करता तँ कहबैन जे कुशेसर ब्लौक ऑफिसमे जे राम किसुन नोकरी करैए ओ भेँट भऽ गेल। भेँट भेला बाद नइ मानलक डेरापर लऽ गेल आ एक दिन रोकि लेलक। मन मानि गेल ऐ बहानासँ काज चलि सकैए।

पत्नीकेँ कहलयैन-

“जाइमे ते कोनो हर्ज नहि, कोनो कि हमरा पएरे चलब, अपने पएरे ने जाएब, मुदा पाइ-कौड़ीक ओरियान तँ अपने भरि केने छी। काल्हि सभ विदा हएत, आब अन्तिम समयमे पाइ-कौड़ीक ओरियान केना हएत?”

पत्नियोँ अपन व्योंत लगाइये नेने छेली, बजली-

“पाइ-कौड़ीक कोनो चिन्ता नइ करू। सुधिया काकी गछि लेली अछि।”

कहलयैन-

“बड़बढ़ियाँ अहूँ चलब। जखन कौल्हुके जाइक विचार अछि, तखन खाइयो-पीबैक ओरियानमे लगि जाउ। कपड़ो-लत्ता साफ कऽ लिअ।”

पत्नीक मन खुशी भऽ गेलैन। मनक खुशीक तँ अपन महत अछि। जँ खुशी-खुशी कोनो काज करए लगब तँ ओ काजो नीक होइए आ बेसियो होइते अछि। पत्नी अपन तैयारीमे जुटि गेली। मने-मन अपने विचारलौं जे अपना मनकेँ एते तँ दाबिये कऽ रखैक अछि जे गप-सप्पक क्रममे ‘रामशरण चाचासँ भेँट करब’ से ने मुहसँ निकैल जाए। जँ से निकैल जाएत, तखन सभ विचार बिगैड़ जाएत। बिगैड़ ई जाएत जे जहिना गौंआँक डरे रामशरण चाचा गाम छोड़ने

छैथ तहिना अपनो छुटत।

रामशरण चाचाकेँ तीन सन्तान। दू बेटी आ एक बेटा। दुनू बेटी, बिआह-दान भेने सासुर बसै छैन आ पत्नी-बेटा गाममे रहै छेलैन। अपने हरिपुरे हाइ स्कूलमे नोकरियो करै छैथ आ डेरा लऽ कऽ रहितो छैथ। बेटा– राधाकान्त बी.ए.मे पढ़ै छेलैन। गामेक एकटा लड़कीक संग प्रेम भऽ गेलइ। ओ लड़कियो बी.कम.मे पढ़ैत।

गाम-समाजमे अखनो जाइतिक बान्ह आ सम्प्रदायिक बान्ह एहेन बन्हले अछि जे सदिकाल किछु-ने-किछु चक-चुक होइते रहैए। राधाकान्त आ श्यामा तँ चोरा-नुका कऽ प्रेमो करै छल आ बिआहो करब तय कऽ नेने छल। मुदा समाजक जे बेवहार अछि तेकर प्रतिकूल विचार छेलइ। से ने राधाकान्तेक मनमे उठल आ ने श्यामेक मनमे उठि सकल। रंग-रंगक खिस्सो-पिहानी आ सिनेमो-सर्कसमे देखिते-सुनिते आएल अछि, तैसंग गामो-गाममे एहेन प्रेम आ बिआह सेहो लड़का-लड़कीक बीच भइये रहल अछि। अपनो गाममे पान-सातटा भेबे कएल अछि। तेतबे नहि, स्वेच्छासँ लड़का-लड़की[19] बीच बिआह आइये नहि पहिनहुँ होइते छल। पहिने स्वयंवर प्रथा छल। ओही प्रथाक हिसाबे ने राम आ सीताक बिआह भेल छेलैन। मुदा से प्रथा तँ आब रहल नहि। ओना, कानूनी रूपेँ ओ वैध अछि। मुदा गाम-समाज तँ ऐ विधानकेँ स्वेच्छासँ मान्यता नहियेँ देने अछि। तँए वैधानिक किरिया-कलाप अवैधानिक भइये गेल अछि। जइसँ गामे-गामे एहेन घटना घटिते समाजमे विषाक्तता पसरिते अछि। केस-फौदारी, मारि-पीटि, लूट-पाट इत्यादि-इत्यादि आँखिक सबहक सोझ अछिए, एकरो नकारल नहियेँ जा सकैए।

जइ जाइतिक रामशरण चाचा छैथ, ओ अल्प संख्यक गाममे

[19] माने वयस्क लड़का-लड़की

अछि आ जइ जाइतिक लड़की छिऐ ओ बहुसंख्यक अछि। तैसंग गाममे वर्चस्व सेहो छइहे। गामोक तँ एहेन दुर्भाग्य अछिए जे कम पढ़ल-लिखल रहने, माने कम समझदारीक कारण समाजक कोनो मुद्दाकेँ नीक जकाँ नहि बुझि ओइ मुद्दाकेँ हल करैए। जइसँ अराजक स्थिति गाममे नहि अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। समाजमे रंग-बिरंगक विषमता सेहो अछिए। जहिना आर्थिक विषमता अछि तहिना सामाजिक विषमता सेहो अछिए। जइसँ एक-दोसरकेँ सदिकाल निच्चाँ दाबि रखए चाहैए।

पाँच साल पूर्व राधाकान्त आ श्यामा चुपचाप महादेवक मन्दिरमे बिआह कऽ लेलक। मुदा दुनू रहत केतए, ई समस्या बीचमे उठलै। तत्काल तँ दुनू अपना-अपना ऐठाम गेल मुदा काने-कान गाममे ई बात पसरल। जेना-जेना बात पसरल तेना-तेना सामाजिक माहौल बिगड़ए लगल। दुआर-दरबज्जा, चौक-चौराहा, इनार-पोखरिक घाट इत्यादि सभठाम अही बातक चर्च हुअ लगल। पुरान परम्परासँ ग्रसित समाज अछिए, तँए नव समयक लेल जीवनक नव विचार मनमे किए केकरो उठत। समाजो तँ समाज छी, बिनु सींग-नाङैरक अछिए। जँ से नहि अछि तँ अनुलोम बिआह[20]क चलैन केना चलि रहल अछि? खाएर...। लड़का-लड़कीक स्वेच्छासँ बिआह करबकेँ समाजमे केतौ खेल बुझल जाइए आ केतौ प्रतिष्ठाक प्रश्न सेहो बनौले जाइत अछि। जइ कारण जघन्य-सँ-जघन्य घटना सेहो घटिते अछि।

समाजक एहेन हवा बनि गेल जे राधाकान्तकेँ बुझि पड़ल जे गाममे रहने खून भऽ जाएब। एक तँ ओहुना कियो खून किए हुअ चाहत। भलेँ घटनाक परिणाम ओहन भऽ जाउ, जइमे खून भऽ

[20] अनुलोम बिआह भेल पैघ जाइतिक लड़का आ छोट जाइतिक लड़कीक संग बिआह।

जाइ। ओना, जेहेन वातावरण राधाकान्तक विपरीतमे बनल ओहन वातावरण श्यामाक संग नहि बनल छल। मुदा पढ़ल-लिखल श्यामा, समाजक रूखि बुझिये रहल छल। राता-राती राधाकान्तो आ श्यामो गामसँ पड़ा गेल। ओना, समय एहेन भऽ गेल अछि जे देशक एकोटा शहर नइ अछि जइ शहरमे गामो आ परोपट्टोक दस-बीस गोरे नहि रहैए। तहिना गामोक स्थिति अछिए, कोनो गाम एहेन नहियेँ अछि जइमे गामक दस-बीसटा कुटुमैती नइ होइ। दुनू समस्या दुनूक बीच छलैहे।

पुरुख, स्त्रीगणक संग धिया-पूता लगा पचाससँ ऊपर आदमी कुशेसर पहुँचलौं। एक तँ ओहुना कुशेसर स्थानक शिवरातिक मेला नामी अछि तैपर ऐबेर आरो विशेष बेवस्था भेने मेला खूब जमल। शिवरातिक प्रात भेने गाम घुमैक विचार भेल। मुदा अबै कालक विचारसँ जाइ कालक विचार बदैल गेल। दू दिन लगातार पएरे चलब, सबहक मनकेँ थका देने छल। तँए घुमती काल सवारीसँ घुमैक विचार भेल। ओना, हमरा गामसँ सीधा दच्छिन पनरह कोसपर कुशेसर अछि, जइ बीचमे कमला, बागमती, भुतही-बलान, गहुमा इत्यादि अनेको धार टपए पड़ैए। कोनो धार पएरे आ कोनो-कोनो नाहसँ पार हुअ पड़ैए।

विचार ई बदलल जे कनी पाइये खर्च हएत किने, मुदा सवारीसँ गेने एक दिन समैयोक बँचत हएत आ देहमे अरामो हएत। सबहक विचार भेल। किछु गोरेकेँ माशुलक पाइ नइ रहै, तेकर भार किछु गोरे उठा लेलक।

हमहूँ अपन प्रोग्रामक अनुकूल मने-मन गड़ अँटबए लगलौं जे केना जेरसँ छिटकब। गड़ अँटल। गड़ अँटिते सभ बस पकड़ैले विदा भेलौं। बस स्टेण्ड पहुँचते बजलौं- “जा! एकटा काज तँ छुटिये गेल!!

पूजा करए जाइकाल राम किसुनसँ भेँट भेल छल। ओ कहने छल जे आपस होइ काल कनी भेँट देब। माए-ले किछु पाइ-कौड़ी पठाएब।"

ई बात सभकेँ बुझल जे राम किसुन जहियासँ नोकरी केलक आ परिवारकेँ संगे रखए लगल तहियासँ माए-बापकेँ एकोटा पाइ नइ दइए। जखने मुहसँ राम किसुनक बात निकलल कि अकची-दोकची सबहक मुहसँ निकलए लगल। मुदा योगा भाय विचार देलैन-

"जा कऽ भेँट कऽ लहक, मुदा बेसी देरी नइ करिहह।"

मौका भेटैत देखि बजलौं- "बस, दस-सँ-पनरह मिनटमे घुमि आबि जाएब। तैबीच जँ बस खुजए तँ अहाँ सभ पकैड़ लेब। पीठे परहक बससँ हमहूँ आबि सकरी पहुँचैत-पहुँचैत अहाँ सबहक संग भऽ जाएब।"

सभ कियो बसमे चढ़ि विदा भऽ गेला आ अपने राम किसुन ऐठाम कि जाएब जे पएरेक रस्ता धेलौं। कुशेसरसँ तीन कोस उत्तर हरिपुर अछि। विदा भेलौं। हरिपुर पहुँचते रामशरण चाचा भेँट भेला। हुनक चेहरा देखि मनमे उठल- एहेन किए भऽ गेल छैथ!

रामशरण चाचाक शरीरक रूप जे पहिने छेलैन ओइमे काफी ह्रास भऽ गेल छेलैन। केतए लालबून्द, गोर-नार शरीर रहैन आ केतए कारी-झामर शरीर भऽ गेल छैन। मुदा से सभ किछु बजलौं नहि, मनेमे दाबि चुपचाप मुँह बन्न केने रहलौं।

रामशरण चाचा बजला-

"आइ तँ हमरो स्कूल, रबिक दुआरे बन्ने अछि, तँए पहिने नहा-धो लाए आ जलखै केलाक पछाइत भरि मन गप-सप्प करब।"

'भरि मन गप-सप्प करब' सुनि मन मानि गेल जे आइ रूकए पड़त। मुदा जखन जानियेँ कऽ भेँट करैक विचारसँ आएल छी तखन औगुताएबो नीक नहियेँ हएत। भेल तँ गाममे जँ कियो पुछता तँ

बहन्नोक की कमी अछि। कोनो बहन्ना लगा लेब। तहूमे केतौ जेबा काल ने लोक संगोर करैए, घुमती कालक खोज के केकर करैए। सएह केलौं।

चाह-जलखै भेला पछाइत दुनू बापूत निचेनसँ बैसलौं। ऐठाम बापूतक माने पिता-पुत्रसँ नहि अछि। सामाजिक भाषामे एहेन चलैन अछि जे पितातुल्य लोकक संग बापूतक प्रयोग होइते अछि।

बजलौं-

“चाचाजी, पाँच-बर्खपर अपनेसँ भेँट भेल अछि!”

‘पाँच बर्खक भेँट’ सुनिते रामशरण चाचाक मुँह बिजुकए लगलैन आ नोरसँ आँखि भरि गेलैन।

रामशरण चाचाक रूप देखि अपनो मनक रूप कुदरूप हुअ लगल। मुदा उपाये की...। जहिना नीक दिन लोकक बीतै छै तहिना अधलो दिन तँ बितबैये पड़ै छइ। ओना, अधला दिन एला पछाइत रंग-बिरंगक घटनो–आत्महत्या, गामसँ पड़ा जाएब इत्यादि–होइए मुदा ओहो कोनो एक्के रंगक तँ अछि नहि जे सबहक संग एकेरंग घटत।

रामशरण चाचा बजला-

“हरिहर, गामक केते गोरे आएल छेलह?”

बजलौं-

“गिनती तँ नइ केने छेलौं मुदा पचासक लकधकमे छेलौं।”

रामशरण चाचा बजला किछु ने, मुदा मँह पटपटेलैन जरूर। की पटपटेलैन से तँ चाचा जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे भरिसक मनमे ई उठलैन जे गामक कियो खोज-खबैर लेनिहार नहि अछि। हमर कोन दोख देखि समाजक लोक एना बिमुख भऽ गेल अछि।

की हमर जिनगी ओहने नीच रहल जइ नीचतासँ लोक देखि रहल अछि। मुदा खाधिमे खसल जालमे ओझराएल हाथीक जे गति होइ छै सएह ने हमरो भऽ गेल अछि...। बजला-

"हरिहर, गामक की हाल-चाल अछि?"

बजलौं- "चाचाजी, अनकर हाल तँ जेठुआ हाल जकाँ बेहाल अछिए मुदा अपन मन सदिकाल अहाँ-ले कनैत रहैए। बहुत किछु अहाँसँ सिखबो केने छी आ आरो सिखैक आशा मनमे रखने छी, मुदा तइ बीचमे विघ्न भऽ गेल!"

रामशरण चाचा बजला-

"बौआ, जहिना तोरा मनमे सिखैक आशा छह तहिना अपनो मनमे गाममे बहुत किछु करैक आशा छल, मुदा सभ मेटा रहल अछि।"

रामशरण चाचाक विचार सुनि मुहसँ निकैल गेल-

"चाचाजी, अपने तँ सिर्फ इस्कूले-कौलेजटा सँ नहि पढ़ने छी, ज्योतिषी बाबासँ सेहो सदिकाल किछु-ने-किछु सिखते छेलौं।"

'ज्योतिषी बाबा'क नाओं सुनिते रामशरण चाचाक चेहराक रूखि जेना आरो मलिन भऽ गेलैन। बजला-

"बौआ, ज्योतिषी चाचा खाली ज्योतिषे विद्याक ज्ञाता नहि छला, ओ वैदिक सेहो छला। वैदिक आधारपर अपन जीवन निर्मित केने छला। जाधैर जीबैत रहला ताधैर समाजमे दोसरकेँ नीक काजेटा नहि, विचारोसँ नीक करैत रहलखिन। अपना जनैत केकरो अधला नहि केलखिन। ओना, नीक काजो आ नीक विचारोक विरोध समाजमे अधला केनिहारो आ अधला विचारो देनिहार अछिए तँए हुनको विरोधी समाजमे छेलैन्हे। संजोग भेल जे वेचारे नि:सन्तान छला, तँए सभ किछु अपना संगे चलि गेलैन।"

बजलौं- “हँ, से तँ भेबे केलैन। मुदा...।”

रामशरण चाचा बजला- “बौआ, ज्योतिषी चाचाक विचार आइक परिवेशमे बिल्कुल विपरीत जकाँ भऽ गेल अछि जइसँ समाजक दिशे बदैल गेल अछि। ठक-फुसियाह, लुच्चा-लम्पटक हाथमे समाज पड़ि गेल अछि जइसँ सिनेहक स्थान कटुता लऽ लेलक अछि। केकरो-मे-केकरो मेल-मिलाप नहि रहल अछि। तोंही कहह जे सुनैमे आएल अछि जे गामक दसटा लुच्चा हमरा घरक केबाड़ तोड़ि घरक सभ समान लूटियो लेलक आ नष्टो कऽ देलक। हम मानै छी जे हमर बेटा जे काज केलक ओ समाजक भीतरे ने केलक, नीक केलक कि अधला केलक से तँ समाजक जे पढ़ल-लिखल समझदार लोक छैथ ओ एकठाम बैस ने एकर निराकरण करितैथ। आकि परिवारेकेँ नष्ट करै पाछू लगि जाएत।”

बजलौं- “पढ़ल-लिखल लोकक किरदानी तँ आरो चौपट अछि। वएह सभ ने समाजमे अराजक स्थिति बनेनौं अछि आ बनाइयो रहल अछि।”

रामशरण चाचा बजला- “सभ अपन देहक सुखक पाछू बताह भऽ गेल अछि, जइसँ अपनो आत्महत्या कऽ रहल अछि आ समाजोकेँ गर्त्तमे देने जा रहल अछि। हमर की दोख, ई तँ समाजेक लोक ने देखता, आकि परिवारे मेटा दिअए! जँ एका-एकी अहिना परिवार मेटाइत गेल तखन समाजक की दशा हएत..!”

रामशरण चाचाक एक-एक विचार जेना मनक संग हृदयकेँ वाण जकाँ बेधने जा रहल छल, मुदा जे अराजक स्थिति हुनका संग बनि गेल छैन, तइमे अपन दम अँटिये ने रहल छल जे की कहिऐन आ की नहि कहिऐन। मनकेँ असथिर करैत बजलौं- “आगूक की उपाय सोचै छिऐ चाचा?”

रामशरण चाचा बजला- “की उपाय सोचब। एतबे ने भेल जे पूर्वजक देल घर-घराड़ी आ खेत-पथारकेँ गामक लोक नष्ट कऽ देलक। मुदा परिवारक इतिहास कियो मेटा देत। कोनो की हमरे संग एहेन भेल अछि आकि आइ धरिक इतिहासक पन्ना एहेन-एहेन घटनासँ रंगाएले अछि। तखन तँ एतबे ने हएत जे जीबै-ले गाम छोड़ए पड़त।”

‘गाम छोड़ए पड़त’ सुनि मन दहैल गेल। दहैलते बजा गेल-

“हमर-अहाँक जे सम्बन्ध अछि ओकरो दूरी तँ बढ़िये जाएत।”

रामशरण चाचा बजला-

“गामक हिसाबे तँ दूरी बढ़बे करत मुदा हमरा-तोरा बीच जे सिनेहक सम्बन्ध अछि ओ थोड़े मेटा जाएत।”

बजलौं-

“नोकरी केतेक दिन बाँकी अछि?”

रामशरण चाचा बजला-

“आब तीन बरख बाँकी अछि।”

बजलौं-

“तखन तँ बहुत बाँकी अछि। बहुत किछु बीचमे कऽ सकै छी।”

रामशरण चाचाक मनक विचार जेना एकाएक जगि गेलैन, तहिना बजला-

“बौआ, अपनो भरिपोख दरमहो अछि आ रिटायर केलाक पछाइत जमो-जिगिर भेटबे करत, तँए पैछला सम्पैत जँ गेबो कएल तँ ऐगलाक आशा अछिए, तँए मनमे ओ चिन्ता नहियेँ अछि। रहल

बात परिवारक, ओहो ठीके-ठाक रहत।”

बजलौं-

“तखन तँ..?”

रामशरण चाचा बजला-

“बेटा-पुतोहु पड़ा कऽ पंजाब चलि गेल। अमृतसरमे दुनू रहैए। दुनू नोकरियो करैए आ मौजसँ रहितो अछि। अपना एतबे दुख अछि जे बाप-दादाक गाम बिसैर जाएब, जैठामसँ पढ़ि-लिखि कऽ शिक्षक बनलौं! मुदा जैठाम शिक्षक बनि जीवन गुदस केलौं, ओ समाज तँ खाली शिक्षके रूपमे ने बुझता। खाएर..! अही गाममे घराड़ी कीनि लेलौं। ओना, खेत-पथार अपना गामसँ एतए सस्त अछि। मुदा बेसी तँ नहि, सेवा निवृत्तिक पछाइत जे समय बँचत तइले किछु कीनि लेलौं। विचार अछि अपन बाड़ी-फुलवारीक सेवा करैत जीवन अन्त करब।”



शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018

प्रवल इच्छा

अदहा जेठ बीत गेल छल। आन सालसँ भिन्न ऐ सालक जेठक रोहानी अछि। आन साल जेना बरखा नइ होइ छल तइसँ गर्मीक प्रकोप विशेष रहै छल, से ऐ साल नहि अछि। समय-समयपर तीनटा बिहड़िया बरखा भेल, जइसँ जेठ रहितो फागुन जकाँ खुशनुमा समय बनल। ओना, बरखा तीनिए-टा भेल, मुदा अकासमे वादल बेसी काल उमड़ैत-घुमड़ैत रहल, जइसँ ने बेसी रौदक ताप बढ़ल आ ने लूए चलल। आन साल जेना लोक दस बजैत-बजैत खेत-पथार, बाध-बोनसँ घरपर चलि अबै छल से ऐबेर नहि अछि। नहाइ-बेर तक लोक बाध-बोनक काजमे जुटल रहैए।

गामक रोहानी सेहो आन सालसँ नीक अछि। जहिना बैशाखा तीमन-तरकारीसँ बाध लहलहा रहल अछि तहिना गरमा मकइ, धान आ खेरही सेहो बाधकेँ हरियर-कचोर केनहि अछि। तैसंग आम-जामुन सेहो तेना लुधकी लागि फड़ल अछि जे गाछी-बिरछीसँ अबैक मन नहि होइए। केते सालक पछाइत ऐबेर एहेन आम फड़ल अछि। जहिना आमक फड़ी अछि तहिना जामुनोक अछिए। तहूमे गामक जे किसान सभ छैथ, ओ ओहेन अनुभवी छैथ जे जहिना चुनि-चुनि आमक गाछी-कलम लगौने छैथ तहिना जामुनो-गुलजामुन लगौनहि छैथ। जइसँ गुल-जामुनक संख्या बेसी अछि। गृहस्ताश्रममे सरही-कलमी दुनूक खगतो अछिए। जहिना खाइ-पीबैले नीक-नीक कलमी आमक खगता अछि तहिना जरण-मरणमे सरही आमक गाछक

खगता सेहो अछिए।

प्राचीन गाम रहने जहिना गाछी-कलमसँ सम्पन्न अछि तहिना बेख-बुनियादिसँ सेहो सम्पन्न अछिए। बेख-बुनियादि भेल- नीक-नीक सुकाठ लकड़ीक गाछक संग बाँस-बँसबारि सेहो। जीवनमे जहिना खाइ-पीबैले आम-जामुन, लताम-बेल इत्यादि सभ रंगक फलक खगता होइए तहिना घर-घरहट करैले नीक लकड़ियो आ बाँसोक खगता अछिए।

ओना, पुरानो-पुरान गाममे अन्तर अछि। किछु गाम एहेन अछि जे कमला-कोसीक, चपेटमे पड़ि केता बेर उपटल अछि आ केता बेर बसल अछि, मुदा हमर गाम से नइ अछि। धार-धुरमे केबल एकटा चरिमसुआ धार अछि जे बर्खाक पानि पीबते फुलाइए आ बर्खाक अन्त होइत-होइत सटकए लगैए जे कातिक बीतैत-बीतैत सुखि जाइए। ओना, गामक जेतेक जमीन धारक पेटमे अछि ओइमे कोनो उपजावारी नहियेँ होइए, तइसँ एते नोकसान तँ गामक अछिए, मुदा एते तँ नफ्फो अछिए जे कमो बरखा भेने आन-आन गामक पानि उठा कऽ धार अनैए आ गामक पोखरियो आ चौरियो सभकेँ भरि दइए जइसँ पानिक सोलहन्नी खगता तँ नहि, मुदा अदहा-छिदहा तँ पूरा होइते अछि। तहूमे धारक पेट तेहेन उथराह अछि जे तीनियोँ-चारि हाथ पानि मोटाइते ऊपर फेकए लगैए। जइसँ खेतो सभ पनिआइए आ पोखैर-झाँखैर सेहो भरि जाइए।

तेतबे नहि, कमला-कोसीक प्रकोप नहि रहने गामक गाछियो-कलम आ खेतो-पथारक आँड़ि-मेड़ नीक अछिए। साए-साए बर्खक जहिना शीशोक गाछसँ गाम भरल अछि तहिना साए-साए बर्खक आमोक गाछ आ बाँसोक बँसवारि अछिए। सुकाठ लकड़ीमे शीशोओक अपन महत अछिए। महत ई जे जहिना घरक खुट्टा-

खाम्ही मजगूत होइए तहिना घरक ऊपरका भागमे तड़क, धरैन, मानी थम्हक रूपमे सेहो अछिए। तैसंग घरक बीचला भागमे केबाड़-चौकैठक संग सुतै-बैसैले चौकियो-कुरसीक पूर्ति केनहि अछि।

ऐबेर जहिना उपजावारी, कलम-गाछी लहलहा रहल अछि तहिना लगनो[21]क धुमसाही अछि। अपनो मुड़नक नौत-हकार मात्रिकसँ आएल अछि। परसू ममियौत भाइक बेटाक मुड़न छी, कपड़ो-लत्ता आ नौत-पुराइक चीजो-वौस कीनए झंझारपुर गेल छेलौं। बजारो आ हाटोक काज छल। ऐगला हाट रबि दिन होएत, जइसँ काज नइ चलैत, तँए बुधेक हाट करए झंझारपुर गेल छेलौं। झंझारपुरसँ चीज-वौस कीनि घरपर आबि साइकिलसँ उतैर चीज-वौस उतारिते रही कि हंसराज काकाकेँ खेत दिससँ अबैत देखलयैन। रस्ते कातमे घरो अछि आ दरबज्जाक रूखि सेहो रस्ते दिस अछि।

हंसराज काकाकेँ देखिते कहलयैन-

“काका, तमाकू खा लिअ तखन जाएब।”

ओना, पौने एगारह बाजि रहल छल जइसँ नहाइ-खाइ बेर भइये गेल छल, मुदा जखन सोझामे हंसराज काका पड़ला आ किछु नहि बजितौं से केहेन होइत। पान-सात दिनसँ भेँटो नहियेँ भेल छला। तँए तमाकुलक बहाना बना बाजल छेलौं। जहिना कहलयैन तहिना ओहो दरबज्जापर आबि बजला-

“केतौ बाहर गेल छेलह, किसुन?”

बजलौं-

“हँ, झंझारपुर हाट गेल छेलौं। परसुका मुड़नक नौत-हकार मात्रिकक अछि। ओहीक चीज-वौस कीनए गेल छेलौं।”

[21] बिआह, उपनैन, मुड़न

तैबीच अपनो चीज-वौसकेँ अँगनामे रखि दरबज्जापर आबि तमाकुल चुनबैक ओरियान करए लगलौं।

हंसराजो काका अपन हाथक कोदारि, खुरपी आ हँसुआकेँ चौकीक निच्चाँमे रखि बैसला। साइकिलसँ उतरल रही तँए पसेना चलैत रहए। ओना, समय मेघौन जकाँ छल तँए रौद मड़ियाएल रहइ, मुदा तैयो मासक धर्मे गरमी किछु छेलैहे। तमाकुल चुना काकाकेँ देलिऐन। ओहो तमाकुल मुँहमे लैत बजला-

“ऐ बेरका लगन तँ देखै-जोकर अछि!”

लगनक चर्च होइते बजलौं-

“ऐबेर कनाह-कोतर सभ उठि जाएत। जेकरो सबहक बिआह पौंरकाँ नइ भेल तेकरो सबहक आ जे ऐबेर बिआह करै-जोकर भेल तेकर, सबहक बिआह भऽ जाएत।”

‘सबहक बिआह’ आकि ‘कनाह-कोतर’ सुनि हंसराज कक्काक मन खुशी भऽ गेलैन। मुस्की दैत बजला-

“ई तँ बढ़ियाँ बात भेल किने। जेतेक धिया-पुताक बिआह भऽ जाएत ओतेक माइयो-बाप अपन कर्जसँ मुक्त हेबे करत किने।”

बजलौं-

“से तँ मात्र वएह माए-बाप ने जेकरा या तँ अन्तिम धिया-पुताक बिआह हेतै वा जेकरा एक्केटा हेतइ, सएह ने अपन धिया-पुताक कर्जसँ मुक्त हएत, मुदा जेकरा जेरक-जेर धिया-पुता छै ओ केना मुक्त हएत?”

हंसराज काका बजला-

“भलेँ सोल्हन्नी मुक्त नहियेँ हएत, मुदा ओते तँ हेबे करत किने जेते भार उतैर गेल रहतै। कर्जो-कर्जा आ चुक्तियो-मुक्तिमे अन्तर तँ

अछिए। कियो सोलहन्नी चुका मुक्त होइए आ कियो अदहा-छिदहा चुका अदहा-छिदहा मुक्त होइए। तँए, जेते भार उतैर जेतै ओते जान तँ हल्लुक हेबे करतै किने।”

बजलौं-

“हँ, से तँ हेबे करत। मुदा तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे केहनो-केहनो परिवार बेटीक बिआहमे हिल जाइए।”

हंसराज काका बजला-

“तइमे केकर दोख?”

‘केकर दोख’ सुनि मन ठमैक गेल। किएक तँ एक्के आदमी बेटाक बिआहमे राजा जकाँ बनि अधिक-सँ-अधिक सम्पैत बेटीबलासँ लिअ चाहैत अछि आ वएह आदमी बेटीक बिआहमे दाँत चिआरि बजैए जे समय बड़ खराप भऽ गेल अछि। जइसँ गरिबाहाकेँ बेटीक बिआह करब पहाड़ोसँ भारी भऽ गेल अछि...।

बजलौं-

“दोख केकर रहत काका, दोख तँ सोलहन्नी लोकेक अछि। पहिनौं ने बिआह होइ छल, कहाँ एते भारी लोककेँ बुझि पड़ै छेलइ। परिवारमे जहिना आन-आन काज चलै छल तहिना ने क्रमिक ढंगे बेटा-बेटीक बिआहो चलै छेलइ।”

तमाकुलक थूक फेकैत हंसराज काका बजला-

“दोख सबहक अछि। तखन तँ सभकेँ एते गड़ भेटिये जाइए जे समैये एहेन बनि गेल अछि जे सभकेँ वाध्य भऽ करए पड़ै छइ।”

बजलौं-

“जेतए जे होइए से तेतए हौ, मुदा ठनकाक आवाज सुनि लोक अपन जान बँचबैले अपने माथपर लइए, तहिना ने...।”

बिच्चेमे हंसराज काका बजला-

“माथपर हाथ नेनहि की हएत, जेतए ठनकाकेँ खसैक छै तेतए खसबे करत किने। माथपर हाथ लिअ तैयो आ नइ लिअ तैयो, जेतए ठनकाकेँ गड़ भेटतै तेतए खसबे करत किने।”

बजलौं- “हँ! से तँ खसबे करत। मुदा...।”

हंसराज काका बजला-

“मुदा-तुदा किछु ने।”

बातकेँ बदलैत बजलौं- “काका, ऐबेर तँ अहाँक लक्ष्मी दहिन छैथ।”

‘लक्ष्मी दहिन’क माने भेल तीमन-तरकारीकेँ महग हएब। हंसराज काकाकेँ डेढ़ बीघा खेत छैन जइमे दस कट्ठा कलम-गाछी लगौने छैथ आ एक बीघा खेतमे बारहो मासक तीनू समैयक[22] तरकारीक खेती करै छैथ जइसँ परिवारक निमरजना करैत, हाथो-मुट्ठी गरमा कऽ रखिते छैथ। तैसंग ईहो छैन जे तीन बीघा तीन-फसिला खेत छैन, जइमे फसल-चक्रक मिलानसँ खेती करै छैथ, जइसँ अन्नक पूर्ति भइये जाइ छैन। खरीफक मौसममे तीनो बीघामे धानक खेती करै छैथ आ रब्बीक मौसममे दू बीघामे गहुम आ एक बीघामे दलिहन-तेलहनक खेती करै छैथ। ओना, अगता गहुमक खेती केने खेरही आ सुर्जमुखीक खेती सेहो कइये लइ छैथ जइसँ तेते उपज भऽ जाइ छैन जे बेचबो-बिकिनबो करिते छैथ...।

अपना जनैत हंसराज काकाकेँ बड़प्पनक बात कहलयैन मुदा मनमे जेना खेतीसँ किछु तकलीफ रहल होनि तहिना मुँह बिजैक गेलैन। बिजकैत मुहेँ बजला- “किसुन, जे इच्छा रोपि अखन तक

[22] तीनू समय भेल, जाड़, गरमी, बरसातक

किसानी जिनगी बितेलौं से अखन तक पूर्ति नइ भेल, आ बुझि पड़ैए जे ऐ जिनगीमे हेबो ने करत।”

जिनगीक इच्छा आ ओकर पूर्ति नइ भेलासँ हंसराज काकाकेँ खेतीक विषपनसँ मन विसाइन-विसाइन भइये गेल रहैन, तँए एहेन विचार व्यक्त केने रहैथ। मुदा दरबज्जापर छैथ आ अपनो जँ ओहने बात बाजि आरो विसविसी जगा दिऐन से केहेन होइत। तँए पाशाकेँ आस दैत बजलौं-

“काका, दुनियाँ किछु हौ आ देशे किछु हुअ मुदा अहाँ तँ अपन जिनगीक बाजी मारिये नेने छिऐन!”

अस्सी बर्खसँ ऊपर हंसराज कक्काक उमेर छैन मुदा साठि बरख पूर्व जे अपन पैत्रिक सम्पैतकेँ[23] आधार बना खेती-बारीकेँ धेलैन से अखनो धेनहि छैथ। जइसँ परिवारक गुजर-बसरमे कहियो रीन-पैंच नइ करए पड़लैन, आ ने ओइ भाँजेमे पड़ला। जइ साल देश स्वतंत्र भेल तही साल हंसराज काका मैट्रिक पास करि कौलेजमे ढुकला जे देशक आजादीक चारि सालक पछाइत बी.ए. पास केलैन। हाइ स्कूलसँ पहिनहि जे देशक आजादीक लेल तिरंगा झण्डा उठौलैन से आजाद भेला पछातिये रखलैन। ओना, पनरह अगस्तकेँ साले-साल अखनो झण्डा उठा देशवासीकेँ जगैबते छैथ, मुदा से केतेक जागल आ केतेक सुतल, से हंसराज काका जनिते छैथ। मुदा तैयो अपन स्वतंत्र विचारो आ स्वतंत्र जीवनक लेल स्वतंत्र पेशोक प्रति समाजकेँ जगाइये रहला अछि...। तैबीच हंसराज कक्काक घड़ीपर नजैर चलि गेल। एगारह बाजि रहल छल, अपनो ठंढाइये गेल छेलौं जइसँ नहाइक विचार मनमे उठिये रहल छल मुदा केना बजितौं जे काका अहूँकेँ नहाइक बेर उनहल जाइए आ हमरो बेर

[23] जमीनकेँ

उनहल जाइए तँए अखन जाउ।

हंसराज काका बजला-

“किसुन, आइ पचास बर्खसँ कोसी नहैर लटकल अछि। अरबो रुपैआ सरकारी खजानसँ खर्च भऽ चुकल अछि, मुदा की लाभ नहैरसँ भेल अछि से कोनो केकरोसँ छिपल अछि। देखौआ सरकारो किसान लेल लोहाक बोरिंग नब्बे प्रतिशत सब्सिडी दऽ कऽ गड़ौलक, मुदा तइसँ किसानकेँ केते लाभ भेल से के नइ जनैए।”

अपनो ई काज देखलो अछिए आ देखतो छीहे जे एकोटा बोरिंग काज नइ कऽ रहल अछि। सबहक पाइप झझरी भऽ कऽ फुटि गेल, आ सभटा निकम्मा भेल अछि।

बजलौं-

“हँ, से भइये गेल अछि। मुदा लोको तँ लोके छी किने काका, जेकरा सुविधा भेटै छै सेहो आ जेकरा नइ भेटै सेहो, दुनू तँ एकरंगाहे अछि। भलेँ तैबीच कमीशनखोर आकि घूसखोर किएक ने उठि-बैसल हुअए। मुदा दिन-राति दुनू नइ कानैए सेहो बात नहियेँ अछि, कनिते अछि। मुदा बेवश लोक, बेवश किसान करबे की करत।”

हंसराज काका बजला-

“तइसँ की अपना सभ अलग छी। आकि ओकरे सभ जकाँ नइ कानै छी।”

बजलौं-

“से तँ छीहे, मुदा...।”

हंसराज काका बजला-

“मुदा-तुदा किछु ने। हँसब आ कानब लोककेँ अपना हाथमे अछि। जे कानबक विचारसँ ग्रसित भऽ कनैक किरदानी करत ओ

कनबे करत किने, मुदा जे हँसैक हंसक विचारकेँ अगुआ कर्म करत ओ हँसत नइ ते कानत। भलेँ नाटकक रंग-मंचपर किछु लोक कननी पात्र बनि अभिनाइये करए, मुदा ओहो ने देखौआ कननी कनिते अछि।”

बजा गेल-

“हँ, से तँ अछिए। मुदा अहूँ...। ”

‘अहूँ’ सुनिते हंसराज काका बुझि गेला जे हमरो दुखकेँ किसुन ओहिना बुझि रहल अछि जेना अनकर दुखकेँ बुझैए। हँसबो-हँसब आ कानबो-कानबमे अन्तर तँ अछिए, जे ओइ अन्तरकेँ नइ जनैए ओ दोसर रूपेँ कानबकेँ बुझैए आ जे ओइ अन्तरक मंत्रकेँ, माने अन्तरंग मंत्रणाकेँ जनैए ओकर कानबक सीमा दोसर होइत अछि। हंसराज काका बजला-

“किसुन, नहाइ बेर भऽ गेल, तँए नीक जकाँ सभ बात अखन नइ करब, किएक तँ जहिना कोनो रेलगाड़ीकेँ कोनो कारणे दू-चारि मिनट विलम भेने एके स्टेशन नहि, सभ स्टेशनमे विलम होइते चलि जाइ छै, जइसँ ओकर पहुँचैक जे गनतव्य स्थान रहल, ओइठाम समयपर नहियेँ पहुँचैए, तहिना ने मनुक्खोक अछि।”

अपना विचारे हंसराज काका बिना कौमा-पूर्ण विराम देने धुरझाड़ बाजि गेला मुदा अपने बुझबे ने केलौं, जइसँ मन झुझुआए लगल। मने-मन मनकेँ मजगूत केलौं जे जे राम से राम, सभ बात हंसराज काकासँ बजाइये कऽ छोड़बैन।

जहिना भौजेत नौतहारीकेँ खाइले नौत दइ छैथ आ पुछि-पुछि खुअबै छैथ तहिना अपन विचार हंसराज काका हमर बदरियाएल मेघकेँ बरदपनक लेल नौत दइए देलैन, तखन हमहीं की ओहन बुड़िवान छी जे ओकरा सुर-वाण छोड़ि दुर्बान बनाएब। फेर मनमे

उठल जे नहाइक बेरमे जे विलम हेतैन से अपना वर्णिक करनीसँ हेतैन आकि हमरा लरनीक चलैत हेतैन। अपनो कल परहक नहाएबमे देरी हएत, मुदा गंग-स्नान तँ हेबे करत किने। से नहि तँ जहिना भगता अपना गहवरमे कारनीक भूतकेँ बकबैए तहिना अपनो किए ने करी।

बजलौं-

"काका, हमरा मात्र एकटा फूलक काज छल आ अपने फूलक ढकिये आगूमे रखि देलौं, तइमे से एकटा फूल चुनि कऽ निकालब हमरे नानाक[24] दिन छी, तँए अपने...।"

हमर विचार सुनि हंसराज कक्काक मनमे हँसी उठि गेलैन मुदा हँसबक जे दोसर रूप अछि, माने केकरो अल्ढ़रपनपर हँसब, बुड़िपना छोड़ि आरो की हएत। तँए अपन देखौआ हँसीकेँ चिन्हौआ हँसीमे बदैल हंसराज काका बजला-

"बौआ किसनु, तूँ बाजल छेलह जे अहाँकेँ लक्ष्मी आबि गेली, से तूँ कोनो बाल-बोधक लड़कपन जकाँ नहि, बेटपन जकाँ बजलह। तँए, पहिने ओ बुझि लएह।"

जहिना ढलानपर ऊपरसँ निच्चाँ उतरैमे पएर अपने आगू बढ़ए लगैए तहिना हंसराज कक्काक विचार सुनिते अपनो पएर बढ़ए लगल। बजा गेल- "से की काका?"

हंसराज काका बजला-

"देखह किसुन, तोहर जे काकी छथुन से हमर दिन-रातिक मालिक[25] छैथ, जखने विलमसँ दरबज्जापर पएर देब, तखने ओ

---

[24] नानाक माने ज्ञानक परिपक्कता

[25] माली

जवाब-तलब करए लगती! तँए, धड़फड़मे कनी-मनी कहि दइ छिअ बाँकी दोसर दिन कहबह।”

अपना मनमे बेसी-सँ-बेसी जिज्ञासा जागि चुकल छल तँए हंसराज काकाकेँ पिंजरामे फँसबैत बजलौं-

“की बाल-बोध जकाँ बजलौं काका?”

हंसराज काका बजला- “लक्ष्यक रस्ता पकैड़ चलब लक्ष्मीक आगमन भेल, आ लक्ष्यक सीमापर पहुँच जाएब लक्ष्मी पएब भेल, तइमे...।”

अपन मनक मनियाँ जेना सोल्हो आँखि खोलि बुझैले तैयार भऽ गेल छल, एकाएक बजा गेल- “से की भेल काका?”

काका बजला- “बौआ किसुन, की कहबह! अपन मन हारब नइ कबूल रहल अछि मुदा दाबल जरूर बुझि पड़ि रहल अछि।”

जेतेक जल्दी बुझैक विचार जगल छल तेतेक बुझ पड़ाएल जाइ छल तइसँ मन खिनखिना लगल, तँए बिच्चेमे बजाइयो गेल छल। मुदा से हंसराज काका बुझि गेला। अपनोकेँ सम्हारैत आ हमरो सम्हारैत बजला-

“बौआ, जहिना देशक रीढ़ किसान छी तहिना ओइ रीढ़मे तेहेन घुन लगि गेल अछि जे ने जीबए दए रहल अछि आ ने मरए दए रहल अछि! घड़ीक पेनडुलम जकाँ बीचमे लटका झूलबैए।”

हंसराज कक्काक गप सुनि मनमे हुअ लगल जे कृष्ण जकाँ वृन्दावन आ राम जकाँ रामवनमे ने ते हंसराज काका बोहिया-भुतला रहला अछि जे एना ताशक गुलाम जकाँ तीन प्वाइन्ट बना बादशाहकेँ जीरो बना रहल छैथ! बजलौं- “काका, नहाइ बेर भऽ गेल अछि, से नहि तँ अहीठाम नहा कऽ पहिने भोजन कऽ लिअ, पछाइत गप-सप्प हेतइ।”

हंसराज काका बजला- “मुड़कट्टीमे कहि दइ छिअ, बीचमे टोक-टाक नइ करिहह। जँ कोनो बात बुझैमे नइ आबह तँ ओकरा मनेमे गाड़ि कऽ रखिहह, दोसर दिन फरिछा देबह।”

समर्थन करैत बजलौं-

“बेस विचार केलौं काका..!”

हंसराज काका बजला-

“किसानी जिनगीमे ई पचासियम बरख बीत रहल अछि। मुदा अखनो तक ने अपना हाथ-जुतिमे पानि आएल आ ने बीज आएल आ ने खेतीक करैक कला, जइसँ अपन मन खिन्न भऽ कानि रहल अछि, नहि कि पेट जरने कनै छी। खेत हमर आ बीज आन देशक, ई केतए तक उचित अछि! मनमे प्रवल इच्छा छल जे सभ-कथुक बीज अपने बनाएब, मुदा से आइ तक नइ भेल। तँए मन झुझुआ कऽ कानि रहल अछि।”

हंसराज कक्काक असल बात सुनि एकाएक जेना भक्क खुजि गेल।



शब्द संख्या : 2301, तिथि : 30 अप्रैल 2018







जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

----------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भS गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019
854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019
855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019
856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019
857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019
858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019
859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019
860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019
861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019
862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019
863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019
864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019
865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019
866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019
867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019
868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019
869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019
870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019
871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019
872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019
873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019
874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020
875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020
876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020
877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020
878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020
879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020
880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुद्दढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes